

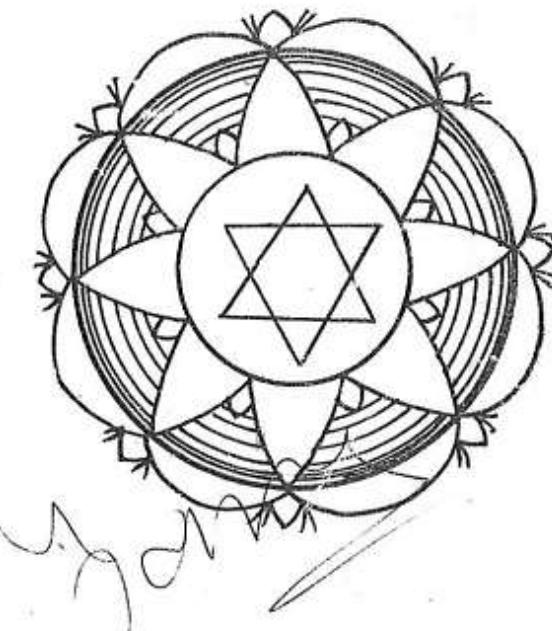
डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली की पुस्तकें—

- सुबोध हस्तरेखा
- सुबोध प्रारम्भिक ज्योतिष
- सुबोध स्वप्न ज्योतिष
- सुबोध मुहूर्त ज्योतिष
- सुबोध ऊँक विद्या

सुबोध पब्लिकेशन्स

सुबोध मुहूर्त ज्योतिष

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली





COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

विषय-सूची

१. विषय प्रवेश	११	२७. शून्य तिथियाँ	२२
२. कालभेद	११	२८. युगादि तिथियाँ	२३
३. मुहूर्त	११	२९. धय वृद्धि तिथियाँ	२३
४. मुहूर्त क्या है ?	१२	३०. तिथियों में करते	२३
५. दिवस-मुहूर्त	१२	३१. योग कार्य	२४
६. मुहूर्त नक्षत्र, स्वामी	१२	३२. विष तिथि घटी	२५
७. रात्रि-मुहूर्त	१३	३३. विषघटी-दोष	
८. अभिजिन्मुहूर्त	१३		
९. प्रदोष	१४	परिहार	२६
१०. धणतिथि	१४	३४. वार	२७
११. संवत्सर	१४	३५. वाराधिष्पति	२७
१२. संवत्सर स्वामी	१५	३६. वार दोष	२७
१३. संवत्सर-फल	१६	३७. वार दोष परिहास	२७
१४. ऋतु	१६	३८. वारों के अनुसार किये	
१५. अयत	१७	जानेवाले कार्य	२८
१६. मास	१७	३९. वार विषघटी	२८
१७. क्षयमास-अधिक मास	१८	४०. वार विभाजन	२९
१८. मलगाम	१८	४१. यामादं	२९
१९. मलगाम में वज्र्यं कार्य	१९	४२. कालवेला-काल रात्रि	२९
२०. पक्ष	१९	४३. कुलिकादि योग	३०
२१. तिथि	२०	४४. नक्षत्र-स्वरूप, तारा-	
२२. तिथिसंज्ञक	२०	संख्या, स्वामी प्रहा-	
२३. तिथिभेद	२१	षिपति	३१
२४. रंधतिथियाँ	२१	४५. नक्षत्र-संज्ञा	३२
२५. वज्र्यं तिथियाँ	२२	४६. नक्षत्र विषघटी	३३
२६. शुभ तिथियाँ	२२	४७. मास शून्य नक्षत्र	३४

प्रकाशक : सुबोध पब्लिकेशन्स, २/३ बी, अंसारी रोड, नई दिल्ली-२
 संस्करण : १९९५ मुद्रक : जयमाया आफसेट, शाहदरा, दिल्ली-३२
 SUBODH MUHURTA JYOTISH
 by Dr. Narain Dutt Shrimali

धर्मशिक्षा के आदित्य नाथ पाण्डेय, ग्राम-चन्दपुर, पोष्ट-भवानीपुर,
तहसील व आना-चुनार, जिला-मिजपुर (उप्र०), पिन-२३१३०४.

४८. पंचक नक्षत्र	३४	७६. गुरु शुक्रास्त में वर्ज्य-	५१	१३०. वर्णगुण चक्र	६२
४९. पृथ्वी नक्षत्र	३५	काम	५२	१३१. वश्य	६२
५०. जन्म नक्षत्र	३५	७७. सिंहस्थ गुरु	५२	१३२. ग्रह मैत्री चक्र	६३
५१. योग	३६	७८. भू-रुद्रन	५२	१३३. गण विचार	६३
५२. नैसर्गिक योग	३६	७९. भू-हास्य	५३	१३४. राशि दोष	६४
५३. व्यतिपात	३७	८०. भू-शयन	५३	१३५. द्विर्दीदश	६४
५४. वैधुति	३७	८१. भू-रस्तला	५४	१३६. चतुर्थदशम	६४
५५. विशेष योग विवेचन	३७	८२. देवशयन	५४	१३७. नवम पंचम	६४
५६. त्याज्य योग	३८	८३. अग्निवास	५४	१३८. एषटक	६४
५७. करण	३९	८४. अग्निवास-काल	५४	१३९. सम सप्तक	६५
५८. भद्रा	३९	८५. घोड़श संस्कार	५५	१४०. नाड़ी	६५
५९. भद्रावास	३९	८६. नवीन वस्त्र धारण	५५	१४१. विद्यारम्भ मुहूर्त	६५
६०. भद्रादिशा	३९	मुहूर्त	५६	१४२. यज्ञोपवीत मुहूर्त	६६
६१. भद्रा अंग	४०	८७. रजस्तला स्नान	५६	१४३. यज्ञोपवीत काल	६७
६२. भद्रा संज्ञा	४०	मुहूर्त	५६	१४४. अपवाद	६७
६३. जन्म राशि कब प्रयोग हो	४०	८८. सौमन्तोन्नयन मुहूर्त	५६	१४५. सप्तशलाका वेष्यवंश	६८
६४. नामराशि कब प्रयोग हो	४०	८९. मास गर्भपति	५७	१४६. विष कन्या परिहार	६८
६५. संक्रान्ति	४०	९०. विष्णु पूजा मुहूर्त	५७	१४७. विवाहे ग्रहणा	
६६. संक्रान्ति-पृथ्यकाल	४०	९१. पितृगृह जाने का	५७	१४८. रोग बाण	६९
६७. चन्द्रमा	४०	मुहूर्त	५८	१४९. सूर्य चन्द्र गुरु शुद्ध	६९
६८. चन्द्रगोचर फल	४१	९२. पृथ्वी पूजन मुहूर्त	५८	१५०. अपवाद	७०
६९. शुभ चन्द्र	४१	९३. सूर्तिका स्नान मुहूर्त	५८	१५१. उपनयन कर्ता	७०
७०. जन्म चन्द्र	४२	९४. नामकरण संस्कार	५८	१५२. उपनयन में निषेध	७०
७१. स्त्री चन्द्र बल	४२	मुहूर्त	५९	१५३. उपनयन में निषेध	७०
७२. चन्द्र दिशा	४२	९५. जलपूजन मुहूर्त	५०	१५४. विवाह योग तथ्य	७०
७३. चन्द्रवाहन	४२	९६. दुष्प्रापान मुहूर्त	५०	१५५. विवाह मुहूर्त	७१
७४. त्रैलोक्य में चन्द्रवास	४३	९७. राहुमुख विचार	५०	१५६. गोधूलि-वेला	७१
७५. धातचन्द्र	४३	९८. योगिनीवास	५१	१५७. विवाह मुहूर्त	७२
	४३	९९. रुद्रवास	५१	१५८. पल्ली परीक्षा	७२
	४३	१००. दोलारोहण मुहूर्त	५१	१५९. विवाह मुहूर्त	७३

१५६. प्रथम युवति संभोग मुहूर्त	७५	१८५. होटल खोलने का मुहूर्त	८१	२०६. आवेदन-मुहूर्त करने का मुहूर्त	८१	८८ २२५. फिल्म प्रारंभ करने का मुहूर्त	८२
१६०. वस्त्र निर्माण मुहूर्त	७५	१८६. हल चलाने का मुहूर्त	८२	२१०. नौकरी प्रारम्भ करने का मुहूर्त	८२	८९ २२६. फिल्म प्रदर्शन मुहूर्त	८२
१६१. वस्त्र धोने की दुकान का मुहूर्त	७५	१८७. बीज बोने का मुहूर्त	८२	२११. कोल्हू प्रारम्भ करने का मुहूर्त	८२	९० २२७. भवन निर्माण मुहूर्त	८२
१६२. चमड़े का मुहूर्त	७५	१८८. खलिहान का मुहूर्त	८२	२१२. नाई की दुकान मुहूर्त	८२	९१ २२८. त्याज्य तिथियाँ	८३
१६३. सुरंधित द्रव्य मुहूर्त	७६	१९०. अनाज काटने का मुहूर्त	८३	२१३. सुनार की दुकान मुहूर्त	८२	९२ २२९. नीब खोदने की दिशा	८४
१६४. भूषण रखने का मुहूर्त	७६	१९१. चूड़ी धारण मुहूर्त	८३	२१४. गृहारंभ के विशेष योग	८५	९३ २३०. गृहारंभ के विशेष योग	८५
१६५. नौकरी करने का मुहूर्त	७६	१९२. चूड़ी चक्र	८३	२१५. राहु मुख	८५	९४ २३१. राहु मुख	८५
१६६. सवारी लाने का मुहूर्त	७७	१९३. बटवारा करने का मुहूर्त	८४	२१६. रुद्र मुख विचार	८५	९५ २३२. सप्तमुख विचार	८५
१६७. बाहन चक्र	७७	१९४. ब्रतोद्यापन मुहूर्त	८४	२१७. गृह द्वारा विचार	८५	९६ २३३. गृह द्वारा विचार	८५
१६८. नौकर रखने का मुहूर्त	७७	१९५. यज्ञ बनुष्ठानादि मुहूर्त	८४	२१८. चौखट चढ़ाने का मुहूर्त	८६	९७ २३४. चौखट चढ़ाने का प्रमाण	८६
१६९. नौकर-मालिक लाभ- हानि	७७	१९६. यंत्र मंत्र प्रयोग मुहूर्त	८४	२१९. गुप्तचर कार्य मुहूर्त	८०	९८ २३५. घूलहा स्थापन मुहूर्त	८६
१७०. नौकाचलन मुहूर्त	७८	१९७. औंपरेशन मुहूर्त	८५	२२०. तबादले के बाद 'द्यूटी जॉहन गुहूर्त	८०	९९ २३६. जलाशय खनन मुहूर्त	८६
१७१. शस्त्र निर्माण मुहूर्त	७८	१९८. रोगमुक्त स्थान मुहूर्त	८५	२२१. चमड़े की दुकान मुहूर्त	८०	१०० २३७. निर्वार चक्र	८६
१७२. शत्रु ताङ्गन मुहूर्त	७८	१९९. दीक्षा मुहूर्त	८५	२२२. गुप्तचर कार्य मुहूर्त	८०	१०१ २३८. चन्द्र द्वारा जल प्रमाण	८७
१७३. मादक वस्तु मुहूर्त	७८	२००. गोद लेने का मुहूर्त	८६	२२३. देव प्रतिष्ठा मुहूर्त	८७	१०२ २३९. देव प्रतिष्ठा मुहूर्त	८७
१७४. वाद्य प्रयोग मुहूर्त	७८	२०१. सन्यास धारण करने मुहूर्त	८६	२२४. शिववास	८८	१०३ २४०. शिववास	८८
१७५. शत्रु संघ मुहूर्त	७८	२०२. राज्याभिषेक मुहूर्त	८६	२२५. प्रकाशन खोलने का मुहूर्त	८१	१०४ २४१. वास्तुशांति मुहूर्त	८८
१७६. पशु कथ-विक्रय मुहूर्त	७९	२०३. खड़ग धारण मुहूर्त	८७	२२६. नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त	८६	१०५ २४२. नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त	८६
१७७. पक्षी पालन मुहूर्त	७९	२०४. संधि-मुहूर्त	८७	२२७. चुनाव में सहे होने का मुहूर्त	८१	१०६ २४३. वामार्क विचार	८६
१७८. मंत्र साधन मुहूर्त	८०	२०५. लघु-उद्वाग मुहूर्त	८७	२२८. संसद में जाने का मुहूर्त	८१	१०७ २४४. दिशा तिथि विचार	८६
१७९. नृप प्रयाण मुहूर्त	८०	२०६. बृहद व्यापार मुहूर्त	८८	२२९. गंत्रि शाप	८१	१०८ २४५. भद्रा विचार	१००
१८०. नगर प्रवेश मुहूर्त	८०	२०७. बहीखाता प्रारम्भ मुहूर्त	८८	२३०. गुहूर्त	८१	१०९ २४६. यात्रा मुहूर्त	१००
१८१. मल्ल किया मुहूर्त	८०	२०८. संपत्ति विभाजन मुहूर्त	८८	२३१. गंत्रि शाप	८१	१०१ २४७. मास शूल विचार	१००
१८२. व्याज लेन-देन मुहूर्त	८१	२०९. बहीखाता प्रारम्भ मुहूर्त	८८	२३२. गुहूर्त	८१	१०० २४८. धात मास तिथि	१००
१८३. भूमि के कथ-विक्रय का मुहूर्त	८१	२१०. संपत्ति विभाजन मुहूर्त	८८	२३३. गोगिनी	८२	१०१ २४९. योगिनी	१०१
१८४. वाणिज्य कर्म प्रारम्भ करने का मुहूर्त	८१			२३४. वार दिक्षाल	८२	१०२ २५०. वार दिक्षाल	१०१

मुहूर्त ज्योतिष

जीवन के प्रत्येक क्षण का एक अद्दय संचालक है, जिसकी व्यवस्था से यह समयचक गतिशील रहता है। दिन, रात, रात के बाद फिर ठीक समय पर, निश्चित स्थान पर सूर्योदय एवं सूर्यास्त, ठीक समय पर चहुओं का आगमन-प्रस्थान आदि सभी कार्य एक निश्चित व्यवस्था एवं निश्चित प्रणाली के अनुसार होते हैं। अतएव यह स्पष्ट है कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं, या भोग रहे हैं, वह एक अद्दय विराट् सत्ता की विशेष देन है।

यह परिवर्तन काल के अन्तर्गत ही होता है। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा भी है—“कालः कलयता महम्”, “कालोऽस्मि लोकश्यकृत् प्रबुद्धः।” यह काल भी सूर्य के वशावर्ती होकर चलता है, “चक्रत परिवर्तन कालः सूर्यवशात् सदा।” अर्थात् भचक्र में भ्रमण करता हुआ सूर्य जब एक चक्र पूरा कर देता है, तो हमने उसे वर्ष की संज्ञा दी है।

इस भचक्र की बारह राशियों के आधार पर बारह मास, एक-एक अंश के समान एक मास में तीस दिन, एक-एक दिन में साठ घड़ी, एक घड़ी में साठ पल, एक पल में साठ विपल, एक विपल में साठ प्रतिपल, इस प्रकार सूक्ष्मातिसूक्ष्म काल-गणना बढ़ती चली जाती है।

महर्षियों ने काल के मुख्यतः पाँच अंग माने हैं—१-वर्ष, २-मास, ३-दिन, ४-लग्न और ५-मुहूर्तं। ये परस्पर उत्तम बली हैं, अर्थात् दोषयुक्त वर्ष को श्रेष्ठ मास ठीक कर देता है, यदि मास दोषयुक्त हो पर दिन बलवान् और श्रेष्ठ हो तो मास का दोष नहीं लगता। इसी प्रकार शुद्ध मुहूर्तं होने पर वर्ष मास, दिन या अशुभ लग्न का दोष नहीं लगता। इसीलिए महर्षियों ने समस्त कार्यों में मुहूर्तं-

१. वर्ष मासे दिनं लग्नं मुहूर्तंश्चेति पञ्चकम् ।

कालस्यागानि मुख्यानि प्रबलान्युतरोत्तरम् ॥

लग्नं दिनभवं हन्ति मुहूर्तं सर्वदूषणम् ।

तस्मात् शुद्धि मुहूर्तंस्य सर्वकार्येषु शस्यते ॥

२५१. वार दोष निवारण १०२	२७८. शनि चरण ११४
२५२. समय शूल १०२	२७९. शनि वाहन ११४
२५३. काल राहु १०२	२८०. शनि-दोष-परिहार ११५
२५४. चन्द्रवास १०३	२८१. राहु केतु विचार ११५
२५५. तिथि-दोष-परिहार १०३	२८२. सर्वोपयोगी मुहूर्तं ११६
२५६. वारानुसार ग्राह्य शुभ समय	२८३. रोग मुहूर्तं ११६
२४७. तारा विचार १०३	२८४. रोग चिनाही ११६
२५८. धात नक्षत्र १०४	२८५. सर्वकष्ट मुहूर्तं ११७
२५९. लग्न समय १०५	२८६. रोगशांति उपचार ११७
२६०. होमाहृति मुहूर्तं १०५	२८७. औषधि सेवन मुहूर्तं ११८
२६१. मूल निवास १०६	२८८. शत्र्य किया मुहूर्तं ११८
२६२. संकान्ति नाम १०६	२८९. आरोग्य लान मुहूर्तं ११८
१६३. मूलाश्लेषा जन्मकल १०६	२९०. शांति कार्य मुहूर्तं ११९
२६४. ग्रह कार्यवल १०७	२९१. अनुष्ठान मुहूर्तं ११९
२६५. रामायण भागवत पुराण कथारंभ मुहूर्तं १०७	२९२. पूर्णिमा मुहूर्तं ११९
२६६. मशीनरी चालू करने का मुहूर्तं १०७	२९३. अखिल धार्मिक कार्य मुहूर्तं १२०
२६७. लग्न कर्त्तव्य १०८	२९४. स्वप्न विचार १२०
२६८. सूर्य विचार १०९	२९५. शुभस्वप्न १२०
२६९. चन्द्रविचार १०९	२९६. अशुभ स्वप्न १२१
२७०. चंद्रनिर्वल उपचार १११	२९७. अशुभ स्वप्न परिहार १२२
२७१. भीम विचार १११	२९८. शकुन १२२
२७२. बुद्ध विचार १११	२९९. शुभ शकुन १२२
२७३. गुरु विचार ११२	३००. अपशुकुन १२३
२७४. शुक्र विचार ११२	३०१. श्वीक १२४
२७५. शनि विचार ११२	३०२. दिशानुसार श्वीक फल १२५
२७६. वृहद् पनीती ११३	३०३. श्वीक परिवाद १२५
२७७. लघु पनीती ११४	३०४. स्वर विज्ञान १२५
	३०५. वारानुसार स्वर- महता १२६
	३०६. जानिमें अग्निवास १२६(५)

शुद्धि देखने की जाजा दी है।
मुहूर्त क्या है?

दिन और रात्रि में कुल तीस मुहूर्त होते हैं, इनमें पन्द्रह मुहूर्त दिन में तथा पन्द्रह मुहूर्त रात्रि में होते हैं, अतएव दिनमान को बराबर पन्द्रह भागों में बांटने से एक मुहूर्त की अवधि ज्ञात हो जाती है।

उदाहरणार्थ दिनमान ३०।१५ है, इसमें पन्द्रह का भाग दिया तो एक इकाई २।१ आई, अर्थात् एक मुहूर्त की अवधि उस दिन २ घण्टी १ पल है। यह तो स्पष्ट ही है कि एक घण्टी बराबर चौबीस मिनटों की होती है, तथा एक पल का तात्पर्य चौबीस सैकण्ड होता है। इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरण-मुहूर्त की अवधि ४८ मिनट २४ सैकण्ड स्पष्ट हुई।

इसी प्रकार रात्रिमान को भी पन्द्रह भागों में बांटने से रात्रि के एक मुहूर्त की अवधि ज्ञात हो जाती है।

दिवस-मुहूर्त

नीचे दिन के पन्द्रह मुहूर्त, उनके स्वामी तथा मुहूर्त-स्वामियों के नक्षत्र दिये जा रहे हैं। जिस कार्य के लिए जो नक्षत्र स्पष्ट है, उसी नक्षत्र के मुहूर्त में कार्यारम्भ अनुकूल रहता है—

मुहूर्त संख्या

मुहूर्त संख्या	मुहूर्त स्वामी	नक्षत्र
१	गिरीश	आर्द्रा
२	भृजग	इलेशा
३	मित्र	अनुराधा
४	पितृ	मधा
५	वसु	धनिष्ठा ?
६	अम्बु	पूर्वाषाढ़ा
७	विश्वदेव	उत्तराषाढ़ा
८	अभिजित्	अभिजित्
९	विद्याता	रोहिणी
१०	इन्द्र	ज्येष्ठा
११	इन्द्रानन्द	विशाखा
१२	निकृति	मूल
	१२	

१३ वरुण
१४ अर्यमा
१५ भग
इसी प्रकार रात्रि-मुहूर्त, स्वामी व संबंधित नक्षत्र स्पष्ट किया जा रहा है—

रात्रि-मुहूर्त

१	शिव	आर्द्रा
२	अजेकपाद	पूर्वाषाढ़पद
३	अहिर्बृद्ध्य	उत्तराषाढ़पद
४	पूषा	रेष्टी
५	अश्विनी	अश्विनी
६	यम	भरणी
७	अग्नि	कृत्रिका
८	घात्	रोहिणी
९	शशभूद्	मृग
१०	अदिति	पुनर्वंशु
११	जीव	पुष्य
१२	विष्णु	श्वरण
१३	सूर्य	हस्त
१४	विश्वकर्मा	चित्रा
१५	पवन	स्वाती

अभिजिनमुहूर्त

कुछ विद्वान् इसे “विजय मुहूर्त” कहते हैं, जो कि दिन का आठवाँ मुहूर्त होता है।

सूर्य जब ठीक सिर पर हो, अर्थात् मध्याह्न के पौने बारह बजे से साढ़े बारह बजे तक के समय को “अभिजिनमुहूर्त” या “विजय मुहूर्त” कहा जाता है। ‘नारद पुराण’ ने इस मुहूर्त का समय दोपहर ११-३६ से १२-२५ तक माना है। विद्वानों ने सूर्योदय से बाद के चतुर्थ उड़न को ‘अभिजित् लग्न’ या “विजय लग्न” माना है।

अभिजिनमुहूर्त में किये गए कार्य हमेशा सफल होते हैं,
१३

चाहे और कितने ही दोष क्यों न हों। अभिजित्मुहूर्त समय या 'अभिजित् लग्न' उन समस्त दोषों का नाश कर देता है।^१

प्रदोष

चतुर्थी के प्रथम तीन घण्टे, सप्तमी के प्रथम साढ़े चार घण्टे तथा त्रयोदशी के अंतिम छः घण्टे (या दोपहर) का समय प्रदोष कहलाता है।

यह समस्त शुभ कार्यों में वर्जित है।^२

कुछ विदानों के अनुसार सदैव सूर्यास्त के बाद तीन मुहूर्त (अर्धात् ३ घण्टे २४ मिनट) प्रदोष-समय कहलाता है—
त्रि मुहूर्तः प्रदोषः स्याद् रथावस्तं गते सति ॥

—स्कंद पुराण

क्षणतिथि

तिथिमान के पन्द्रहवें भाग का क्षणतिथि कहा जाता है। उदाहरणार्थ तिथिमान ६० है, तो पन्द्रह का भाग देने से क्षणतिथिमान चार घण्टी होगा।

जो तिथि होगी, प्रथम क्षणतिथि भी वही होगी। उदाहरणार्थ अष्टमी को सूर्योदय के बाद प्रथम चार घण्टी—(१घंटा ३६ मिनट तक) तक अष्टमी क्षणतिथि होगी, फिर नवमी-दशमी आदि।

जिस कार्य के लिए जो तिथि प्राप्त हो, वह कार्य किसी भी तिथि के 'क्षणतिथि' में भी किया जा सकता है, और जो कार्य वर्जित है, वह 'क्षणतिथि' में भी वर्जित समझना चाहिए।

संवत्सर

कुल संवत्सर साठ हैं, जिनका क्रमशः नाम इस प्रकार है—

१. दिन मध्यगते सूर्ये मुहूर्ते ह्यभिजित्प्रभुः।
चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृत्तिः ॥

—ज्योतिष सार संग्रह

२. चतुर्थी प्रथमे यामे सार्द्धं यामे च सप्तमी।
यामद्वये त्रयोदशयां प्रदोषः सर्वधायकः ॥

—पीयूषधारा

१	प्रभव	२१	सर्वजित्	४१	प्लवग
२	विभव	२२	सर्वधारी	४२	कीलक
३	शुक्ल	२३	विरोधी	४३	सौम्य
४	प्रमोद	२४	विकृति	४४	साधारण
५	प्रजापति	२५	खर	४५	विरोपचत्
६	अंगिरा	२६	नन्दन	४६	परिधावी
७	श्रीमुख	२७	विजय	४७	प्रमादी
८	भाव	२८	जय	४८	आनन्द
९	युवा	२९	मन्मथ	४९	राधास
१०	धाता	३०	दुर्गुत्त	५०	नल
११	ईश्वर	३१	हेमलम्ब	५१	पिगल
१२	बहुधान्य	३२	विलम्ब	५२	कालयुक्त
१३	प्रमादी	३३	विकारी	५३	सिद्धार्थी
१४	विक्रम	३४	धार्वरी	५४	रीढ़
१५	वृष	३५	प्लव	५५	दुर्मति
१६	चित्रभातु	३६	शुभकृत्	५६	दुन्दुभि
१७	सुभानु	३७	शोभन	५७	रुद्धिरोदयारी
१८	तारण	३८	क्रोधी	५८	रक्ताक्षी
१९	पार्थिव	३९	विश्ववसु	५९	क्रोधन
२०	व्यय	४०	पराम्रष	६०	क्षय

बत्त मान संवत् में १० जोड़कर ६० का भाग देने से जो शेष बचे, उसी के तुल्य संवत् का नाम या संवत्सर जानना चाहिए—

उदाहरणार्थ संवत् २०३६ + १० = २०४६ = २०३६ ÷ ६०, भागफल ३३, शेष ५६, अतः ५६ के संवत्सर यानी २०२६ का नाम क्रोधन या इस वर्ष 'क्रोधन संवत्सर' होगा।

संवत्सर-स्वामी

संवत्सर में ५ का भाग दो, लिखि में १ जोड़ने से उसके तुल्य संवत्सर-स्वामी समझना चाहिए।
स्वामीक्रम इस प्रकार है—

१ विद्यु

२ बूहस्पति

३ इन्द्र

४ अग्नि

५ विश्वकर्मा

६ अहिरुच्य

७ पितर

८ विश्वदेवा

९ चन्द्र

१० इन्द्राजिनि

११ अविष्वनी

१२ भग

उदाहरणार्थ संबत् २०२६ 'ओधन संबत्सर' था, जिसका क्रम ५६ है। ५६ में ५ का भाग दिया, लविष्ट ? हुई, ११ में १ जोड़ा तो १२ हुए, अतः वारहवाँ स्वामी इन्द्र अर्थात् संबत् २०२६ या 'ओधन संबत्सर' के स्वामी "भग" सिद्ध हुए।

संबत्सर-फल

वर्तमान संबत्सर-संस्था को दो से गुणा करो, युग्मनफल में से तीन घटाकर ७ का भाग दें, शेष तुल्य संबत्सर-फल समझना चाहिए—

० पीढ़ा १ दुभिक्ष

२ सुभिक्ष ३ मध्यम

४ दुभिक्ष ५ सुभिक्ष

६ मध्यम

पूर्व उदाहरण साबत् २०२६ का ओधन संबत्सर-क्रम ५६ था। $56 \times 2 = 112 - 3 = 115 \div 7 =$ भागफल १६ एवं शेष ३, अतः यह संबत्सर मध्यम ही रहेगा।

ऋतु

ये छावि प्रत्येक दो रसियों पर सूर्य का संक्रमणकाल "ऋतु" कहलाता है। इस प्रकार एक वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं—१. वसन्त २. ग्रीष्म ३. वर्षा ४. शरद् ५. हेमन्त और ६. शिविर। इनमें प्रथम तीन ऋतुएँ "दैवी ऋतुएँ" कहलाती हैं और अन्तिम तीन ऋतुएँ "पिवर ऋतुएँ" कहलाती हैं।

१. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षा। ते देवाऽऋतवः शरद्वेमन्तः शिविरस्ते पितरः।

—शतपथ ग्राहण

१६

८०-१५४

ऋतुएँ

वसन्त

ग्रीष्म

वर्षा

शरद्

हेमन्त

शिविर

सौरमास

मीन, मेर

वृष्टि, मिथुन

कर्क, सिंह

कन्या, तुला

वृश्चिक, धनु

स्कर, कुम्भ

चान्द्रमास

चैत्र, वैशाख

ज्येष्ठ, आषाढ़

श्रावण, भाद्रपद

आश्विन, कार्तिक

मार्गशीर्ष, पौष

माघ, फाल्गुन

अयन

अयन दो हैं—उत्तरायन एवं दक्षिणायन।

१. उत्तरायन (Summer Solstice) इसे सौम्यायन भी कहते हैं, तथा यह देवताओं का दिन माना जाता है। इस अयन में नूतन गृहप्रवेश, उत्थान, देवकार्य, प्रतिष्ठा, यज्ञोन्नीत आदि कार्य करने शुभ माने गये हैं।

२. दक्षिणायन (Winter Solstice) —यह समय देवताओं की रात्रि मानी जाती है। इस अयन में पौडप संस्कार एवं मांगलिक कार्य वर्जित हैं, परं देवों, मातृ, भैरव, देवी आदि का पूजन करने से दोष शान्त हो जाता है।

मास

चार प्रकार के मास विद्वानों के मतभेदानुसार हैं—

१. सौर मास

एक राशि पर सूर्य जितने काल तक ठहरता है, वह सौर मास कहलाता है। सामान्यतः यह सौर मास ३० दिन ६ घंटे ५७ मिनट का होता है। विवाह, उपनयन, पौडश संस्कारादि का विचार सौर मास के अनुसार ही किया जाता है।

चान्द्र मास

शुक्ला प्रतिपदा से अमावस्या तक का समय चान्द्र मास कहलाता है, इसकी अवधि २६ दिन २२ घंटे के लगभग

२. वसन्तचैत्रवैशाखो ज्येष्ठाषाढ़ो च ग्रीष्मको।

वर्षा आवणभाद्राम्यां शरदाविन कार्तिकौ।
मार्गशीर्षो च हेमन्तः शिविरो माघफल्गुनौ।

—गोरक्ष संहिता

१७

होती है।

यज्ञादि, श्राद्ध, व्रतोपचास आदि का बाधार चान्द्र मास ही होता है।

३. सावन मास

एक दिन-रात में २४ घंटे मानकर ३० दिन-रातों की अवधि को सावन मास कहा जाता है। सम्पत्ति-विभाजन, लेन-देन, व्याज, प्रायशिक्ति आदि कार्य में इसी मास को प्रधानता दी जाती है।

४. नाश्त्र मास

अश्विनी नक्षत्र से रेती नक्षत्र के अन्त तक के सूर्य-भ्रमण की अवधि को नाश्त्रमास कहा जाता है। नक्षत्रशान्ति, जलपूजन आदि कार्यों में इसी मास को प्रधानता दी जाती है।

क्षय मास, अधिक मास

सौर वर्ष का मान ३६५ दिन १५ घटी ३१ पल ३० विपल तथा चन्द्र वर्षमान ३५४ दिन २२ घटी १ पल २३ विपल है, एतदर्थं इन दोनों में अन्तर १० दिन ५३ घटी ३० पल ७ विपल वा प्रतिवर्ष रहता है। इन दोनों वर्षों के सामंजस्य हेतु हर तीसरे वर्ष एक अधिक मास तथा १४१ वर्षों बाद तथा फिर १६ वर्षों के बाद क्षय चान्द्र मास की व्यवस्था की है।

जिस चान्द्रमास में स्पष्ट सूर्य-संक्रान्ति न हो वह "अधिक मास" तथा जिस चान्द्रमास में थो सूर्य-संक्रान्तियाँ हों वह "क्षय मास" कहलाता है।

अधिकमास और क्षयमास को "मलमास" की संज्ञा भी दी गई है।

क्षयमास केवल कार्तिक, मार्गशीर्ष एवं पौष मास में ही होता है, तथा उसी वर्ष अधिक मास भी होता है जोकि फ़ाल्गुन से कार्तिक के बीच होता है—।

१. क्षयः कार्तिकादि त्रये नात्यतः स्यातदा वर्षमध्येऽधिभास द्वयं च

मलमास में कार्य

सन्ध्या, पूजन, नित्यकर्म, रोगशान्ति, गर्भधान, पुंसदन, श्राद्ध, सपिण्डीकरण, दैनिक दान, सत्कार, स्नान एवं राज्य-कार्य शास्त्रसम्मत है।

मलमास में वज्र्य कार्य

वार्षिक श्राद्ध, कन्यादान, अन्याधान, यज्ञ, तीर्थयात्रा, जलाशय, कूप-निर्माण, प्रतिष्ठा, नामकरण, उपनयन, राज्याभिषेक, व्रतारंभ, व्रतोद्यापन, गृहारंभ, गृहप्रवेश, विवाह, वधुप्रवेश, दुर्गस्थापन-उत्थापन आदि कार्य मलमास में वज्र्य हैं।

जन्म मास

जन्मदिन से आगे के तीस दिनों तक की अवधि को जन्ममास कहा जाता है। कुछ विद्वान् जिस चैत्रादि मास में जन्म हो, उस मास की पूर्णिमा तक की तिथि-अवधि को 'जन्म मास' संज्ञा देते हैं।

जन्म-मास में चूड़ाकरण, यात्रा, कर्णवेद आदि वर्जित हैं पर जप, दान विवाह एवं शुभ कार्यों के लिए शुभद माना है।^१

जन्म मास के अन्तर्गत मतान्तर से मांगलिक कार्य सम्पादन के लिए वसिष्ठ ने केवल जन्मदिन, गर्यां ने जन्मदिन से आगे आठ दिन तक, अत्रि अखिल ने दस दिन तक तथा भूगु ने जन्मपक्ष को ही वर्जित एवं शुभ कार्यों के लिए दूषित माना है।^२

पक्ष

प्रत्येक मास में दो पक्ष होते हैं। पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा से अमावस्या तक कृष्ण पक्ष एवं अमावस्योत्तर प्रतिपदा से

१. (क) स्नानं दानं तपो होमः सर्वमांगल्य वद्धनम् ।

उद्वाहश्च कुमारीणां जन्म मासे प्रशयस्ते ॥

—श्रीपती समुच्चय

- (ख) जन्मनि मासि विवाहः शुभदो । —पीयुषधारा

२. जातं दिनं दूष्यते वसिष्ठो, ह्यष्टौ च गर्गो नियतं दशात्रिः । जातस्य पक्षं विकलं भागुरिश्च योगःः प्रशस्ताः खलु जन्ममासः ।

—राजमात्रं

पूर्णिमा तक शुक्ल पक्ष कहलाता है।

शुक्ल पक्ष में समस्त देव-कार्य एवं कृष्ण पक्ष में पितर-कार्य करना शृण्यादेश है।

एक पक्ष पन्द्रह तिथियों का होता है, पर तिथि में क्षय वृद्धि से सौलह, चौदह या-तेरह दिन का भी पक्ष हो जाता है। जिस पक्ष में दो क्षय तिथियाँ हों, वह पक्ष समस्त शुभ कार्यों के लिए वर्ज्य है।^१

तिथि

अमावस्या को सूर्य चन्द्रग्रा का संगम होने के बाद जब चन्द्रमा सूर्य से १२° दूर चला जाता है, तब तक प्रतिपदा रहती है। इसी प्रकार चन्द्र बढ़ते-बढ़ते जब १५° तक पहुँच जाता है, तब पूर्णिमा होती है। फिर चन्द्रग्रा सूर्य के निकट जाने लगता है, एवं उसकी कलाएँ धीण होने लगती हैं, रात्र-तोगत्वा अमावस्या तक पहुँचते-पहुँचते वह पूर्णसः सूर्य की राशियों में लिलीन हो जाता है।

अमावस्या के तीन भेद हैं—

१. सिनीवाली—जो प्रातः से रात्रि पर्यन्त रहे।

२. दर्श—चतुर्दशी जो विद्ध हो।

३. कुह—प्रतिपदा से विद्ध।

पूर्णिमा के भी दो भेद हैं—

१. अनुमति—चतुर्दशी से मुक्त हो।

२. राका—प्रतिपदा से संवंधित हो।

तिथि संज्ञक

इसमें दोनों पक्ष शामिल हैं—

१. नंदा—१, ६, ११

नंदा तिथियों में नवीन वस्त्र पहनना, कृषिकार्य, उत्सव, घरेलू कार्य तथा नवीन शिल्पारंभ शुभ माना गया है।

१. पक्षस्य मध्य द्वितिथि पतेतां तदा भवेद्रौरव कालयोगः।

पक्षे विनष्टे सकलं विनष्टमित्याहुराचार्यवराः समस्ताः॥

—ज्योतिस्कन्ध

२. भद्रा—२, ७, १२

भद्रा तिथियों में विवाह, उपनयन, आभूषण-कला, वाहन, यात्रादि शुभ है।

३. जया—३, ८, १३

जया तिथियों में सैन्य संचालन, सैन्य संगठन, उत्सव-यात्रा, गृहारंभ आदि शुभ माने गए हैं।

४. रिक्ता—४, ६, १४

रिक्ता तिथियों में कैष, शत्रुमर्दन, जहर देना, धूतकार्य, धोखा, आपरेशन आदि शुभ माने गए हैं।

५. पूर्णा—५, १०, १५

विवाह, यज्ञोपवीत, नृप-अभिषेक, उत्सव, आदिकार्य यज्ञादि पूर्णा तिथियों में शुभ माने गए हैं।

तिथि-भेद

उदयव्यापिनी

जो तिथि सूर्योदय के समय व्याप्त हो उसे उदयव्यापिनी तिथि कहते हैं। ऐसी तिथि उत्सव, विवाह, यज्ञ, प्रतिष्ठादि कार्यों में शुभ मानी गई है।

कर्मव्यापिनी

प्रथम पहर के बाद किसी समय समाप्त हो जानेवाली तिथि कर्मव्यापिनी संज्ञक होती है। शादि, मैथुन, जन्म-मरण आदि में इसी तिथि का उपयोग करना चाहिए।

रंध तिथियाँ

किसी भी प्रकार के शुभ कार्य के लिए रंध तिथियाँ चर्जित हैं। ये तिथियाँ दोनों पक्षों की मानी गई हैं—

तिथि

घटी तक

४

८ घटी तक

६

६ घटी तक

८

१४ घटी तक

६

२५ घटी तक

वर्जयं तिथियाँ

कुछ विद्वान् इन्हें 'पर्व तिथियाँ' भी कहते हैं। समस्त शुभ कार्यों में इन तिथियों का प्रयोग निषेध है—

- (क) कृष्ण पक्ष की अष्टमी
- (ख) कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी
- (ग) अमावस्या
- (घ) पूर्णिमा
- (ङ) सूर्य संकरान्ति की तिथि

अशुभ तिथियाँ

मांगलिक कार्यों में यथासंभव इन तिथियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए—

- (क) चतुर्वीं (कृष्णपक्ष)
- (ख) सप्तमी, अष्टमी, नवमी (कृष्णपक्ष)
- (ग) १३, १४, अमावस्या व शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर देवी-कार्य या नवरात्रि में शुक्ल प्रतिपदा को शुभ माना है।

शून्य तिथियाँ

समस्त शुभ कार्यों में इन शून्य तिथियों का त्याग ही शास्त्रसम्मत है—

मास	पक्ष	तिथियाँ
चैत्र	दोनों पक्ष	८, ९
वैशाख	"	१२
ज्येष्ठ	शुक्ल पक्ष १३,	कृष्ण पक्ष १४
आषाढ़	शुक्ल पक्ष ६,	कृष्ण पक्ष ७
शावण	दोनों पक्ष	२, ३
भाद्रपद	"	१, २
आश्विन	"	१०, ११
कार्तिक	शुक्लपक्ष १४	कृष्ण पक्ष ५
मार्गशीर्ष	दोनों पक्ष	७, ८

पौष	दोनों पक्ष	४, ५
माघ	शुक्ल पक्ष ५,	कृष्ण पक्ष ६
फाल्गुन	शुक्ल पक्ष ३,	कृष्ण पक्ष ४

युगादि तिथियाँ

सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग व कलियुग जिन तिथियों से प्रारम्भ हुआ है, युग तिथियाँ कहलाती हैं। शुभ कार्यों में इनका प्रयोग निषेध है—

- (क) सत्ययुग कार्तिक शुक्ला ६
- (ख) त्रेतायुग वैशाख शुक्ला ३
- (ग) द्वापरयुग माघ कृष्णा १५
- (घ) कलियुग शावण कृष्णा १३

क्षय-बृद्धि तिथियाँ

जो तिथि क्षय या बृद्धिगत हो, उस दिन किये गये समस्त शुभ कार्य उसी प्रकार भस्म हो जाते हैं, जिस प्रकार बग्नि में सूखा इंधन।

तिथि-स्वामी

जिन तिथियों के जो स्वामी हैं, उन स्वामी देवताओं से सम्बन्धित कार्य उन्हीं से सम्बन्धित तिथियों में करने से पूर्ण फल मिलता है—

तिथि	स्वामी
१	अग्नि
२	ब्रह्मा
३	गौरी
४	गणेश
५	सर्प
६	स्कंद
७	सूर्य

१. केन्द्रे चैत्र त्रिकोणे च शुभो ह्य पञ्चयेषि वा ।

एकोपि बलवांशचापि शून्यतिथ्युद्धु नाशक ॥

अर्थात्—केन्द्र या त्रिकोण या उपचय स्थान में शुभ एव बलवान् ग्रह हो तो शून्य तिथि-दोष समाप्त हो जाता है।

५	शिव
६	दुर्गा
१०	यम
११	विश्वदेव
१२	विष्णु
१३	कामदेव
१४	शिव
१५	चन्द्र
३०	पितर

तिथियों में करने योग्य कार्य

१. प्रतिपदा

प्रतिपदा में मात्र कृष्णा प्रतिपदा को यात्रा, उपनयन, विवाह, प्रतिष्ठा या गृहारंभ, प्रवेश, शांतिक कार्य शुभ है।

२. द्वितीया

सेनाप्रयाण, सैन्यसज्जा, युद्ध, प्रतिष्ठा, विवाह, आभूषण।

३. तृतीया

संगीत, वाच, कलाकार्य-शिक्षा, अन्नप्राशन, गृहप्रवेश।

४. चतुर्थी

विद्युत से संबंधित कार्य, विजली की दुकान का मुहर्त, वध दूषित कार्य।

५. पञ्चमी

समस्त शुभ कार्य करें, पर ऋण नहीं देना चाहिए। लेन-देन उधारी वर्ज्य।

६. षष्ठी

युद्धकार्य, गृहारंभ, शुभकार्य। पर पितृकर्म, काष्ठ कर्म एवं यात्रा वर्ज्य है।

७. सप्तमी

विवाह, संगीत, यात्रा, गृहप्रवेश, वधू-आभंत्रण, तथा द्वितीया को किये जानेवाले कार्य।

८. अष्टमी

युद्ध, शिल्प, लेखन, मनोरंजन, रत्नपरीक्षा, शास्त्रधारण।

२४

९. नवमी

जुबा, मद्य-निर्माण, आखेट।

१०. दशमी

२, ३, ५, एवं सप्तमी के कार्य।

११. एकादशी

व्रतोपवास, उपनयन, देवकार्य, गृहारंभ, गमन।

१२. द्वादशी

मांगलिक कार्य, पाणिग्रहण, उपनयन आदि, परन्तु नूतन गृहारंभ या प्रवेश और यात्रा वर्ज्य है।

१३. त्र्योदशी

२, ३, ५, ७, १० को किये जानेवाले कार्य।

१४. चतुर्दशी

शास्त्रधारण, युद्धादि कार्य। यात्रा वर्ज्य है।

१५. पूर्णिमा

विवाह, देवकार्य, मंदिर-प्रतिष्ठा, यात्रिक शांति आदि।

३०. अमावस्या

पितृकर्म, दान। शुभकर्म वर्ज्य।

विषतिथि-घटी

निम्न विषतिथि-घटियों में किसी भी प्रकार का शुभ एवं मांगलिक कार्य पूर्णतः वर्ज्य है, यह समय 'तुष्ट फलदा' कहा जाता है।

तिथि	घटी से	घटी तक
१	१५	१६
२	५	६
३	८	१२
४	७	११

१. विवाह व्रत चूडामु गृहारंभ प्रवेशयो।

यात्रादि शुभ कार्येषु विज्ञदा विषनाडिकः ॥१॥

—ज्योतिःसार

२५

५	७	११
६	८	६
७	९	८
८	१०	१२
९	११	११
१०	१०	१४
११	३	७
१२	१३	१७
१३	१४	१८
१४	७	११
१५ एवं ३०	८	१२

उपर घटीमान-तिथि को ६० घटी मानकर दिशा है। प्रत्येक विष घटी ४ घटी होती है, अतः तिथिमान के न्यूनाधिक होने पर विषघटी में भी उसी के अनुपात से न्यूनाधिक समझना चाहिए—

उदाहरणार्थ यदि प्रतिपदा ६० घटी हो तो विषघटी उस दिन १५ घटी से १६ घटी तक रहेगी, पर यदि प्रतिपदा ६१ घटी हो तो उस दिन विषघटी १६ घटी से २० घटी तक होगी, या यदि प्रतिपदा ५८ घटी रहेगी, तो विषघटी उस दिन १३ घटी से १७ घटी तक रहेगी।

विषघटी-दोष-परिहार

कर्मकाल में लम्बकुण्डली बनाने पर यदि चन्द्रमा केन्द्र या त्रिकोण में रहे, अथवा लग्नेश स्वगृही शुक्रमित्र इष्ट होकर केन्द्र त्रिकोणस्थ हो तो विषघटी दोष नहीं लगता।

१. चन्द्रो विषघटी दोषं हन्ति केन्द्रः त्रिकोणः।
लग्न विना शुभैर्ष्टः केन्द्रे वा लग्नपस्तथा ॥

—दैवज्ञ मनोहर

विषनाइयुतिथं दोषं हन्ति सौम्यर्कंगः शशी ।
मित्रइष्टोऽच्चास्त्रीय वर्णस्पौ लग्नपौ भवेत् ॥

—फल प्रदीप

धार

धार का प्रारंभ सूर्योदय से ही समझना चाहिए, परन्तु स्नान-सन्ध्यादि में अर्धरात्रि के उपरान्त संकल्प में अग्रिम धार का ही (सूर्योदय के समय होनेवाले धार का) उल्लेख करना चाहिए।

धारों के अधिपति इस प्रकार हैं—

धाराधिपति

धार	देवता
रविधार	शिव
सोमधार	पार्वती
मंगलधार	कात्तिकेय
बुधधार	विष्णु
गुरुधार	ब्रह्मा
शुक्रधार	इन्द्र
शनिधार	काल

विभिन्न देवताओं की पूजा उनके स्वयं के बारों में ही करना शुभ माना गया है।

धार-दोष

रवि, गुरु और शुक्रधार का प्रभाव रात्रि में नगण्य एवं सोम, मंगल, शनिधार का प्रभाव दिन में नगण्य रहता है। बुधधार अपना फल सर्वदा प्रदर्शित करता है।

धार-दोष-परिहार

धारों की अशुभता को शुभता में परिवर्तित करने के लिए निम्न प्रयोग शास्त्रसम्मत हैं—

रविधार	ताम्बूल-भक्षण
सोमधार	चन्दन-प्रयोग
मंगलधार	पुष्प-प्रयोग
बुधधार	बुधमंत्र उच्चारण
गुरुधार	शिव-पूजन
शुक्रधार	श्वेत वस्त्रधारण
शनिधार	विप्र-सम्मान

वारों के अनुसार किये जानेवाले कार्य रविवार

यह ध्रुव एवं स्थिरसंज्ञक है। राज्याभिषेक, ललित कला-सीखना, राज्यसेवा, पशुक्रय, औषधि-निर्माण, धातु कार्य, यज्ञादि, भंत्रोपदेश आदि कार्य शुभ माने गये हैं।

चन्द्रवार

चर एवं चलसंज्ञक। आभूषण-निर्माण, वाटिका-संगीत-नृत्य कलारंभ, पशु-क्रय-विक्रय, कृषिकार्य आदि शुभ हैं।

मंगलवार

उग्र एवं कूरसंज्ञक। विष देना, अग्निदाह, संधिविच्छेद, छल करना, असत्य बोलना आदि।

बुधवार

मिथ एवं साधारण संज्ञक। साहित्यारंभ, संगीत कलारंभ, लेखन-कार्य, पाणिग्रहण, घान्य-संग्रहादि।

गुरुवार

लघु एवं क्षिप्र। यज्ञ, हवन, प्रतिष्ठा, देवार्चन, नवग्रह-पूजन, धार्मिक कार्य, विद्यारंभ-नवीन वस्त्रधारण, वाहन घर में लाना, औषधि-संग्रह एवं अलंकार-धारण।

शुक्रवार

नृत्य-वाद्य-गीत-कलारंभ, स्त्रीसंसर्ग, धन-सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र-भूषण धारण, कृषिकार्य।

शनिवार

दारुण एवं तीक्ष्ण संज्ञक। अस्त्र-शस्त्र धारण, नवीन गृह-प्रवेश, विषदान, असत्यभाषण, पशुक्रय-विक्रय, काष्ठकर्म आदि-शुभ माने गये हैं।

वार विषघटी

समस्त शुभ एवं मांगलिक कार्यों में वार विषघटी का त्याग करना चाहिए—

वार	घटी से	घटी तक
रविवार	२०	२४
सोमवार	२	६
	२८	

मंगलवार	१२	१६
बुधवार	१०	१४
गुरुवार	७	११
शुक्रवार	५	९
शनिवार	२५	२६

वार-त्रिभाजन

दिनमान में ३ का भाग देने से प्रथम भाग पूर्वाह्न, द्वितीय भाग मध्याह्न तथा तृतीय भाग अपराह्न कहलाता है।

पूर्वाह्न में सन्ध्या, देवकार्य, यज्ञादि प्रारम्भ। मध्याह्न में अतिथि-सत्कार, व्यावहारिक कार्य। अपराह्न में षितृकार्य, श्रद्धादि कार्य करने चाहिए।

यामाद्वं

दिनमान में आठ का भाग देने से अष्टमांश को यामाद्वं कहा जाता है। यामाद्वं में किसी भी प्रकार का शुभ कार्य सर्वथा वर्ज्य है—

वार	यामाद्वं
रविवार	४,५
सोमवार	२,७
भौमवार	२,६
बुधवार	३,५
बृहस्पतिवार	७,८
शुक्रवार	३,४
शनिवार	१,६,८

उदाहरणार्थ दिनमान ३२८ है, इसमें ८ का भाग दिया तो एक इकाई ४। १ अर्थात् ४ घटी १ पल हुई। इस प्रकार रविवार को चौथी तथा पाँचवीं इकाई यामाद्वं कही जायेगी।

कालवेला-कालरात्रि

जिस प्रकार शुभकार्यों में यामाद्वं त्याज्य है, उसी प्रकार कालवेला एवं कालरात्रि का भी त्याग करना चाहिए—

वार	कालवेला	कालरात्रिवेला
रविवार	५	६

सोमवार	२	४
मंगलवार	६	३
बुधवार	३	७
गुरुवार	७	५
शुक्रवार	४	३
शनिवार	१,५	१,५

कालवेला में यात्रा करने से यात्रा करने वाले को मृत्यु, विवाह करने से शीघ्र वैधव्य तथा यजोपवीत करने से ब्रह्महत्या लगती है।^१

कुलिक, काल, यमकंटक कष्टक

ये चारों ही दुष्प्रभावक हैं, तथा इनका त्याग आवश्यक है—

वार	कुलिक	काल	यमकंटक	कष्टक
रविवार	१४	८	१०	६
सोमवार	१२	६	८	४
मंगलवार	१०	४	६	२
बुधवार	८	२	४	१४
गुरुवार	६	१४	२	१२
शुक्रवार	४	१२	१४	१०
शनिवार	२	१०	१२	८

पर कुलिक, काल, यमकंटक एवं कष्टक का दुष्ट प्रभाव रात्रि में नहीं रहता।^२

नक्षत्र

नक्षत्र सत्ताइस हैं, पर उत्तराषाढ़ के चतुर्थ चरण एवं अवण नक्षत्र की पहली ४ घटी लेकर 'अभिजित' नक्षत्र को

१. यात्रायां मरण काले वैधव्यं प्राप्णीडने।

त्रै ब्रह्मवधः प्रोक्तः सर्वकर्मसु तं त्यजेत् ॥

२. निधनं प्रहराद्य तु निःस्वर्वं यमकंटके।

कुलिके सर्वनाशः स्याद् रात्रीवेते न दोषदः ॥

—जातक दीपक

—पीयूषधारा

माना है, यह नक्षत्र लगभग १६ घटी का होता है, तथा अभिजित नक्षत्र पर चन्द्रमा (राश्यादि ६-६-४०-० से ६-१०-५३-२० तक) इतना ही रहता है।

श्रीराम नक्षत्र	स्वरूप तारासंख्या	स्वामी	ग्रहाधिपत्य
१ अश्विनी	अश्वमुख	३ अश्विनीकुमार	केतु
२ भरणी	योनि	३ यम	शुक्र
३ हृतिकर	नापितवुर	६ गणि	सूर्य
४ रोहिणी	शकट	५ ब्रह्मा	चन्द्र
५ मृगशिरा	हिरण्यमुख	३ चन्द्र	मंगल
६ बार्द्धा	मणि	१ शिव	राहु
७ पुनर्वसु	गृह	४ अरिति	गुरु
८ पुष्य	बाण	३ गुरु	शनि
९ आश्लेषा	चक्राकार	५ सर्प	बुध
१० मधा	भवन	५ पितर	केऽ
११ पूर्वाकालयुनी	खाट	२ भग	शु०
१२ उत्तरा "	शश्या	२ अर्यमा	सू०
१३ हस्त	हाथ	५ रवि	च०
१४ चित्रा	मोती	१ विश्वदेव	म०
१५ स्वाती	मूँगा	१ वायु	रा०
१६ विशाखा	तोरण	४ इन्द्राजित	व०
१७ बनुराधा	बलिभूक्तपुंज	४ मित्र	श०
१८ ज्येष्ठा	कुण्डल	३ इन्द्र	ब०
१९ मूल	तिहपुच्छ	११ राधस	क०
२० पूर्वाषाढ़ा	हाथी दाँत	२ जल	शु०
२१ उत्तराषाढ़ा	सिंहासन	२ विश्वदेवा	सू०
२२ अवण	वामन	३ विश्वासु	च०
२३ धनिष्ठा	मृदंग	४ वसु	म०
२४ शतभिषा	वृत्त	१०० वरुण	रा०
२५ पूर्वभाद्रपद	मंच	२ अजपाद	गु०
२६ उत्तरा "	जुड़वें पुरुष	२ अहितुच्छा	श०
२७ रेवती	मृदंग	३२ पूषा	उ०

नक्षत्र संज्ञा

- (१) द्वूत नक्षत्र—रो०, उ० फा०, उ० घा०, उ० भा० ।
कार्य—प्रत्येक स्थिर कर्म, गृह प्रवेश, बीज बोना, चिनायक पूजन, वस्त्र धारण, आभूषण-निर्माण, मित्रता आदि कार्य करने शुभ हैं। इन्हें स्थिर नक्षत्र भी कहा जाता है।
- (२) चर या चल नक्षत्र—पुनर्वंशु, स्वाति, अवण, घनिष्ठा, शतभिषा ।
कार्य—बाहन, सवारी करना, उपचाटिका, पीछा लगाना, डुकान खोलना, रत्न, विद्यारंभ ।
- (३) उत्र या क्रूर संज्ञक नक्षत्र—भरणी, मधा, पू० फा०, पू० घा०, पू० भा० ।
कार्य—अग्नि जलाना, शत्रु-मर्दन, यन्त्र-मन्त्र-तंत्र कार्य, पशु-पालन, विषपान ।
- (४) मिथ नक्षत्र—ठुत्तिका, विशाखा ।
कार्य—अग्नि कार्य, वृषोत्सर्ग, कैद करना, विष, भयंकर कार्य ।
- (५) लिप्र नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित् ।
कार्य—चर नक्षत्र में वर्णित सभी कार्य इसमें किये जा सकते हैं।
- (६) मृदु नक्षत्र—मूर्गिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती ।
कार्य—गीत, ललित कार्य, वस्त्र धारण, अलंकार-सज्जा ।
- (७) तीक्ष्ण नक्षत्र—आर्द्धा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, मूल ।
कार्य—कलह, मुकदमा, घोड़ों का प्रशिक्षण, बीज बोना, शांति, यज्ञादि कार्य, संगीत शिक्षा, नवीन पोशाक ।
- (८) ऊर्ध्वमुख नक्षत्र—रो०, वा०, पुष्य, उ० फा०, उ० घा०, अ०, घनि०, शत०, उ० भा० ।
कार्य—गृह प्रारम्भ, विवाहादि मंगल कार्य, राज्याभिषेक, छवजारोहण आदि ।

(६) अघोमुख नक्षत्र

भ०, कु०, श्ल०, म०, पूफा०, वि०, मू०, पूघा०, पूमा० ।
कार्य—तालाब-खनन, गड़ा घन निकालना, ज्योतिष अध्ययन प्रारम्भ, शिल्पकला, यात्रा ।

- (१०) तिङ्ग्रे मुख नक्षत्र
अश्विनी, मूर्ग०, पुन०, ह०, वि०, स्वा०, अनु० ज्ये०, ऐ० ।
कार्य—पशु-क्रय-विक्रय, हल चलाना, ललित कार्य, पशु-व्यवहार, यात्रा ।

- (११) अन्ध नक्षत्र
रो०, पु०, उफा०, विशा०, पूघा०, घ० रे० ।
कार्य—खोई द्वाई वस्तु पूर्व दिशा में जायगी तथा शीघ्र मिलेगी ।

- (१२) मण्डलोचन नक्षत्र—
भ०, वा०, म०, चि० ज्ये०, अशि०, पू० भा० ।
कार्य—खोई या चोरी वस्तु परिचय दिशा की ओर ।
पता लगने पर भी वस्तु हाथ में न आ सकेगी ।

- (१३) मन्द लोचन नक्षत्र
ज०, मूर्ग०, श्ल०, ह०, अनु० उघा०, शत० ।
कार्य—खोई वस्तु उत्तर दिशा की ओर । कठिनता व विलम्ब से वस्तु प्राप्त होगी ।

- (१४) सुलोचन नक्षत्र
क०, पुन०, पू० फा०, स्वा०, मू०, अ०, उ० घा० ।
कार्य—वस्तु उत्तर दिशा की ओर । पर मिल न सकेगी ।

नक्षत्र विषघटी
नक्षत्र विषघटी में किया गया प्रत्येक कार्य सर्वथा निष्फल जाता है—

नक्षत्र	घटी से	घटी तक
अश्विनी	५०	५४
भ०, पू०, घा०, उ० भा०	६४	२८
क०, पुन०, म०, रेव०	३०	३४

रो०	४०	४४
मू०, चि०, स्वा०, ज्य०	१४	१८
आ० हस्त	२१	२५
पुष्य०, पूफा०, चित्रा०, उषा०	२०	२४
आद्य०,	३२	३६
उ० फा०, शत०	१८	२२
अनु०, थ०, ध०	१०	१४
मूल	५६	६०
पू० भाद्र०	१६	२०

उपर्युक्त मान नक्षत्र को ६० घटी मानकर किया है। नक्षत्रगान न्यूनाधिक होने पर विषयटी भी उसी अनुपात में न्यूनाधिक होगी।

मास शून्य नक्षत्र

मास	नक्षत्र
चैत्र	अरिवनी, रोहिं
बैशाख	चि०, स्वा०
ज्येष्ठ	पुष्य०, उ० वा०
आषाढ़	पू० फा०, धनि०
थावण	उ० वा० थ०
भाद्रपद	शत०, रे०
वार्षिवन	पू० भा०
कार्तिक	कृतिका, मधा,
भाग्यशीर्ष	चित्रा, विशाखा
पौष	आद्रा, अदिव० हस्त
माघ	श्वरण, मूल
फाल्गुन	भरणी, ज्येष्ठा

पंचक नक्षत्र

ज्येष्ठा का उत्तरार्द्ध, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती ये पौच नक्षत्र (समूह) पंचक कहलाते हैं।

पंचक नक्षत्रों में समस्त शुभकार्य, गृहप्रवेश, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतकर्म, वस्त्रधारण, तृण-संचय, लकड़ी काटना, गृहारम्भ आदि त्याज्य हैं।

५४ नक्षत्र

किसी भी प्रकार के दोष एवं अशुभ का परिमार्जन पुष्य नक्षत्र से हो जाता है।^१ चाहे चन्द्राक्षीण हो, तारा-बल न भी हो, पुष्य नक्षत्र होने से यह दोष भी नहीं लगता।^२ यहाँ तक कि धण्डग चन्द्रमा का दोष भी पुष्य हर लेता है।^३ मुहूर्त दीपिका के अनुसार तो किसी भी प्रकार का दोष व्याप्त ही नहीं होता, यदि मुहूर्त में पुष्य नक्षत्र भी हो। परन्तु विवाह आदि में पुष्य नक्षत्र लेने का पूर्णतः निषेध है।^४

रविवार को पुष्य—मन्त्रसिद्धि, औषधि प्रयोग के लिए शुभ। गुरुवार को पुष्य—व्यापारिक कार्यों के लिए श्रेष्ठतम्। शुक्रवार को पुष्य—उत्पातकारक, विषकर्ता। चन्द्र, भूमि बुध, शनि को पुष्य—रेष्ठ। नवमी गुरुवार को पुष्य—विषकारक। ज्येष्ठ मास में पुष्य—व्यथा। गार्गशीर्ष में पुष्य—हानिप्रद।

जन्म नक्षत्र

जन्म के समय जो नक्षत्र हो, वह नक्षत्र अन्नप्राशन, उपनयन, विवाह, राज्याभिषेक, यात्रा आदि में निषेध है।

१. सिंहा यथा सर्वं चतुष्पदानां तर्थेव पुष्यो बलवानुड्नाम।
२. पर्वतिविदे युते हीने चन्द्रं तारा बलेऽपि च। पुष्ये सिद्ध्यन्ति सर्वाणि कार्याणि मंगलानि च ॥—मुहूर्त गणपति
३. पुष्यः परकृतं हन्ति न तु पुष्यकृतं परः। धोषं यथृष्टमोऽपिन्दुः पुष्यः सर्वार्थं साधक ॥
४. समस्तं कर्मोचितं कालपुष्यो रूप्यो विवाहे मद मूर्च्छात्वात् ॥ —ज्योतिःप्रकाश

X X

विवाहमेकं परिहर्यं सिद्धयं सर्वाणि कार्याणि करोतु सिद्धैः। —ज्योतिविदाभरण

५. बालान्पुष्टी व्रतवन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलु जन्मधीष्यणम्। शुभत्वनिष्टं सततं विवाह-सीमन्त-यात्रादिषु मंगलेषु ॥

जन्मनक्षत्र से २५वाँ तथा २७वाँ नक्षत्र भी शुभ कार्यों के लिए पूर्णतः वर्जित है।

योग

योग दो प्रकार के हैं—नैसर्गिक तथा तात्कालिक। नैसर्गिक योगों का कहम अपरिवर्तित रहता है, जबकि तात्कालिक योग वार्त-तिथि-नक्षत्रादि के संयोग से बनते हैं।

नैसर्गिक योग

ये सत्ताईस हैं, तथा इनका कहम सुनिश्चित है। नीचे योग, उसका स्वामी तथा फल स्पष्ट किया जा रहा है—

क्र० सं०	योग	स्वामी	फल
१	विष्णुभं	यम	अशुभ
२	प्रीति	विष्णु	शुभ
३	बायुष्मान्	चन्द्र	शुभ
४	सौभाग्य	ब्रह्मा	शुभ
५	शोभन	गुरु	शुभ
६	अतिगण्ड	चंद्र	अशुभ
७	सुकर्मा	इन्द्र	शुभ
८	षूति	जल	शुभ
९	षूल	सर्प	अशुभ
१०	मण्ड	अर्णि	अशुभ
११	वृद्धि	सूर्य	शुभ
१२	ध्रुव	भूमि	शुभ
१३	व्याधात	वायु	अशुभ
१४	हृष्ण	भग	शुभ
१५	वज्र	वरुण	अशुभ
१६	सिद्धि	गणेश	शुभ
१७	व्यतिपात	षट्र	अशुभ
१८	वरियान	कुबेर	शुभ
१९	परिष	विश्वकर्मा	अशुभ
२०	षिव	मित्र	शुभ
२१	सिद्धि	कार्तिकेय	शुभ

३६

२२	साध्य	सावित्री	शुभ
२३	शुभ	लक्ष्मी	शुभ
२४	शुक्ल	पांचती	शुभ
२५	ब्रह्म	ब्रिहन्नीकूमार	शुभ
२६	ऐन्द्र	पितर	अशुभ
२७	वैष्णुति	दिति	अशुभ

व्यतिपात

उपर्युक्त योगों में व्यतिपात या व्यतिपात अत्यन्त दुर्दृढ़ उपद्रवकारी योग है। समस्त मांगलिक कार्यों में सर्वथा निषेधीय यह योग है।

वैष्णुति

यह भी व्यतिपात की तरह ही अशुभ एवं विघ्नकर्ता है।

धार्य

निम्न योग भी शुभकार्यों में सर्वथा वज्र्य हैं :

- (क) परिष योग का पूर्वार्द्ध ।
- (ख) विष्णुभं की प्रथम तीन घटी ।
- (ग) वज्र की प्रथम तीन घटी ।
- (घ) व्याधात की प्रथम नौ घटी ।
- (ङ) धूल की प्रथम पाँच घटी ।
- (च) गड़ की प्रथम छः घटी ।
- (छ) अतिगण्ड की प्रथम छः घटी ।

विशेष

(१) यदि किसी दिन वैष्णुति, व्यतिपात, भद्रा या कोई अशुभ योग हो, पर उसी दिन वस्त्रत योग भी बनता हो तो अशुभ योगों का नाश हो जाता है।^१

(२) भद्रा मंगलवार, शनिवार, व्यतिपात, जन्मनक्षत्र आदि दोष मध्याह्न के पश्चात् नहीं लगता।^२

१. यदि विष्टिवृत्तीपातो दिनं चाप्यशुभं भवेत् ।
हृन्यतेऽमृत योगेन भास्करेण तमो यथा ॥ —राजमार्तण्ड
२. विष्टावगारके चंद्र, व्यतीपाते शनैश्चरै ।
निषन्ने जन्मनक्षत्रे मध्याह्नात्परतः शुभम् ॥
—श्रीपति व्यवहार निर्णय

३७

(३) यदि कोई कुयोग हो, पर उसी दिन सुयोग भी हो जाय, तो कुयोग दोष समाप्त हो जाता है।^१

(इसके अतिरिक्त आनन्दादि अट्टाइस योग, ककचादि ताल्कलिक योग विस्तार-भय से यहाँ नहीं दिये जा रहे हैं, पाठकों को इसके लिये सुबोध पॉकेट बुक्स दिल्ली द्वारा प्रकाशित मेरी पुस्तक "सुबोध प्रारंभिक ज्योतिष" का अध्ययन करना चाहिए)

त्याज्य योग

(१) एकम को उत्तराधाड़ा, दूज को अनुराधा, तीज को उ०-पाँचम को मध्या, छठ को रोहिणी, सातम को हस्त या मूल, आठम को पू० भा०, नवम को कुत्तिका, यारस को रोहिणी, बारस को आश्वेषा एवं तेरस को स्वाती या चित्रा पूर्णतः वर्ज्य माना गया है।

(२) पंचमी को हस्त नक्षत्र एवं रविवार
षष्ठी को मृगशिरा व सोमवार
सप्तमी को अश्विनी व भीमवार
अष्टमी को अनुराधा व बुधवार
नवमी को पुष्य व गुरुवार
दसमी को रेवती व शुक्रवार

एकादशी को रोहिणी व शनिवार का संयोग पूर्णतः शुभ कार्यों के लिए वर्ज्य है।
(३) गृहप्रवेश में भीमवार तथा अश्विनी के संयोग से सिद्धियोग। यात्रा में शनि रोहिणीजन्य सिद्धि-योग सर्वथा वर्जित है।^२

१. अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेती भवतो यदि ।
आयोगो हन्यते तत्र सिद्धियोगः प्रवर्तते ॥ —राजमार्तण्ड
अयोगे सुयोगेऽपि चेत्प्यात्तदानीययोगं निहस्येवं सिद्धिः ॥ —मु० चिन्ता०
२. भौमाश्विनीं प्रवेशे च प्रयाणे शनि रोहिणीम् ।
गुरु पुष्यं विवाहे च सर्वथा परिवर्जयेत् ॥ —राजमार्तण्ड

करण

करण म्यारह होते हैं, जिनके नाम क्रमशः व२, बालव, बौद्धव, तीतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुनि, चतुष्पद, नाश तथा किस्तुधन हैं, इनमें प्रथम सात करण चरसंजक तथा योष चार रिषरसंजक हैं। इनमें प्रथम सात करणों में शुभ कार्य तथा अन्तिम चार करणों में पितृ कार्य करना ऋषयादेश है।

भद्रा

समुद्र-मन्थन के समय जब गरल पान कर शिव ने हुंकार भरी एवं अपने शरीर पर दृष्टि डाली, तो उनके दृष्टि-आधात से गर्दं भ मुख, तीन चरण, सप्त भुजा, काला वर्ण, लम्बे व टेढ़े धौत, प्रेतवाहन तथा मुख से अग्नि उगलती हुई देवी प्रकट हुई, जिसे देवों ने 'भद्रा' के नाम से संबोधित किया।

भद्रावास

चन्द्रराशि	भद्रावास	भद्रामुख	फल
४, ५, ११, १२	मृत्युलोक	सम्मुख	शुभफलद
१, २, ३, ८	स्वर्गलोक	लघ्वमुख	सामान्य
६, ७, ८, १०	पाताललोक	बघोमुख	अनिष्ट

भद्रा दिशा

तिथि	दिशा
३	ईशान
४	पश्चिम
७	दक्षिण
८	अग्निकोण
१०	वायव्य
११	उत्तर
१४	पूर्व
१५	नैऋत्य

फल

जिस दिशा में भद्रा हो, उस दिशा की ओर यात्रा करना वर्जित है।

भद्रा अंग

घटी	भद्रा अंग	फल
५	मुख	कार्यनाश
१	गदंन	मृत्यु
११	वक्षःस्थल	द्रव्यनाश
४	नाभि	फलह
६	कमर	बुद्धिनाश
३	पुच्छ	कार्यसिद्धि

भद्रासंज्ञा

कृष्ण पक्ष की भद्रा को "वृश्चिकी" तथा शुक्ल पक्ष की भद्रा को 'सर्पिणी' कहा जाता है।

विशेष-

- यदि दिन की भद्रा रात्रि को, और रात्रि की भद्रा दिन तक रहे तो भद्रा-दोष नहीं रहता ।'
- मीन संकान्ति में भद्रा-दोष नहीं लगता ।'
- मध्याह्न के बाद भद्रा-दोष शान्त रहता है।

जन्म राशि

पाणिग्रहण संस्कार, यात्रा-मांगलिक कार्य तथा गोचर, विचार में जन्मराशि चित्तनीय है।

नाम-राशि

देश, ग्राम, गेहारंभ, युद्ध, वादविवाद, नीकर रखना, व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मंत्रसिद्धि आदि के लिए नाम-राशि से ही विचार करना चाहिए।

संक्रान्ति

एक राशि पर संक्रमणकाल (सूर्य काल) को संक्रान्ति कहते हैं। एक वर्ष में बारह संक्रान्तियाँ होती हैं। सूर्य संक्रान्ति के पूर्व १६ घटी और बाद में १६ घटी तक संक्रान्ति

- रात्रिभद्रा यदन्ह स्याद् दिवा भद्रा यदा निषि ।
न तत्र भद्रा दोषः स्यात् साभद्रा भद्रदायिनी ॥ —पीयुषधारा
- भद्राय भद्रा न शंभोर्जये भीनराशि योगस्तथाप्यर्थने ।
होमकाले शिवायास्तमा तद्भुवः साधने सर्वकालोऽयमेशेतयो ॥

पुष्पकाल कहा जाता है।

संक्रान्ति	भत्तेद रे विभिन्न संक्रान्तियों के निम्न पुष्प काल हैं-
पैष	१० घटी पूर्व एवं १० घटी पश्चात् तक ।
पृष्ठ	१६ घटी पूर्व ।
मिथुन	१६ घटी पश्चात् ।
फर्क	३० घटी पूर्व ।
सिंह	१६ घटी पूर्व ।
कन्या	१६ घटी पश्चात् ।
तुला	१० घटी पूर्व एवं १० घटी पश्चात् ।
वृश्चिक	१६ घटी पूर्व ।
थनु	१६ घटी पश्चात् ।
मकर	४० घटी पश्चात् ।
कुम्भ	१६ घटी पूर्व ।
मीन	१६ घटी पश्चात् ।
सूर्य-संक्रान्ति में दानादि शुभ है ।	

चन्द्रमा

चन्द्रमा नित्य ही मार्गी एवं उद्दित रहता है। कृष्णपक्ष की त्रयोदशी चतुर्दशी को चन्द्रमा वृद्ध, अमावस्या को मृत एवं शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को बाल अवस्था में रहता है।

चन्द्र गोचर फल

जन्म	अन्नप्राप्ति
दूसरे भाव	वित्त-नाश
तीसरे "	द्रव्य-लाभ
चौथे "	कमर-रोग
पांचवें "	कार्य-नाश
छठे "	धन-लाभ
सातवें "	द्रव्य-लाभ

- रेः संक्रमण राशौ संक्रान्तिरिति कथ्यते ।
सान दान जप श्राद्धः होमादिव्यु महाफलम् ॥
- पुरुषाय चिन्तामणि

आठवें भाव	मृत्यु
नवें "	राज्य-भय
दसवें "	सुख
ग्यारहवें "	लाभ
बारहवें "	रोग-वृद्धि

शुभचन्द्र

गर्भाधान, राज्याभिषेक, अन्तप्राप्ति, विवाह, जनेऊ, यात्रा, दान, व्रतोपवास आदि में द्वादश चन्द्र शुभ माना गया है।^१

जन्मचन्द्र

यात्रा, युद्ध, विवाह, गूढ़ प्रवेश एवं क्षीर कर्म, ये पाँच जन्मचन्द्र को वर्जित हैं।^२

स्त्री चन्द्र बल

विवाह, रजीदर्शन, गर्भाधान तथा प्रसवपूर्व कर्म में स्त्री के नामराशि-चन्द्र से विचार करना चाहिए, एवं अन्य समस्त कार्यों में पति के नाम से ही विचार करना चाहिए।^३

चन्द्र-दिशा

रुदी	नाम दिशा	फल
मेष सिंह, घनु	पूर्व	शुभ
वृष, कन्या, मकर	दक्षिण	अशुभ
मिथुन, तुला, कुम्भ	पश्चिम	शुभ
कर्क, वृश्चिक, मीन	उत्तर	शुभ

गर्भाधाने जन्मकाले भिषेके मौत्रिजवन्धने

पाठि इह प्रथाणे च चन्द्रो द्वादशमः शुभः ॥

—दैवज्ञ कल्पद्रुम

२. जन्मगः फलदशचन्द्रः पंचकर्मेषु वर्जयेत् ।

यात्रा युद्ध विवाहेषु प्रवेशे क्षीर कर्मणि ॥

—फलित

विवाहकार्यं कुमुमप्रतिष्ठा नर्तप्रतिष्ठा वनिता विशुद्धी ।

यात्रिने कार्याणि श्रुत्यस्त्रै पत्थी विहीने प्रमदात्यमशुद्धया ॥

—राज मार्तण्ड

चात्रधात्र

चात्रराशि	वर्ण	धात्र	फल
मेष, सिंह, वृश्चिक	रक्त	हाथी	युद्ध
वृष, कर्क, तुला	इवेत	बैल	सिद्धिदायक
मिथुन, घनु, मीन	पीला	अश्व	लक्ष्मीप्रदायक
कन्या, मकर, कुम्भ	काला	महिष	भयदाता

वृत्तीक्ष्ण में चन्द्रवास

तिथि को पाँच से गुणाकर १ जोड़कर योगफल को ३ से भाग दें, शेष ० वचे तो मृत्युलोक में, १ वचे तो स्वर्गलोक में तथा २ वचे तो पाताललोक में जानना चाहिए।

फल

गृहनिर्माण, कूपखनन, यज्ञ, कृषि, कार्य, विद्यारंभ यात्रादि में पातालस्थ चन्द्रमा वर्ज्य है।

स्वर्ग व मृत्युलोक में चन्द्र शुभ एवं पाताल लोक में अनिष्टकर माना गया है।

धात्र चन्द्र

जन्मराशि	धात्रराशि (पुरुष)	धात्रराशि स्त्री
मेष	मेष	मेष
वृष	कन्या	घनु
मिथुन	कुम्भ	घनु
कर्क	सिंह	मीन
सिंह	मकर	वृश्चिक
कन्या	मिथुन	वृश्चिक
तुला	घनु	मीन
वृश्चिक	वृष	मिथुन
घनु	मीन	कन्या
मकर	सिंह	वृश्चिक
कुम्भ	घनु	मिथुन
मीन	कुम्भ	कुम्भ

विवाह, अन्त, तीर्थयात्रा, यात्रा एवं शुभ कार्यों में चात्र-चन्द्र का विचारन करें, पर कुमारी-पूजन, वृद्ध, राज्यसेवा

विद्या, वाहन वादि में धात चन्द्र का विचार चितनीय है।
गुरु शुक्रास्त में वज्र्यं कार्यं

भूहरंभ, कूपखनन, व्रतोदापन, वधू-शागमन, यज्ञ,
दान, आद्, श्रावणी कर्म, त्रिपिण्डी आद्, वर्षोत्सर्व, देवप्रतिष्ठा,
दीक्षा, मंत्रोपदेश, विवाह, यज्ञोपवीत, तीर्थयात्रा, संन्यासग्रहण,
राज्याभिषेक आदि।

सिंहस्थ गुरु

सिंह राशिगत गुरु जब सिंह के नवांश में (वर्षादि १३-
२० से १६-४० अंश तक) हो तो विवाहादि कार्यं वज्र्यं हैं।^१

'मुहूर्तं चिन्तामणि' में मधा के चार तथा पूर्वा फालगुनी के
प्रथम चरण पर गुरुणोचर को ही वज्र्यं माना है। "मधादि
पंचपादेषु गुरुः सर्वं त्रिनिदितः।"

जो कार्यं सिंहस्थ गुरु में वज्र्यं है, वही शुक्र के लिए भी
वजनीय है।

भू-रुदन

मास की अंतिम घड़ी, वर्ष का अंतिम दिन, अमावस्या,
होलिका तथा प्रत्येक मंगलवार को भू-रुदन होता है। अतः
प्रत्येक शुभ कार्यं भू-रुदन में वज्र्यं है।

भू-हास्य

पंचमी, दशमी, पूर्णिमा, गुरुवार, पूष्य, श्रवण नक्षत्रों में
पृथिवी हँसती है। अतः प्रत्येक शुभ-कार्यं में यह समय अनुकूल
होता है।

१. तीर्थयात्रा विवाहान्लप्राशोपनयनादिषु,
मांगल्य सर्वकार्येषु धात चन्द्रं न चितयेत् ।

युद्धे चैव विवादे च कुमारीपूजने तथा,
राजसेवा वाहनादौ धातचंद्रं विवर्जयेत् ॥

—पीयूषधारा

२. सिंहराशी तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः ।
सर्वं देशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योनिधनप्रदः ॥

—राजमार्तण्ड

भू-शयन

(क) पूर्यं-संकान्ति से ५, ७, ६, १५, २१, तथा २४वें -दिन
परती शयन करती है।

(छ) पूर्यं नक्षत्र से ५, ७, ६, १२, १६ तथा २६वें नक्षत्र में
पृथिवी शयन करती है।

कृषि, हवन समस्त शुभ कार्यों में भू-शयन काल वज्र्यं है।

भू-रजस्वला

(क) सूर्यं-संकान्ति से १, ५, १०, ११, १६, १८ तथा १९वें
दिन भूमि रजस्वला होती है।

(छ) पंचमी को भीमवार, षष्ठी को रविवार, सप्तमी को
षुक्रवार हो तो इससे आगे तीन दिनों तक पृथिवी
रजस्वला रहती है।

समस्त शुभ कार्यों, प्रतिष्ठा, यज्ञादि से भू-रज-समय
त्याज्य है।

देव-शयन

आपाद शुक्ला ११ से कातिक शुक्ला ११ तक देव-शयन
करते हैं, अतः इस अवधि में गहनिमणि, भूहरंभ, विवाह, यज्ञो-
पवीत, दान, यात्रा, यज्ञादि कार्यं, देव-प्रतिष्ठा वादि त्याज्य है।

अग्निवास

शुक्ला प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक गणना कर योग्य
में १ जोड़ सूर्यवार से गणना कर वार-संस्था जोड़ें, तथा इस
संस्था को ४ से भाग दें, शेष ० बचे तो अग्नि पृथिवी पर १
बचे तो आकाश में, दो बचे तो पाताल में तथा तीन बचे तो
पृथिवी पर जानें।

फल—पृथिवी पर अग्निवास सुखकर, आकाश में प्राण-
मात्रा तथा पाताल में धननाश फल देती है।

इग्नादि कार्यों में इसका विचार करना चाहिए। पर
विवाहादि जन्मदिन, यात्रा, पुत्रोत्पत्ति, दुर्गा-सम्बन्धी यज्ञकार्य
में अग्निवास का विचार नहीं करना चाहिए।

घोड़ाश संस्कार

पृथिवी ने निम्न सोलह संस्कार माने हैं—

१. गर्भायान, २. पूंजीवन, ३. सीमन्तोल्यन, ४. जातकम्,

५. नामकरण, ६. निष्कमण, ७. अन्नप्राशन, ८. चूड़ाकरण,
९. यज्ञोपवीत, १०, ११, १२, १३, चतुर्वेद व्रत, १४. समावर्तन,
१५. विवाह, १६. अन्त्येष्टि ।

अब आगे के पृष्ठों में प्रमुख मुहूर्तों का विवेचन दिया जा
रहा है—

१. नवीन वस्त्र धारण मुहूर्त

तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, १२, १५।
वार—बुध, गुरु, शुक्र ।

नक्षत्र—अ०, रो०, पुन०, पु० दू० का०, उ० भा०, ह०,
चि०, स्वा०, वि०, अनु०, रे० ।

टिप्पणी

विवाह, यज्ञ, अनुष्ठान, संवत्सरारंभ, राज्यप्रदत्त
वस्त्रालकार, विशेषोत्सव, तथा आदि में विना मुहूर्त के भी
वस्त्र पहने जा सकते हैं ।

२. रजस्वला स्नान मुहूर्त

तिथि—१ (कृष्णपक्ष) २, ३, ५, ७, १०, १२, १५, दोनों पक्ष ।
वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र ।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०,
अनु०, ध० रे० ।

टिप्पणी

रजस्वला-स्नान तीन दिनों के बाद ही होना चाहिए,
क्योंकि इससे पहले वह शुद्ध नहीं होती ।

१. विवाहे च यज्ञे तथा वस्त्रादी,
गृप्तेणापि दत्त मुदायवच वस्त्रम् ।
इमशाने विशेषोत्सवे आदि पक्षे,
युविष्ठये विनादावयो चारणीयम् ॥ — वृहज्योतिसार
२. प्रथमेऽहीं चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मघातकी ।
तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्वेऽहीं शुद्धति ॥

—मनु०

४६

३. सीमान्तोन्नयन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १० ।

वार—प० म० गु०

नक्षत्र—मृग०, पुन०, पु०, ह०, मू० श० ।

नक्षत्र—१, ३, ५, ७, ८, ११

टिप्पणी

गर्भधारण के छठे या आठवें मास में जब मासाधिपति
निर्वाच हो या अस्त हो, तब यह विविध सुरक्षा-हेतु की जाती है ।
मुहूर्त के दिन सभी चन्द्रबल प्रबल होना आवश्यक है ।

गर्भधारण से प्रत्येक मास के अधिपति निम्न प्रकार होते हैं—

१. गर्भ मास	शुक्र
२. "	मंगल
३. "	गुरु
४. "	सूर्य
५. "	चन्द्र
६. "	शनि
७. "	बुध
८. "	लग्नेश
९. "	चन्द्र
१०. "	सूर्य

४. विष्णु पूजा मुहूर्त

तिथि—२, ७, १२ (शुक्र पक्ष) ।

वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र ।

नक्षत्र—रोहिणी, पूष्य, श्रवण ।

टिप्पणी

गर्भ के आठवें महीने में गर्भरक्षण-हेतु शंख-चक्र-गदा-
पथपारी विष्णु की पूजा कर स्वर्ण-प्रतिमा का दान दिया
जाता है ।

४७

५. विंशू गृह जाते का मुहूर्त

तिथि—१ (कृष्ण पक्ष) २, ३, ५, ७, १०, (शुक्ल पक्ष) १५।

वार—चन्द्र, गुरु, शुक्र।

नक्षत्र—अश्विन, चू, रो०, मृग०, पूर्ण०, पु०, ह०, च०,
स्वा०, वि०, अनु०, श०, घनि०, रै०।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, जब लग्न शुद्ध हो।

टिप्पणी

प्रसव से पूर्व जब स्त्री पतिगृह से पिता के घर जाती है या अकारण ही पीहर जाय, तब इस मुहूर्त का उपयोग आवश्यक है।

भद्रा, व्यतिपात, रिक्ता-तिथि तथा पत्नी के चन्द्रबल को प्रमुखता दें।

६. षष्ठी पूजन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ६, १०, १२ (या जो भी पांचवीं दिन हो)।

वार—रवि, मंगल, शनि को छोड़कर।

टिप्पणी

पुत्र-जन्म के पांचवें दिन को यात्रि को 'जीवन्ती देवी', की पोदशोविचार पूजा की जाती है। इसे षष्ठी पूजन कहते हैं, कुछ विद्वान् षष्ठी देवी को 'कात्यायनी देवी' भी कहते हैं। (षष्ठं कात्यायनीतिथ—मा० पु०) इस पूजन में सूतक-दोष नहीं लगता। कहीं-कहीं १४वें दिन, २१वें दिन या ३१वें दिन भी ऐसी पूजा की जाती है।

७. सूतिका-स्नान (सूर्य-पूजन) मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३, १५।

वार—सूर्य, मंगल, गुरु।

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृग०, उत्तरा ३, ह०, च० स्वा०,
अनु०, रै०।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ६।

टिप्पणी

प्रथम गृहितिका-स्नान पुत्रजन्म के सातवें या नवें दिन होता है।

८. नामकरण संस्कार मुहूर्त

तिथि—१ (कृ.), २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल)।

वार—चै०, शु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अश्विन, रो०, मृ०, पूर्ण०, पु०, उत्तरा ३, ह०, च०,
स्वा०, अनु० श०, घ०; रै०।

लग्न—२, ४, ६, ७, ६।

चण्डा—२, ३, ५, ६।

टिप्पणी

धीवन में ख्याति, यश, सम्मानादि नाम पर ही मिलता है, अतः नाम अत्यन्त सोच-विचारकर रखना चाहिए। विंशू-कुलपूर्ण मातृकुल की तीन पीढ़ी तक का नाम बालक को न दे।

नामकरण जन्म से १०, १२, १६, १८, २०, २२ या ३०वें दिन कन्या का, तथा १, ३, ५, ७, १०, ११ या १३वें दिन पुरुष का करना चाहिए।

प्रथमारात्मतर से विप्र का १० या १२वें दिन, क्षत्रिय का १३वें दिन, वैश्य का १६वें या २०वें दिन तथा शूद्र का ३०वें दिन नामकरण करना चाहिए।

नामकरण पिता, या कुलवृद्ध करे।' उत्तराभिमुख पिता वैठ, उज्ज्यवल वस्त्र पहन कुलदेव का स्मरण कर नामकरण करे।'

मूर्धोग, व्यतिपात, श्राद्ध, ग्रहण तथा निर्बल चन्द्र के दिन नामकरण संस्कार न करे। चर लग्न भी न ले।

यदि तीन कन्याजन्म के बाद पुत्रजन्म या तीन पुत्रजन्म के बाद पांचवां जन्म हो तो "त्रिवर्षीय" शान्त कर देना चाहिए।

१. पिता कुर्यादन्यो वा कुर्वद्॥

२. पुरुष जन्मनि यज्ञे च तथा संक्रमणे रवे।

३. त्रीष्विष दर्शने स्नानं प्रस्तावं नान्यथा निशि॥

—३० च०

—वसिष्ठ

६. जल-पूजन मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, ६, ११, १२, १५ (शुक्र) ;
वार—चं०, बु०, गु० !

नक्षत्र—मृग०, पुन०, पु०, ह०, अनु०, श० ।

टिप्पणी

पुत्रजन्म के एक मास बाद या २६ दिनों बाद जलपूजन होता है : इसमें पुत्र-माता वापी, कूप, तड़ाग पर जाकर जल-पूजन करती है ।

जलपूजन में श्राद्ध-पक्ष-दिन, क्षयमास, चंत्र, पौष, तथा कुण्डोग वा त्याग करना चाहिए ।

१०. दुर्घषपान मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, १२, १५ (शुक्र) ।
वार—चं०, बु०, गु०, श० ।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृग०, ह०, चि०, अनु०, श०, श०, र० ।
ज्ञान—२, ६, ४, ६, ७, ६, १२ ।

टिप्पणी

जन्म के २१वें या ३१वें दिन माता के स्तनपान के अतिरिक्त धात्री स्तनपान करावे या गौदुर्घषपान करावे ।

शंख में गौदुर्घ लेकर भी पान कराया जाता है । इस मुहूर्त में राहुमुख, योगिनीवास एवं रुद्रवास का भी विचार करना चाहिए ।

राहुमुख विचार

वार

सूर्य, गुरु

मंगल

बुध, शनि

चंद्र, शुक्र

राहुमुख-दिशा

पूर्व

पश्चिम

उत्तर

दक्षिण

१. पुनर्वंसु द्वये हस्ते मृग मूलानुराधये ।
अवे गुरौ बुधे चन्द्रे सत्तियौ जलपूजनम् ॥
गुरी शुक्रे प्रतगे चंत्रे पौये वा मण्मासके ।
मासपूर्वों विशदा हे न कुर्यात् जलार्जनम् ॥ — मुहूर्तं गणपति

जिस ओर राहुमुख हो, उस दिशा की ओर वालक का शिर रखकर दुर्घषपान नहीं कराना चाहिए ।

योगिनीवास

तिथि योगिनीवास-दिशा

१,६	पूर्व
२,१०	उत्तर
३,११	अग्नि
४,१२	नैऋत्य
५,१३	बायव्य
६,१४	पश्चिम
७,१५	दक्षिण
८,३०	ईशान

दुर्घषपान के समय योगिनी वाई ओर रहे ।

रुद्रवास

सूर्योदय से १-१ घटी पर्यन्त रुद्र क्रमशः पूर्व, उत्तर, अग्नि, नैऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, बायव्य, ईशान दिशा में रहता है । एक दिन-रात में रुद्रवास-क्रम तीन बार हो जाता है ।
दुर्घषपान-समय रुद्र-सम्मुख न हो ।

११. दोलारोहण (भूला) मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १५ (शु) ।

वार—चं०, बु०, गु० ।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृ०, उत्तरा०, ह०, चि०, अनु०, र० ।

टिप्पणी

जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ या ३२वें दिन प्रथम वार भूले ने मुलाया जाता है ।

१२. निष्कमण (घर से बाहर जाने का) मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, ६, १२, १३, १५ (शु) ।

वार—चं०, बु०, गु०, श० ।

१. दोलौक्तके सुपर्यक जननि द्वा सुवासिनी ।

योगिनीयी हरिर्घट्टिवा स्वापयेत्प्राक् शिरः शिशुम् ॥

नक्षत्र—अश्विनी, मृग, रोहिणी, पुनर्षु, पुष, हस्त, धूम।

लग्न—२, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०।

टिप्पणी

बालक के प्रथम बार घर से बाहर जाने को निष्क्रमण कहते हैं, यह मुहूर्त १२वें दिन या तीसरे महीने होना चाहिए।^१

सर्वप्रथम देवालय जाकर प्रजार्चन करे, ब्राह्मणों से सुभाषीप ले, फिर सर्वप्रथम वच्चे को इत्यकुल के किसी स्वजन के घर ले जावे।

१३. कच्छा बंधन (वस्त्र धारण) मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ११, १३, १५ (शुक्ल पक्ष)।

घार—बुध, गुरु, शुक्र।

* नक्षत्र—अ०, रोहिणी, मृग०, पुनर्षु०, पुष०, मृग०, उत्तरा०, चित०, स्वा० चित०, अनु० रेत०।

टिप्पणी

बालक को सर्वप्रथम काले ढोरे की करघनी पहनावे, एवं फिर पैरों में कच्छा पहनावे।^२

१४. भूम्योपवेशन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १४ (दोनों पक्ष)।

घार—चं०, बुध०, गुरु०, शुक्र०।

नक्षत्र—अ०, रेत०, मृग०, पुष्य०, उत्तरा०, चित०, अनु० अभित०।

लग्न—२, ५, ८, ११।

टिप्पणी

जन्म से पांचवें महीने में, चर लग्न में, मंगल बली में वाराह भगवान् की पूजा करके बालक को सर्वप्रथम जमीन पर बिठाना चाहिए।

बिठाने से पूर्व निम्न मन्त्र का उल्लेख करना चाहिए—

१. तुर्ये निष्क्रमणं मासि वाश्रोक्त दिवसे स्मृतम्।
जन्मतो द्वादशाहे वा कुर्यान्मगलपूर्वकम्॥ —मु० ग०
२. कञ्च्छाबन्धः सिते पक्षे सुदिने करपचके।
धूवक्षेऽविति युग्मेऽशिष्पित् पौष्णेन्दुवासरे॥ ---गणक मंडन

५२

रथीनं वसुधे देवि सदा सर्वं गतं शिशुम्।

आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

जीविका शान

इसी दिन बालक के सामने अस्त्र-शस्त्र, पुस्तक, दबात, लैलानी, गस्त्र, स्वर्ण, चाँदी, मशीन, मोटर, कल-पूजे, विद्युत-उपकरण आदि रखें। बालक सर्वप्रथम जिस वस्तु का स्पर्श करे एही कालान्तर में उसकी जीविका का साधन होगा, ऐसा समझा चाहिए।

१५. अन्नप्राशन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १२, १३, १४, १५ (शुक्ल पक्ष)।

घार—चं०, बुध०, गुरु०, शुक्र०।

नक्षत्र—अ०, रोहिणी, मृग०, पुनर्षु०, उत्तरा०, चित०, स्वा०, अनु०, अ०, घ०, श०, रेत०।

लग्न—२, ३, ४, ५, ७, ८, १०, ११।

हिंणणी

जन्म से ६, ७, ८, १०, या १२वें महीने में बालक को पहली बार अन्न खिलाया जाता है, इसे अन्नप्राशन कहते हैं।

दिन का पूर्वाह्नि, चन्द्रबल जावश्यक है तिथिक्षय एवं राशि वर्जित है।

१६. कण्ठेध मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२।

घार—चं०, बुध०, गुरु०।

नक्षत्र—अश्विनी, मृग०, पुनर्षु०, पुष०, ह०, चित०, अनु०, अ०, रेत०।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ८।

हिंणणी

जन्म से १२ या १२वें दिन अथवा छठे या सातवें मास '१ कण्ठेधन होना चाहिए।

बालक को पूर्वाह्निमुख बिठाकर बालक का पहले दाहिना फिर धार्या, तथा कन्धा का पहले धार्या तथा फिर दाहिना कण्ठेधन किया जाना चाहिए।

धर्णकार द्वारा या सीमार्गवती स्त्री द्वारा सूची से

५३

कर्णचेदन होना चाहिए ।

तीसरे दिन गर्म जल से कर्णधोबन हो ।

१७. कन्या-नासिका-वेद मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, १५ (शुक्ल पक्ष)

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, म०, पुन०, पु०, उ० ३, हस्त०, वि०, स्वा०
अनु०, थ०, घ०, रे० ।

टिप्पणी

कर्णवेद के दिन या मास में कन्या की नासिका का चेदन
होना चाहिए ।

१८. जन्मदिन (वर्ष दिन) मुहूर्त

जिस तिथि को जन्म हो, वर्ष के पश्चात् उसी तिथि को
वर्षमाठ मनानी चाहिए । प्रातः; मंगल स्तान करवाकर सुसज्जित
वस्त्राभूषणों से सुसज्जित कर गणपति कुल-देवता का पूजन करे ।

जन्मदिन में तिल-प्रयोग वायुवर्द्धक है । इसी दिन
आम्रपत्रों की १०८ आहुतियाँ आरोग्यवर्धक एवं आयुवर्धक
कही गई हैं ।

जन्मदिन को हजामत, याचा, स्त्रीसंग, कलह, मांसभक्षण,
हिंसा आदि वर्जित है ।

१९. चूड़ाकर्म (क्षीर कर्म) मुहूर्त

मास—चं०, वैशाख, वायाड (शुक्ल ११ से पूर्व) ।

तिथि—२, ३, ५, ७, ६, १२, १४, १५ (शुक्ल) ।

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

१. सौवर्णी राजपूत्य, राजती विप्रवैश्ययो ।

शूद्रस्य त्वायसी सूची मध्याभाष्टांगुलात्मिका ॥

२. कर्णवेदोवत्तमे शस्त्रं कन्याया द्वाणवैश्वनम् ।

शुस्तराजलपस्वातो पूर्वान्हे शुक्ल पक्षके ॥

३. तिलोदर्ती, तिलस्नायि तिलहोमो तिलप्रदः ।

तिलभुक् तिलवाणी च षट्तिली नावसीदति ॥

—मुहूर्त गणपति

नक्षत्र—आश्विं०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, स्वा०, अनु०, थ०,
८०, रे० ।

टिप्पणी

वर्ष से १, ३, ५, ७, या विषम वर्षों में उत्तरायण सूर्य
में कुलगरमण के अनुसार चौल कर्म होना चाहिए ।

कुण्ड विद्वानों के अनुसार द्वीपर कर्म द्वाहाणों को रविवार,
द्वातिर्यों को मंगल, तथा वैश्यों एवं शूद्रों को शनिवार का प्रयोग
करना चाहिए ।

दधिणायण, देवशयन, निर्वल चन्द्रमासुके अन्त में, संध्या,
रात्रि या गुरु-समय में यह कार्य न करें ।

गाता प्रसूता या रजस्वला हो, तब भी यह कर्म नहीं
करना चाहिए ।

धीण चन्द्र होने पर मृत्यु, धीण मंगल हो तो शस्त्राधाता,
शैति हो तो पंगु, सूर्य हो तो ज्वर होता है ।

२०. अक्षरारंभ मुहूर्त

मास—उत्तरायण रवियुक्त मास ।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२ (शुक्ल) ।

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—आश्विं०, आद्रा०, पुन०, पु०, ह०, वि०, स्वा०, अनु०,
उषे०, रे० ।

लम्ब—२, ३, ६, ६ ।

टिप्पणी

सर्वप्रथम गणपति सरस्वती का पूजन कर गुरु-पूजन करे,
तथा धूताहुति (१०८ वार) दे, फिर पूर्वाभिमुख गुरु के सामने
बैठकर अक्षरारंभ करे ।

विप्र श्वेत वर्ष, लक्ष्मि द्य या द वें वर्ष तथा वैश्य-शूद्र को
द्वैते वर्ष अक्षरारंभ का आदेश है ।

१. पापग्रहाण वारादो, विप्राणा शुभदं रवे ।

द्वातिर्याणा अमासूनोविद् शूद्राणां शनी शुभम् ॥

—ज्योतिनिवन्ध

२१. विद्यारंभ मुहूर्त

मास—उत्तरायण रवि ।

तिथि—२, ३, ५, ७, ९, ११, १२, १५ ।

वार—सूर्य०, गुरु०, शुक्र० ।

नक्षत्र—अश्विं०, मृ०, आ०, पुन०, पु०, इल०, पूर्वो० ३, ह०, च०, अ०, ध०, श० ।

टिप्पणी

भद्रा त्याज्य है ।

सामान्य अक्षर सीखने के पश्चात् कुलविद्या या जीविको-पार्जन हेतु जो सीखा जाता है, उसे विद्यारंभ कहते हैं ।

२२. यज्ञोपवीत मुहूर्त

यज्ञोपवीत संस्कार को कहीं उपनयन, कहीं ब्रतबन्ध और कहीं मौनिजबन्धन के नाम से भी पुकारा जाता है । ब्राह्मण इसीलिए द्विज कहलाने का अधिकारी है कि एक बार वह गर्भजन्म लेता है, एवं दूसरी बार जनेऊ धारण करने पर ब्राह्मण जन्म लेता है ।

यज्ञोपवीत काल

ब्राह्मण ५ या ८वें वर्ष में, क्षत्रिय ६ या ११वें वर्ष में, तथा वैश्य का यज्ञोपवीत संस्कार ८ या १२वें वर्ष में होना चाहिए ।

८ से १६वें वर्ष में ब्राह्मण का, ११ से २२ तक क्षत्रिय का, तथा १२ से २४ वर्ष के बीच वैश्य का यज्ञोपवीत मध्यम फलद होता है ।^१

मास

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन । पर ज्येष्ठ पुत्र के लिए ज्येष्ठ मास त्याज्य, तथा आषाढ़ मास में विप्र-

१. विप्राणां ब्रतबन्धनं निगदितं गर्भजज्ञेवच्छिमे,
वर्षं वाप्यथ पञ्चमे क्षितिभुजां पष्ठे तथैकादशे ।
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद् द्वादशो वत्सरे ।
कालेऽप्य द्विगुणे गते निगदितं गौणं तदाहुंधाः ॥

—मुहूर्तं चिन्तामणि

यज्ञोपवीत वर्ज्य है । जन्ममास भी त्याज्य समझना चाहिए, पर जरुरत पड़ने पर जन्मदिन से दस दिन छोड़कर अन्य दिनों में संस्कार किया जा सकता है । “निर्णय सिन्धु” के अनुसार जन्मपद्म छोड़कर अगले पक्ष में या पिछले पक्ष में यज्ञोपवीत हो सकता है ।

जन्मगासे तिथी भे च विपरीत दले सती ।

क्षार्यं पंगलमित्याहूर्गं भार्गवं शौनकाः ॥

नक्षत्र

हुस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रो०, आ०, स्वा०, पुन०, अ०, ध०, श०, मू०, मृ०, रे०, च०, वन०, तीनों पूर्वी तथा आर्द्रा ।

पक्ष—शुक्ल पक्ष उत्तम तथा कृष्ण पक्ष मध्यम ।

तिथि—२, ३, ५, १०, ११, १२ (शुक्ल), १, २, ३, ४, ५ (कृष्ण) ।

समय—ग्रन्थाह पूर्व ।

दार—द०, दु०, गु०, श० ।

विशेषतः ब्राह्मण गुरु-शुक्र, क्षत्रिय सूर्य-पंगल, वैश्य बुध तथा शूद्र शनिवार को यज्ञोपवीत दें ।

लग्न—२, ३, ५, ६, ६ ।

गुरु-शुक्र स्व या उच्च राशिस्थ, मूलत्रिकोणस्थ या कन्द्रत्रिकोणस्थ हो सो विशेष शुभ माना गया है ।

शाखेश

प्राचेरेदी ब्राह्मण

गुरु

पञ्चवेदी "

शुक्र

सामवेदी "

पंगल

अथववेदी "

बुध

यज्ञोपवीत लग्नकुण्डली में शाखेश का प्रबल होना

अत्यावश्यक है ।

१. जन्ममास निषेषेऽपि दिनादि दश वर्जयेत् ।
आरज्ञ जन्म दिवसाच्छुभाः स्युस्तिथ्योऽपराः ॥

नक्षत्र-वेद

अब सप्त शालाका यंत्र दिया जा रहा है। चक्र में जिस नक्षत्र में यज्ञोपवीत हो, तब ठीक उसके सामने के नक्षत्र पर कोई ग्रह नहीं होना चाहिए, अन्यथा उस नक्षत्र का वेद हो जाता है। उदाहरणार्थ यदि पूर्ण नक्षत्र को यज्ञोपवीत दिया जा रहा हो तो उसके सामने के नक्षत्र ज्येष्ठा पर कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

यज्ञोपवीत-मुहूर्त में नक्षत्र-वेद देखना परमावश्यक है।¹

सप्त शालाका वेद यंत्र

कृ०	रो०	मृग०	आ०	पू०	पू०	इलैम
भ०	म०
अ०	पू०फा०
रे०	उ०फा०
उभा०	ह०
पूभा०	चि०
शत०	स्वा०
ध०	वि०
थ०	अभि०	उषा०	पूषा०	मू०	ज्ये०	अनु०

त्रिवल

मुहूर्त से पूर्व बटुक का त्रिवल देख लेना चाहिए। बालक की जन्मराशि से सूर्य, गुरु एवं चन्द्रवल का विचार परमावश्यक है। इन तीनों में से एक भी हीन बली हो तो बटुक का सर्वनाश हो जाता है।²

रोगपञ्चक

गत तिथि में लग्न मिलाकर ६ से भाग दें, शेष ८ वर्षों तो रोगपञ्चक समझें। यह तिथि त्याज्य है।

१. कर्णवेदे विवाहे च व्रते पूसवने तथा।
प्राशनेचाद्य चूडायां विद्धमूङ्खं परित्यजेत् ॥ —दीपि०
२. वर्णाधिष्ठे वलोपेते उपनीतकिया हिता।
सर्वेषां वा गुरी चन्द्रे सूर्ये च बलशातिनी ॥

रोगवाण

पिंती राशि के ६, १८, २७वें अंश पर सूर्य हो तो रोगवाण होता है, अतः वह दिन भी त्याज्य समझें।

सूर्य-चन्द्र गुरु शुद्ध

दर का सूर्य	दोनों का चंद्र	कल्पा का गुरु	फल
३, ६, १०, ११	१, २, ३, ५, ६,	२, ५, ७, ८, ११	शुभ
	७, ९, १०, ११,		
१, २, ५, ७, ८	अल्ल या क्षीण	१, ३, ६, १०	नम (पूज्य स्थान)
४, ८, १२	४, ८, १२	४, ८, १२	बग्नभ

यज्ञोपवीत एवं विवाह-मुहूर्त में शुभ सूर्य-चन्द्र-गुरु ही लेने चाहिए, सम ग्रह हो तो पूजा करने से दोष मिट जाता है, पर अशुभ ग्रहों का समावेश तो सर्वथा वर्ज्य है।

अपवाद

(१) गुरु-सूर्य-चन्द्र की आत्माण, हुगुनी, धन्त्रिय तिगुनी, वैश्य चौगुनी पूजा करे, तो गुरु-घंट-सूर्य-दोष मिट जाता है।³

(२) कुछ मतों के अनुसार बटुक १४ साल से बड़ा एवं कल्पा १५ साल में बड़ी हो जाय, तो ४, ८, ८, १२वाँ गुरुदोष भी नहीं लगता। ही, गुरु पूजा हुगुनी आवश्यक है।⁴

(३) यदि सूर्य मेष प्राशि पर तथा गुरु कर्क राशि का हो, तब ४, ८, १२वें होने पर भी इनका दोष नहीं रहता।⁵

(४) चैत्र भास में गुरु निर्वल होने पर भी उपनयन-तैस्कार में दोष नहीं लगता। इसमें सूर्य मीन राशिगत ही हो।

१. सक्ष सपर्या द्विगुणातिदुर्दशस्ता गुरावादि भुवामपादी ।
तथा नृपाणां त्रिगुणा विशां या चतुर्गुणात्मीय वलिक्षियाही ।
—ज्योतिषिदाभरण

२. द्रुते जन्मत्रिकारिस्थो जीवोऽपिष्टोऽचन्नात्यकृत् ।
शुभोऽतिकाले तु युष्टिव्ययस्थो द्विगुणार्चनात् ॥ —निर्णय सिन्धु

३. द्वितीय पुत्रांकगत प्रभाकर-त्रयोदशाहात्परतः शुभप्रदः ॥

४. गोचराष्ट्रक वर्गम्भिर्य यदि शुद्धिनं लभ्यते ।
तदोपनयनं कार्यं चैत्रे मीनगते रवौ ॥

(५) सिंह और मकर राशि पर गुरु में उपनयन सर्वथा त्यज्य है ।

(६) माता रजस्वला होने पर पुत्र का यज्ञोपवीत सर्वथा वज्र्य है ।

उपनयनकर्ता

उपनयन माता-पिता अपने हाथों से ही दें, उनके न होने पर भाई-भीजाई, दादा-दादी या चाचा-चाची अथवा पितृकुल का कोई सदस्य न हो ।

उपनयन में निषेध

कृष्णपथ की वटी से अमावस्या तक तिथि, प्रदोष, अनध्याय, शनिवार दोपहर के बाद का समय, तथा गलग्रह-समय सर्वथा त्यज्य करे ।

२३. वेदारंभ मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२ ।

वार—दु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अदिव०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा० अनु०, श०, ध०, रे० ।

लग्न—३, ६, ८, १२ ।

२४. विवाह-मुहूर्त

जीवन का सर्वश्रेष्ठ संबंध विवाह है, जिसमें पति-पत्नी दोनों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। चाहे कितने ही धन-धान्य, गाय, घोड़े, राज्यश्री आदि से सम्पन्न कुल हो, फिर भी निम्न दशकुलों का त्याग कर देना चाहिए—

हीनक्रियं निष्पुरुणं निश्छन्दो रोमशार्शसम् ।

क्षयामया व्यपस्मारिश्वितू कुष्ठिं कुलानिच ॥ मनु०

अर्थात्—सत्काया से हीन, सत्पुरुषों से हीन, वेदविहीन, शरीर पर लम्बे-लम्बे रोम रखने वाला, बवासीर, क्षय, दमा,

१. पिता पितामहो भ्राता ज्ञातयो गौत्रजाग्रजा ।

उपनयनेऽधिकारी स्यात् पूर्वाभावे परः परः ॥ — पीयुषधारा

२. प्रत्युद्धाहो नैव कार्यो नैकस्मै दुहितृद्वयम् । — ज्योतिर्निबन्ध

३. नैवेक जन्ययोः पुंसोरेक जन्येतु कन्यके । — नारद पुराण

६०

लाली, बामाशय, मिरयी, इवेत कुष्ठ और गलित कुष्ठयुक्त पूजा की कन्या या वर स्वीकार नहीं करना चाहिए ।

पत्नी नैरी हो ?

अव्यंगांगों सौम्यनाम्नी हंसवारण गामिनीय् ।

तनुलोककेश दशनां मृदृंगी मुद्दहेत्स्वयम् ॥ मनु०

अर्थात्—जिसके सरल मृदु सौम्य अंग हों, जिसका नाम मृद्वर हो, हस या हथिनी के समान चाल हो, सूक्ष्म भूरे रोम हों, वाल और दाँत चमकीले हों, तथा कोमलांगी सलज्ज कन्या के साथ विवाह करना शुभ है ।

निषेध

एक ही वर को दो कन्याएँ न दें, और न दो सहोदर भाइयों को सहोदरा कन्याएँ दें तथा द्रव्य लेकर कन्या देना भी पापवर्धक है ।

विवाह-समय

आष्टवर्षा भवेद् गीरी नववर्षा च रोहिणी ।

धृष्णवर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥

माता चंद्र पिता तस्या ज्येष्ठो भ्राता तथैव च ।

अपस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्या रजस्वलाम् । —मनु०

अर्थात्—जड़की आठ वर्ष में गोरी, नवे वर्ष में रोहिणी तथा दशवें वर्ष में कन्या कहलाती है। माता-पिता तथा बड़ा भाई यदि रजस्वला कन्या देखता है, तो वे नरक में पड़ते हैं ।

अष्टकूट

वरकन्या के विवाह-पूर्व आठ बातों पर विचार किया जाता है । ये अष्टकूट कहलाते हैं—

घर्णं वशं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।

गण मीत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणविका ॥—मु० चि०

अर्थात्—(१) वर्ण, (२) वश, (३) तारा, (४) योनि,

(५) पह-मंत्री, (६) गण-मंत्री, (७) भकूट तथा, (८) नाडी, चौआठ अष्टकूट कहलाते हैं ।

अल्पेनापि हि शुरुकेत पिता कन्या ददाति य ।

रौरत्वै द्विवर्पाणि पुरोषं मूरवशनुते ॥—आ० स्म०

६१

१. वर्णविचार

राशि

४, ८, १२
१, ५, ६
२, ६, १०
३, ७, ११

अब वर्णगुण-चक्र पर ध्यान दें—

वर्ण

ब्राह्मण
क्षत्रिय
वैश्य
शूद्र

वर

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्चस्तरीय या अभिन्न होने पर एक गुण मिलता है।

वैश्य

वैश्य

राशि

चतुष्पद १, २, घनु का उत्तरार्द्ध, मकर का पूर्वार्द्ध
मानव ३, ६, ७, घनु का पूर्वार्द्ध, ११
जलचर ४, मकर का उत्तरार्द्ध, १२
वनचर ५

इनमें सर्वथेष्ठ मानव, फिर जलचर, फिर वनचर, फिर चतुष्पद एवं सबसे बधम कीट है।

इसी प्रकार अन्य अष्टकूटों के बारे में भी विचार करें। इनमें ग्रह-मैत्री (पंचधा-मैत्री) सबसे प्रमुख है—

वर्णवैर योनिवैर गणवैरं नृदूरकम् ।

दुष्टकूट भवं सर्वं ग्रह-मैत्रेण नश्यति ॥

अर्थात्—वर्णवैर, योनिवैर, गणवैर, दुष्टकूट आदि दोष तब नहीं लगता, जब कि ग्रह-मैत्री हो।

ग्रह आपस में कौन किसका शुभ है, कौन किस ग्रह का

६२

मित्र है, और कौन-कौन ग्रह परस्पर न शत्रु है और न मित्र, इन्हें आप निम्नांकित तालिका से समझने का प्रयास करें।

ग्रह-मैत्रीचक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चंद्र	सूर्य	सूर्य	सूर्य	बुध	बुध	बुध
	मंगल	बुध	चंद्र	शुक्र	चंद्र	शनि	शुक्र
	गुरु	गुरु	गुरु	मंगल	मंगल	गुरु	गुरु

ग्रह	बुध	मंगल	शुक्र	शनि	गुरु	शुक्र	शनि
	मं०, ग०	श०, श०	श०	ग०	मं०	ग०	ग०
			शनि	ग०	शनि	ग०	ग०

शनि	शनि	बुध	चंद्र	बुध	सूर्य	सूर्य	चंद्र
	शुक्र			शुक्र	चंद्र	चंद्र	मंगल

गण-विचार

वर-कन्या का एक ही गण हो तो विवाह उत्तम, देव मानव ही तो उत्तम, देव-राक्षस हो तो मध्यम एवं मानव-राक्षस ही तो अधम समझता चाहिए।

गण

नक्षत्र

देवगण—ग०, श्ल०, म०, चि०, वि०, ज्य०, मू०, घ० श०।

मनुष्यगण—ग०, रो०, आ०, "पूका०," पूषा०, उफा०, उषा०।

राक्षणगण—ग०, मृग०, पुन०, पू०, ह०, स्वा०, अनु०, ध०, ऐ०।

ये गण मात्र विवाह हेतु ही वर-कन्या के नक्षत्रों से समझेने चाहिए। पर ग्रह-मित्रता मिल जाने पर कन्या के राक्षणगण का बोध नहीं व्यापता।

१. सुष्टुकूटे योनि शुद्धि ग्रह सत्यं गुणत्रयम् ।

स्त्रेयो, तम सद्भावे कन्या रक्षो गणा शुणा ॥

—ज्यो० नि०

राशि दोषः

(१) एक ही राशि (वर-कन्या की) सर्वोकृष्ट कहलाती है, पर वर-कन्या दोनों के नक्षत्र-वरण एक ही नहीं होने चाहिए।^३

द्विद्वादशः

(१) जब वर की राशि से कन्या की राशि वारहवीं या दूसरी हो तो 'द्विद्वादश' योग होता है, जो कि सर्वथा त्याज्य है।

(२) केवल सिंह कन्या राशि के दम्पति हों तो द्विद्वादश योग नहीं लगता, एवं शुभ होता है—

समं भं द्विद्वादशके द्वितीय ।
सहितं श्रेष्ठं त्रिया युधरि ॥

(३) वर की राशि से कन्या की राशि ग्यारहवीं या तीसरी हो तो श्रेष्ठ होती है, इसे "त्रिरेकादश" योग कहते हैं—

एकराशी महाप्रीतिश्वतुर्थं दशमे सुखम् ।
तृतीयेऽकादशे वित्तं सुप्रजा सम सप्तके ॥ —ज्यो० नि०

चतुर्थं दशमः

इसमें दोनों की राशियाँ परस्पर चतुर्थ-दशम होती हैं, जो कि शुभ हैं। पर कुछ विद्वानों के अनुसार तुला मकर, वृष्टि सिंह, मेष-कर्क, मिथुन-मीन, धनु-कन्या, तथा कुम्भ वृद्धिक 'चतुर्थं दशमं' दारिद्र्य सूचक हैं।

नवम-पंचमः

यदि वर राशि कन्या राशि से परस्पर नवम-पंचम हो तो सन्तान-हानि होती है।

षष्ठ्यकः

वर-कन्या की राशियाँ परस्पर छठे-आठवें हो तो षष्ठ्यक-योग होता है, जो कि दुर्भाग्यसूचक है।

१. गणदाष्ठो योनि दोषो वर्णदोषः षष्ठ्यकम् ।

चत्वारि नैव दुर्धन्ति राशि मैत्री यदा भवेत् ॥

२. एकराशी शुभोद्वाह एकमांशे मृतिप्रदः ।

—वृहज्ज्योतिषसार
—मातृष्ठवल्लभ

६४

सु०-१५४

पर गतान्तर से निम्न षष्ठ्यक शुभ एवं अशुभ है—

शुभं	अशुभं
वृष-वृद्धिक	वृष-धनु
मिथुन-मकर	कर्क-कुम्भ
मिह-मीन	कन्या-मेष
तुला-वृष	वृद्धिक-मिथुन
धनु-कर्क	मकर-सिंह
कुम्भ-कन्या	मीन-तुला

सम सप्तकः

दोनों वर-कन्या परस्पर यदि समस्पतक हों यानि पति की राशि से कन्या की राशि सातवीं हो तो वह समस्पतक कहलाती है जो कि सर्वश्रेष्ठ कहलाती है। पर कर्क-मकर तथा सिंह-कुम्भ का समस्पतक विष के समान स्याग देना चाहिए।^१ नाड़ी।

आद्य नाड़ी—अ०, आ०, पुन०, उफा०, ह०, ज्ये०, मू०, श० पूभा० ।

मध्य-भ०, म०, पु०, फा०, चि०, अनु०, पू०, षा०, ष०, ड०, भा० ।

अन्त्य-ह०रो०, इले० म०, स्वा०, वि०, उ० षा०, श्र०, रे० ।

(१) एक ही नाड़ी पति-पत्नी की हो तो वह अशुभ है।

(२) दोनों की आधी नाड़ी हो तो विवाह के पश्चात् विरोध, दोनों की मध्य नाड़ी हो तो विवाह-पश्चात् मृत्यु तथा दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य-दुःख भोगना पड़ता है।

षष्ठ्याद

(१) नाड़ी-दोष में केवल मध्य नाड़ी एकता ही त्याज्य है।^२

(२) यदि राशि एक हो पर नक्षत्रभेद हो, या नक्षत्र एक हो

मकरे कर्केते चंच कुम्भे सिंहे तथैव च ।

परस्पर सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत् ॥

निधनं मध्यनाहयां च दम्पत्यीर्नेव पाश्वयो ।

—ज्योतिर्निबन्ध
—ज्योतिःप्रकाश
६५

- पर राशि भेद हो तो नाड़ी-दोष नहीं लगत।
- (३) कृ० रो०, मृग०, आ०, पुर्य०, ज्ये०, श०, उ०, भौर रेवती नक्षत्रों में से ही वर-वधु के नक्षत्र हों नाड़ी-दोष नहीं लगत।
 - (४) क्षत्रियकुल के लिए नाड़ी-दोष देखना आवश्यक नहीं।
 - (५) यदि वर-कन्या की राशि का स्वामी गुरु, गुरु या इसमें से कोई ग्रह हो तो नाड़ी-दोष नहीं लगत।
 - (६) नाड़ी-दोष होने पर ब्रह्ममृत्युज्जय जप करने से दान्त हो जाता है।
 - (७) ब्राह्मणों को नाड़ी-दोष, क्षत्रियों को वर्ण-विचार, दैवों को गण-विचार तथा शूद्रों को योनि-शुद्धि-विचार विद्ये तथा विचारणीय है।

गुण विचार

वर्ण अष्टकूट आदि की गणनानुसार कुल गुणों की संख्या ३६ होती है। वर-कन्या के गुणों या गणों की संख्या २० तक सामान्य, २१ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ऊपर श्रेष्ठतम् होता है। ज्योतिर्निवन्ध में लिखा है :

मुण्ड पाडशभिनन्द्य मध्यमा विशतिस्तथा।

श्रेष्ठं विशद्गुणं यावत्परतस्तुतमोत्तमाम् ॥

पर मेलापक में १८ गुणों से अधिक की प्राप्ति उचित एवं ग्राम समझी गई है।

१. रोहिण्यार्दा मृगेन्द्राग्निपुष्य श्वशण पौष्णभम् ।

अहिर्बुध्यक्षंमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते ॥

२. दोषानुपत्तये नाड्या मृत्युज्जय जपादिकम् ।

विधाय ब्राह्मणांश्चैव तप्येत् कांचनादिना ॥

३. नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये ।

गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान् ॥

४. एकैकं वृद्धितो ज्येष्ठा वर्णदीनां गुणाः क्रमात् ।

विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके ॥ —मुहूर्तं गणपति

३० सा

६६

मंगल विचार

वर-वधु मेलापक में मंगल विचार सर्वोपरि महत्व रखता है। यदि (वर या कन्या की) जन्मकुण्डली अथवा चन्द्रकुण्डली के लगनक्षुर्ण सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में मंगल स्थित हो तो वह विग्रामार्गी होता है—

तथा व्यये च पाताले, जामिने चाष्टमे कुर्जे ।
कन्या भर्तु विनाशाय, भर्ता कन्या विनाशत् ॥

—मुहूर्तं संग्रह

लग्नाद्विदोर्व यदि जन्मकाले महीनुतो वा जनि राहु केतवः ।
व्याष्टतुर्म प्रथमे कलत्रे कन्या वरं हन्ति वरदत्त कन्याम् ॥

उपवाद

जिन रिप्तियाँ होने पर मंगल-दोष नहीं रहता—

(१) यदि १, ४, ७, ६, १२वें भाव में शनि हो तो उसका मंगल-भीषण शान्त हो जाता है।

(२) बलदान गुरु शुक्ल-ज्येष्ठा वा सप्तम भाव में हो तो भीम-दोष नहीं रहता।

(३) शनि भीमोऽथवा करिचत्पापो वा तादूषो भवेत् ।
तैष्वैव भवनेष्वैव भीम दोष विनाशक्तु ॥

यदि कन्या की कुण्डली में जहां मंगल हो, वर की कुण्डली में वैष्णोर्कोई प्रबल पापग्रह हो तो भीम-दोष नहीं रहता। इसी प्रकार वर से वधु के बारे में भी समझे।

(४) वृक्षी, नीष, अस्त, वयवा शत्रुघ्नेत्री मंगल १, ४, ७, ८, १२वें भाव में हो तब भी मंगल दोष नहीं रहता।

(५) राशि मैत्री यदायाति गणीयं वा यदा भवेत् ।

जयवा गुण बाहुल्ये भीम दोषो न विद्यते ॥

अस्ति राशि मैत्री हो, गण भी एक हो या तीस से अधिक गुण मिलते हों, तो भीम-दोष नहीं रहता।

(६) यदि वर की कुण्डली में छठे स्थान में मंगल, सातवें भाव में राहु तथा आठवें भाव में शनि हो तो, कन्या की

१. योग्यते च यदा सौरिलोने वा हिंसुके तथा ।

२. वैष्णो द्वादशी वैष्व भीम दोषो न विद्यते ॥ —मुहूर्तं संग्रह
६१

- कुण्डली में मंगल दोष रहने पर भी उसका प्रभाव रंचमात्र भी दूषित नहीं होता ।^१
- (७) वर कन्या दोनों की कुण्डलियों में मंगल-दोष हो तो दोनों में से किसी को मंगल-दोष नहीं रहता ।^१
- (८) मेष राशि का मंगल लग्न में, या वृश्चिक राशि का मंगल चतुर्थ भाव में, या मकर राशि का सातवें या कक्ष राशि का आठवें, या घनु राशि का मंगल बारहवें भाव में हो तो मंगल-दोष नहीं लगता ।^१
- (९) निम्न योग होने पर भी मंगल दोष नहीं रहता ।^१
- (क) दूसरे भाव में चन्द्र शुक्र हो ।
- (ख) मंगल पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो, या साथ में हो ।
- (ग) केन्द्र भाव (१, ४, ७, १०) में राहु हो ।
- (घ) मंगल तथा राहु कहीं पर भी साथ में बैठे हों ।
- (१०) केन्द्र में चन्द्रमा या चन्द्र-मंगल युति हो तो भी भोम-दोष नहीं रहता ।
- (११) केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ८, ११वें भाव में पाप-ग्रह हों, तब भी मंगल दोष नहीं लगता ।
अतः मंगल विचार अत्यन्त सूक्ष्मता एवं सावधानीपूर्वक करना चाहिये ।

विष कन्या

(१) २, ७, १२ तिथि हो, रवि, शनि या मंगलवार हो, तथा कृतिका, आश्लेषा या शतभिषा नक्षत्र हो, ऐसे योग में जन्म लेनेवाली कन्या विषकन्या कहलाती है ।

१. घटे च भवते भोमोराहुः सप्तम सम्भव ।
अष्टमे च यदा सौरि तस्या भार्या न जीवति ॥—ज्योतिष सार
२. “कजे वा तादृशीह्यो” —मुहूर्तं गणपति
३. अजे लने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुने ।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टो भौम दोषो न विद्यते ॥ —मु० पा०
४. न मंगलो चन्द्र भुगु द्वितीये न मंगली पश्यति यस्य जीव ।
न मंगली केन्द्रगते च राहुर्तं मंगली मंगल राहु योगी ॥ —मुहूर्तं दीपक

६५

भद्रा तिथिर्याश्लेषा शतभिषा कृतिका तथा ।

मंदार रविवारेषु विषकन्या प्रजायते ॥ —ज्यो० नि०

(२) ये शुभ ग्रह लग्न में, एक पापग्रह दशम भाव में, तथा दो घण्टमह घण्टभाव में हों तो विषकन्या कहलाती है ।

(३) लग्न में एक क्रूर ग्रह व एक सौम्यग्रह हो ।

परिहार— १. लग्न या चन्द्र से सप्तम भाव का स्वामी शुभग्रह हो तो विषकन्या-दोष मिट जाता है ।

२. याविष्यादि त्रिं कृत्वा वैष्ठव्र विनिवृत्तये ।

अद्वत्याभिदि रुद्राह्म दद्यात्मा विरजीवते ॥

२५. विवाहे ग्रहाणं रेखाप्रद स्थान

नीते विवाहरेखा साधन या विश्वा साधन दिया जा रहा है—“लग्न शुभं विवाहे स्वाद् दशविषोप्तिकाविकम्” के अनुसार बीस रेखा मिलनी शुभ कहलाती है—

रेखा प्रद स्थान

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	वृद्ध	शुक्र	शनि	रात्रि	ग्रह
३	२	३	१	१	१	३	३	३
६	३	६	२	२	६	६	६	८
८	११	११	३	३	४	८	८	११
११			४	४	५	११	११	
			५	५	६			
			६	६	१०			
			८	८	११			
			१०	१०				
			११	११				
३॥	५	११॥	२॥	३॥	२॥	१॥	१॥	१॥ वलम्

२६. वारदान मुहूर्त

वर-कन्या विवाह से पूर्व वर के पिता तथा कन्या के पिता सागर्दि के लिए जा मिलते हैं, उसे ‘वारदान’ कहते हैं—
तिथि— २, ३, ५, ७, ८, ९, १०, १२, १४, १५ (शुक्ला) ।

वर— चंद्र, बुध, शुक्र ।

६६

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, उत्तरा ३, ह०; चि०, स्वा०, अनु०,
श० घ० रे०।

२७. वर-तिलक-मुहूर्त

जब सगाई निश्चित हो जाती है, तब कन्या पक्ष के लोग
वर के तिलक करने को जाते हैं, तथा भेट देते हैं—
तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

वार—चं०, ब०, म०, शु०।

नक्षत्र—अ०, कृ०, रो०, पूर्वां० ३, उत्तरा ३।

भद्रा, गण्डान्त, गुरु-शुक्र अस्ति, निर्वल चन्द्र-त्याज्य है।

२८. विवाह-दोष

विवाह मुहूर्त निकालने के लिए निम्नलिखित इकीस
दोष विचारणीय हैं—

१. उदयास्त	२. पंचाग शुद्धि	३. मासान्त
४. षष्ठ वर्ग	५. अष्टमस्थ भौम	६. त्रिविशगण्डान्त
७. षष्ठभावस्थ शुक्र	८. कर्तरी दोष	९. चंद्र दोष
१०. विष घटी	११. मुहूर्त दोष	१२. वार दोष
१३. ग्रहण	१४. विढ घह	१५. पाप नक्षत्र
१६. नवाश दोष	१७. पातक	१८. वैधृति
१९. लक्षा	२०. वैधृत	२१. व्यतिपात

२९. विवाह योग-तथ्य

जीवे विवाह-सम्बन्धी मुहूर्त स्पष्ट करने से पूर्व जानकारी
स्पष्ट की जा रही है—

१. भाई के विवाह के छः पहिनों के भीतर बहिन या
बहिन के विवाह के छः महिनों के भीतर भाई का विवाह निषेध
है। पर संवल् बदल जाय, और इस छीच छः मास से भी कम
समय हुआ हो तो भी विवाह हो सकता है।^१

२. दो भाई या दो बहिनों का एक-पाथ विवाह भी
शास्त्र के विरुद्ध है।^२ पर कुछ विद्वानों के अनुसार दो अलग-

१. न सहज सुतोदाहोऽव्याधे शुभे। —मु० चि०

२. एक मातृजयोरेक वस्तरे पुरुष स्त्रियो। —मु० सं० द०

अलग-चरी में मण्डप बनाकर सगे भाई-बहिनों या भाइयों का
विवाह किया जा सकता है।

बाधान के पश्चात्, गत तीन पीढ़ी तक के यदि किसी
सदस्य भी मृत्यु हो जाय, तो एक मास के पश्चात् विवाह-
शास्त्रसम्मत है।^३ यदि कन्या या वर के माता-पिता, वड़े
भाईया वड़ी बहिन की मृत्यु हो जाय, तो एक वर्ष के बाद
विवाह अनित है।^४ 'नारद संहिता' के अनुसार पिता की मृत्यु
के बाद १ वर्ष, माता की मृत्यु के बाद ६ मास, स्त्री की मृत्यु
के बाद तीन मास, पुत्र की मृत्यु के बाद दो मास, सम्बन्धी की
मृत्यु के बाद एक महीना छोड़कर विवाह किया जा सकता है।

दण्डिणायण, देवशयन काल, क्षयमास अधिक मास, गुरु-
शुक्रास्त्र, शार्ण वृद्धि तिथि, सिंह मकरस्थ गुरु, श्राद्ध, व्यतिपात
आदि काल में विवाह-मुहूर्त निषेध है।

३०. गोधूलि वेला

मुहूर्त विनामणि के अनुसार गोधूलि-वेला की महत्ता
सर्वपरि है, जाहे नक्षत्र, तिथि, करण, वार, नवांश, योग
अष्टमस्थान दोष या जामिन-दोष भी हो, पर गोधूलि वेला में
इनका दोष लग्त हो जाता है, लग्नशुद्धि भी आवश्यक
नहीं है, और न मुहूर्त शुद्धि की—

नास्य गुरुं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता,
नी वारो न च लवविधिनो मुहूर्तस्य चर्चा।

नी वा योगो न मृतिभवनं नैव जामिन दोषो,
गोधूलि: सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता ॥

गोधूलि वेला कब मानी जाय, इसके लिए उल्लेख है—

१. वधा वरस्पापि कुलेभि पुरुषं नाशं व्रजेत्कश्चन निश्चयोत्तरम्
मासीत्तरं तत्र विवाह इष्वते शान्त्याथवा सूतक निर्गमेऽपरै ॥

—मुहूर्त विनामणि

२. वाग्दानानन्तरं यत्र कुलयोः यस्य चिन्मृतिः ।

तदा संवत्सरादूर्ध्वं विवाहः शुभदो भवेत् ॥

—निर्णय सिन्धु

वदा नास्तंगतो भानुर्गोधूल्यां पूरितं न भः ।
सर्वं मंगल कायेषु गोधूलिद्वच प्रशस्यते ॥
वधर्तिसात्पूर्वमप्यूच्चे घटिकार्वन्तु गोरजः ।
सःकालो मंगले श्रेयान् विलाहादो शुभप्रदः ॥
निदावे त्वर्धंविम्बेऽज्ञे पिण्डीभूते हिमागमे ।
मेघकाले तु पूर्णस्ते प्रौढतं गोधूलिकं शुभम् ॥

अर्थात् सूर्यास्त न हुआ हो, तथा लौटती हुई गायों के खुर से उड़ी रज से गगन आच्छादित हो रहा हो। वह मंगलमय गोधूलि वेला है। सूर्य के विम्ब के बावे भाग को जब द्वितीय छिपा लेता है, उससे पूर्व के १२ मिनट गोधूलि वेला कही जाती है। कुछ विद्वान् सूर्यास्त पूर्व १२ मिनट और सूर्यास्त के बाद के १२ मिनट इस प्रकार इन २४ मिनटों को गोधूलि-वेला कहते हैं।

वर्जित

१. जब गोधूलि लग्न से दर्वे मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र में कोई ग्रह हो, और १, ६ या दर्वे चन्द्र हो तो वह गोधूलि समय दोषयुक्त होता है।

२. गोधूलि लग्न से १,६ दर्वे चन्द्र होने से कन्या के लिए तथा, १,७,८ वें मंगल होने से धर के लिए प्राणधातक होता है।

३. यदि चन्द्र, मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र में से कोई गोधूलि लग्न से ६, दर्वे हो अथवा लग्न में चन्द्र हो तो गोधूलि-लग्न वर्जित है।

४. कुलिक, क्रान्ति साम्य या १,६, दर्वे चन्द्र हो गोधूलि-लग्न दूषित हो जाता है।

१. अष्टमे जीव भोगी च बुधद्वच भार्गवोष्टमे ।
लग्ने षष्ठाष्टगश्चन्द्रो गोधूली नाशकस्तथा ॥
२. पष्टेष्टमे मूर्तिगते शशांके, गोधूलिके मृत्युमुर्तिति कन्या ।
कुञ्जेष्टमे मूर्तिगतेऽयवास्ते वरस्य नाशं प्रवदन्ति गर्गः ॥
३. षष्ठाष्टमे चन्द्रज चन्द्र जीवे क्षोणीयुते वा भूगुनन्दने वा ।
मूर्ती च चन्द्रे नियमेन मृत्युर्गो लिङ्कं स्पादित वर्जनीयम् ॥
४. कुलिकं क्रान्ति साम्यं च लग्ने षष्ठाष्टमे शशि ।
तदा गोधूलिकस्त्याज्य पंच दीर्घेव दूषितः ॥

७२

५. पंचम श्वाव या नवमभाव में शनि हो ।

६. शनिवार की गोधूलि-वेला सूर्यास्त के बाद ही शुभ मानी है।

७. गुरुवार की सूर्यास्त के बाद को गोधूलि-वेला त्याज्य है।

८. सूर्योदयकालीन लग्न से सातवाँ लग्न गोधूलि-लग्न कहलाता है।

३१. पुनर्विवाह मुहूर्त

मास- ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्ष, पौष, फाल्गुन, वैशाख ।
तिथि- २, ३, ४, ५, ६, १०, १२, १३ (शुक्लपक्ष) ।

वार- सू०, बु० श० ।

नक्षत्र- ऊ० कृ०, आ०, पुन०, पु०, इल०, पूर्वा० ३, चि०, रै० ।
टिप्पणी

निम्न स्तर परी द्विया पति की मृत्यु के बाद दूसरा पति दूनलेती है, तथा उसे विवाह कर लेती है, इसे पुनर्विवाह कहते हैं।

गुरु, शुक्रात, तथा धोण चन्द्रमा त्याज्य करे ।

३२. विवाह मुहूर्त

मास- दैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, पौष, माघ, फाल्गुन ।

तिथि- १ (कृ०) २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १४, (श०) ।

वार- सभी वार ।

नक्षत्र- रो०, झ०, म०, उ० ३, ह०, स्वा०, अन०, रै० ।

टिप्पणी

गुरु, शुक्रात, तिहस्य गुरु, भद्रा, चन्द्रक्षय वर्जित है ।

३३. वैदिका-मुहूर्त

तिथि- २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, २१, २२, १४, १५ (श०)

वार- सभी ।

नक्षत्र- कृ०, रो०, झ०, आ०, पु०, पूर्वा० ३, श०, अन०, ध०, रै० ।

७३

टिप्पणी

विवाह में यजकार्य-हेतु वेदी निर्माण एक आवश्यक कृत्य है, यह ४ हाथ परिमित लम्बी-चौड़ी एक हाथ ऊंची और क्रमशः पूर्व की ओर ढालू हो। वेदी के चारों ओर ४ स्तम्भ (या शूटियाँ) रोपे जाते हैं। इन स्तंभों में प्रथम स्तंभ निम्न सूर्य राशियों में संबंधित दिशा में रोपे।^१

सूर्य राशि	दिशा
२, ३, ४	अग्निकोण
५, ६, ७	ईशान कोण
८, ९, १०	वाष्प कोण
११, १२, १	नैऋत्यकोण

३४. वधूप्रवेष-मुहूर्त

मास—वैशाख, ज्येष्ठ, वाषाढ़, वाश्वन, कार्तिक, मार्गशीर्ष फाल्गुन।

तिथि—२, ३, ४, ५, ६, ८, १०, ११, १३, १५ (शुक्र)।

दार—चं०, बु०, गु० शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मू०, तु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, ज्य०, श्र०, श०, रे०।

लग्न—स्तिर।

टिप्पणी

विवाह के बाद प्रथम बार पतिगृह जाने को वधूप्रवेश या वधू-यागमन कहा जाता है। विवाह तिथि, भद्रा, व्यतिपात, गुरु शुक्रास्त, कीण चन्द्र वर्जित है।

विषम दिनों में, विषम मासों में या विषम वर्षों में वधू-प्रवेश शुभ है।

सर्वथा नवीन गृह में वधूप्रवेश त्वाज्य है।

३५. प्रथम पाक कर्म मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ६, ८, १२, १३, १५ (शु)।

दार—चं०, बु०, गु०, शु० श०।

- मीन सरोवर सिंह, घर वृद्धे वदी थाय।
तीन तीन मास गमन करे सर्प करे सिणगार॥

नक्षत्र-कृ०, रो०, मू०, पू० ३, वि० अनु०, श०, श०, रे०।
लग्न-२, ५, ८, १०, ११।

टिप्पणी

सुखल में आने के बाद वधू को प्रथम बार पाक कार्य दिया जाना ही उपत्त-मुहूर्त कहलाता है।

३६. प्रथम युवति संभोग मुहूर्त
तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ७, ६, १३, १५ (शु)।

दार—चं० बु०, गु० शु० श०।

नक्षत्र-अ०, रो०, मू०, पु०, पु०, ह०, अनु०, श०, श०, रे०।

लग्न-१, ५, ७, ६, ११।

चन्द्र-प्रवल हो।

३७. वस्त्र-निर्माण मुहूर्त

तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५।

दार—सू०, चं०, म०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र-गृ०, रो०, उ० ३, चि०, अ०, रे०।^१

टिप्पणी

हाथ करणा, मिल, कॉटन मिल छपाई आदि वस्त्र सजा या वस्त्र निर्माण हेतु उपर्युक्त मुहूर्त का उपयोग करना चाहिए।

३८. वस्त्र धोने की दुकान मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १३, (दोनों पक्ष)

दार—चं०, म०, गु०, शु०।

नक्षत्र-अ०, पु०, पू०, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०।

टिप्पणी

धोबी की दुकान का मुहूर्त भी यह है।

३९. चमड़ का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ६, १०, १२, १५ (दोनों पक्ष)।

दार—सू०, श०।

१. ऐती रोहिणी चित्रानुराधामृगमोत्तरे।

जनि हिला मुविंदानां तन्तुभिः पट्ट साधनम् ॥ —मुहूर्तगणपति

नक्षत्र—हृ०, मृ०, श्ले०, म०, पूर्वा० ३, चि०, वि०, अनु०,
ज्ये०, रे०।

टिप्पणी

नई जूते की दुकान खोलना, बमड़ा रंगना, चमड़े से
संबंधित वस्तुओं की दुकान खोलना या नये जूते पहिनने से
सम्बन्धित ।

४०. सुगन्धित द्रव्य मुहूर्त
तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ दोनों
पक्ष ।

संचतारंभ एवं दीपावलि भी ।

वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, मृ०, रो० पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, अनु०,
श०, ध०, रे० ।

टिप्पणी

इत्र, चन्दन, अगर फूल आदि की दुकान से संबंधित ।

४१. भूषण-रत्न-मुहूर्त
तिथि—द्वानों पक्षों की २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२,
१३, १४ ।

वार—बु० गु० शु० ।

नक्षत्र—अ०, हृ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०,
स्वा०, अनु०, श०, ध०, रे० ।

टिप्पणी

सोने-चाँदों की दुकान, जवाहरात, बने-बनाये आभूषण बेचना
आदि की दुकानों के लिए ।

४२. नौकरी करने का मुहूर्त
तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ७, १०, १३, १५ ।

वार—बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, मृ०, पूर्ण, चि०, अनु०, रे० ।

टिप्पणी

१०, ११वें० सू०, म०, शुभ है, लग्न से १, २, ४, ७, १०
११वें भाव में शुभग्रह होना आवश्यक है ।

सूर्य ५, १४, २३वें अंश पर हो तब नृपवाण कहलाता है
जहाँ नृपवाण का भी त्याग करना चाहिए ।

४३. सवारी (वाहन) लाने का मुहूर्त
तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ (शु०)
वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।

नक्षत्र—अ०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, ध०, ध०,
श०, रे० ।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ८, १२ राशिन्यन ।

टिप्पणी

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गणना करते हुए
प्रथम ३ नक्षत्रों में—नेष्ट

४-६	"	"
७-९	"	"
१०-१२	"	शेष
१३-१५	"	"
१६-१८	"	नेष्ट
१९-२१	"	"
२२-२४	"	"
२५-२७	"	शेष ।

४४. नौकर रखने का मुहूर्त

तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, १३ (शु०) ।

वार—सू०, मृ०, बु०, गु०, श० ।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृ०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०,
श० ।

टिप्पणी

नौकरके जन्म-नक्षत्र से मालिक के जन्म-नक्षत्र तक
गिने यदि ।

३-नक्षत्रों तक	अर्थलाभ
४-६	विनाश
७-९	धनघान्य-मुख
१३-१८	दारिद्र्य

१६—२० " प्राणभय
 २१—२४ " शुभ
 २५—२६ " पीड़ा
 २७ " घनलाभ
 २८ " नाश।

४५. नौकाचालन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ११, १३ (शुब्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—भ०, आ०, श्ल०, ज्य०, मू०, ध०।
लग्न—कक्ष, मकर।

टिप्पणी

नौका की पोड़धोपचार पूजा कर स्वस्तिवाचन के साथ
उसे जल में उतारना चाहिए।

४६. शस्त्र-निर्माण-मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ५, ७, १०, १२, १३ (शु०)।

कार—सू० म० श०।

नक्षत्र—भ०, ह०, आ०, श्ल०, पुन०, पु०, पूर्वा ३, ज्य०, मू०,
ध०, र०।

टिप्पणी

शस्त्र निर्माण करना, या बने-बनाये शस्त्र बेचने की
दुकान हेतु।

४७. शशु-ताङ्न मुहूर्त

तिथि—३, ४, ६, १३, १४।

वार—सू०, म०, श०।

नक्षत्र—भ०, आद्रा, श्ल०, म०, पू० ३, ज्य०, मू०।

टिप्पणी

लग्न १, ५, ८, १०, ११, शुभ है। लग्न में कर ग्रह
जरूरी है। शशु पर मुकदमा चलाने या उसे पीटने के लिए
उपयुक्त मुहूर्त श्रेयस्कर है।

४८. मादक घस्त मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२ (शु०) १५।

वार—चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—भ०, आ०, श्ल०, ज्य०, मू०, र०।

टिप्पणी

शराब, गांजा, भांग, तम्बाकू आदि की दुकान खोलने
के लिए।

४९. वाद-प्रयोग मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ८, १०, १३ (शु०)।

वार—श०, चं०, बु०, गु० श०।

नक्षत्र—अ०, सृग०, उग०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, अन०, ध०
ध० र०।

टिप्पणी

तबला, सितार, सारंगी, ग्रामोफोन, रेडियो आदि वाद्ययंत्रों
की दुकान खोलने के लिए।

५०. शत्रु-संघि (राजीनामा) मुहूर्त

तिथि—दोनों पक्षों की २, ३, ५, ६, ८, १०, १२, १३।

वार—दं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—सुष्टु, मध्या, पू०, फा०, अन०।

टिप्पणी

लग्न शुभ है।

५१. पशु क्रप-विक्रय मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ६, ७, ८, ११, १२, १३ (शु०)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, पुन०, गु०, ह०, चि०, ज्य०, व०, र०।

५२. पशीपालन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, १२ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, री०, सृ०, आद्री०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०,
स्वा०, अन०, ध०, र०।

५३. मन्त्रसाधन मुहूर्त

तिथि—४, ६, ८, ९, ११, १४, (दोनों पक्ष की)।

वार—सू०, चं०, बु० गु०, श०।

नक्षत्र—भ०, आ०, म०, मू०।

लम्ब—५/११ हो।

टिप्पणी

संकान्ति, दीपमालिका, होलिका, दुर्गाष्टमी, अहण का दिन नवरात्रि भी शुभ है।^१

५४. नूपप्रयाण मुहूर्त

तिथि—३, ५, ८, १०, १३ (श०)।

वार—गु०, श०।

नक्षत्र—अश्वि०, मू०, पुन०, पु०, ह०, अनु०, अभि०, श०, घ०, रे०।

टिप्पणी

राजाओं के लिए या रानी जहाँ भी जावे, विशेषतः यात्रा या शुभ कार्य के लिए जावे तो उपर्युक्त मुहूर्त देख लें।

प्रतिपदा, हितीया, रिक्ता तिथि, त्रिपुष्कर, चन्द्रदोष में यात्रा निषेध है।

५५. नगर प्रवेश मुहूर्त

तिथि—२, ७, १२।

वार—सू०, श०।

नक्षत्र—कृ०, वि०, उषा० पूभा०।

५६. मल्ल क्रिया (कसरत) मुहूर्त

तिथि—३, ५, ८, १०, १३, १५ (दोनों पक्ष)

वार—सू०, चं० गु०, श०।

नक्षत्र—भ०, इले०, म०, पू० ३, उषे०, गू०।

लम्ब—३, ६, ७, ८, ११।

१. मध्याह्न भरणी सूले मृत्युज्ञ तबुधे छठे।
षुद्धाष्टमे भूगौ तुवै वीर वैताल शाश्वत् ॥

—मुहूर्त गणपति

सू०-१५४

टिप्पणी

सूर्य मंगल केन्द्र में हों तो शुभ है।

५७. द्याज लेन-देन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, गु०, श० श०।

नक्षत्र—भ०, कृ०, इले०, पू० ३, वि०।

लम्ब—२, ५, ८।

टिप्पणी

कैन्द्र, दूसरे भाव तथा त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३, ६, ११वें में पापग्रह शुभ है।

५८. मूर्मि के क्रय-विक्रय का मुहूर्त

तिथि—२, ५, ६, १०, ११, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—गु०, श०।

नक्षत्र—मू०, पुन०, इले०, म०, वि०, अनु०, म०, रे०।

लम्ब—२, ५, ८।

टिप्पणी

कैन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३, ६, ११वें में पापग्रह होना शुभ है।

५९. वाणिज्य कर्म प्रारंभ का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, गु०, श०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मू०, पुन०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०।

भ०, ध०, पू०, भा०, रे०।

टिप्पणी

लम्ब में चन्द्र-शुक्र हो। दूसरे भाव में पापग्रह न हो। २, १० ११वें भाव में शुभग्रह हो।

नाभराशि से चन्द्र प्रवल हो।

भूरुद्धिनि को यह मुहूर्त वर्जित है।^१

१. मासान्ते दिन संकान्ति वर्षात्मे च हुताशनी।

असाध्या भीमवारे च रोदति पंचदिनानि भूः ॥

८१

६०. होटल खोलने का मुहूर्त

तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु)।
वार—सू०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, उत्तरा ३, स्वा०, चि०, रे०।
निर्बंल चब्र, वैधृति, ग्रहण, व्यतिपात वर्जित है।

६१. हल चलाने का मुहूर्त

तिथि—३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।
वार—सू०, च०, बू०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०,
स्वा०, चि०, अनु०, ये०, मू०, श०, घ०, रे०।

टिप्पणी

लग्न २, ३, ६, ६, १२ हो। पापग्रह निर्बंल हो। चन्द्र-
शुक्र बली हों तो शुभ है।

भू-रजस्वला दिन में वर्जित है।^१

भू-शयनकाल भी निषेद्ध है।^२

६२. बीज बोने का मुहूर्त

तिथि—३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, (दोनों पक्ष)
वार—सू०, च०, बू०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०,
स्वा०, चि०, अनु०, रे०।

टिप्पणी

बीज बोने के लिए सूर्य नक्षत्र से ३ नक्षत्र तक शुभ
उसके बाद १६ नक्षत्र तक अशुभ एवं बाद के ८ नक्षत्र तक शुभ
माना गया है।

६३. सिंचाई मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (दोनों
पक्ष)।

वार—च०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उ० ३, चि०, स्वा०, चि०,

१. संकालित से १, ५, १०, ११, १६, १८ दिन।

२. सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ६, १२, १६, २६ चन्द्रकां।

अनु०, पू०, भा०, रे०।

६४. खलिहान का मुहूर्त
तिथि—३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।
वार—सू०, च०, बू०, गु०, शु०।
नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, म०, उ० ३, ह०, चि०,
स्वा०, चि०, अनु०, रे०।

टिप्पणी

भू-स्वेच्छा, शू-तास्य, एवं भू-रजस्वला दिन वर्जित है।

६५. अनाज काटने का मुहूर्त
तिथि—३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, च०, बू०, पु०, शु०।
नक्षत्र—अ०, ग०, क०, रो०, मृ०, आ०, पुन०, पु०, ल०,
म०, ग० ३, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, चि०, अनु०, ज्य०,
म०, अ०, श०, रे०।

६६. चूड़ी-धारण मुहूर्त
तिथि—१ (कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु)।

वार—सू०, बू०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, चि०, अनु०, रे०।

चूड़ी चक्र

सूर्य-नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनो,
प्रथम ३ नक्षत्र तक—नेष्ट

४	५	नेष्ट
६	६	श्रेष्ठ
१०	११	नेष्ट
१२	१८	श्रेष्ठ
१८	२०	नेष्ट
२१	—	श्रेष्ठ
२२	२४	श्रेष्ठ
२५	२७	नेष्ट

१. प्रवर्भाद्रपदा मूलं रोहिण्युत्तरफलंगुनी।

विशाखा वार्षणी चैव धान्यानां रोपणे वराः ॥ —राज मार्तण्ड

टिप्पणी

देवशायन, शुक्र-शक्तारत, धनु मीन संकालित आदि वर्जित हैं।

प्रथम बार चूड़ा पहनने का मुहूर्त भी यही है।

६७. बंटवारा करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बू०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पून०, पू०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अ०, ध०, श०, रे०।

लग्न—शुभ। केन्द्र में शुभ ग्रह हो।

६८. व्रतोद्यापन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बू०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पून०, पू०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु० श०, ध०, रे०।

चन्द्र बलवान् हो। गुरु शुक्रोदय हो।'

टिप्पणी

एकादशी, पूर्णिमा, या भागवत अथवा किसी भी प्रकार के व्रतोद्यापन हेतु।

६९. यज्ञ-अनुष्ठानादि मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १०, १५, (दोनों पक्ष)।

वार—चं०, बू०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पून०, पू०, म०, उ० ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श०, ध०, श०, रे०।

टिप्पणी

भू-शयन, भू-रजरबला, भू-हास्य एव भू-रुदन वर्जित हैं।

लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ८, १२वाँ हो। दशम भाव में सूर्य, चतुर्थ भाव में चंद्र एव लग्न में गुरु शुभ हैं।

१. नास्ति स्त्रीनां पृथग् यज्ञो न वर्तं नाप्युपोषणम् ।
भृत्युशुष्ययैवैता लोकानिष्टान् व्रजान्त हि ॥ — स्कन्दपुराण

गुरु शुक्र प्रबल मार्गी व उदय हो।

यज्ञान का चंद्र प्रबल व शुभ हो।

७०. यंत्र-तंत्र-प्रयोग मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बू०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, मृ०, उ० फा०, ह०, चि०, श०।

टिप्पणी—चन्द्रबल प्रबल हो।

प्रीति, सिद्धि, साध्य, शुभ, शोभन, आयुष्मान् योगों में शुभ है। —व्रत परिचय

७१. आपरेशन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १५ (शुभ)।

वार—सू०, मृ०, ग०।

नक्षत्र—अ०, मृ०, पू०, ह०, स्वा०, अनु०, उय०, श०, श०।

टिप्पणी

४, १४ तिथियाँ सर्वश्रेष्ठ हैं।

७२. रोगमुक्त स्नान मुहूर्त

तिथि—४, ६, १४।

वार—सू०, मृ०, बू०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, भ०, कृ०, मृ०, आ०, पु०, पू० ३, ह०, चि०, वि०, अनु०, मू०, श०, रे०।

लग्न—१, ४, ७, १०।

टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में पापग्रह शुभ है। भ्राता वैष्णवि व्यतिपात शुभ।

७३. दीक्षा मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२ (शुक्ल पक्ष), २, ३, ५

(कृष्ण पक्ष)।

वार—सू०, चं०, बू०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पून०, पू०, म०, उ० ३, ह०, चि०,

हृस्त मेष्य मृग पृष्ठवृत्तरा।

आदिव पौष्ण शुभ योग सौरस्यदा ॥

स्वा०, वि०, अनु०, मू०, श०, रे०।

टिप्पणी

तेरह तिथियों का पक्ष क्षयमास वर्जित है।
वैशाख, श्रवण, आश्विन, कात्तिक, मार्गशीर्ष माघ,
फाल्गुन शुभ है।

२, ३, ४, ५, ७, ६, १२ लग्न शुभ है।
केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हो। पापग्रह वर्जित है।

७४. गोद लेने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—सू०, मू०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, यु०, ह०, चि०, स्वा०, वि०, अनु०, घ०।

टिप्पणी

बालक व गोद लेनेवाले व्यक्ति दोनों के अन्द्र शुभ एवं प्रबल हों।

७५. संन्यासधारण मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ८, १०, १२ (दोनों पक्ष)

वार—च०, व०, ग०, श०।

नक्षत्र—रो० उत्तरा ३।

टिप्पणी—

६ठे तथा १२वें भाव में शुक्र हों तो शुभ है। पापग्रह बलहीन हो।

बिदानों के अनुसार ३, ६, ११वें शनि, ६, १२वें शुक्र तथा गुरु केन्द्र में हो तो अधिक उत्तम है।

७६. राज्याभिषेक मुहूर्त

मास—चैत्र के अतिरिक्त उत्तरायण सूर्य के मास।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३, (शुक्र)। (कृ)।

वार—सू०, श०, श०।

नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मू०, पु० उत्तरा ३, ह०, चि०, अनु०,

१. मृतराज न कालस्य नियमोऽपि विधीयते।
नुपाभिषेकः कर्तव्यो देवज्ञेन पुरोषसा ॥

—देवज्ञ मनो हर

८६

ज्य०, थ०, रे०।

लग्न—स्तिवर या २, ३, ५, ७, ८ राशि का।

टिप्पणी

राजा की मृत्यु के बाद विना मुहूर्त के भी तत्काल राजगद्दी ग्रहण कर लेनी चाहिए, तथा राजवकार्य सम्पादन करना चाहिए। तत्पश्चात् शुभ मुहूर्त देखकर राज्याभिषेक करा लें।

जिसका राज्याभिषेक हो रहा हो उसकी जन्म-लग्न-राशि से भी ३, ६, १०, ११वाँ लग्न शुभ है। पापग्रह ३, ६, ११वें तथा शुभ ग्रह अन्य स्थानों विशेषतः केन्द्र त्रिकोण में हो।

कुछ विद्वानों के अनुसार सूर्य ३, ६, ६, ११, चन्द्र १, ६, ८, १२वें स्थान के अतिरिक्त स्थान में होना आवश्यक है।

मंगल ६ठे, गुरु १, ४, ५, ६, ११वें, शुक्र ५, १०वें तथा शनि ३, ११, १२वें हों तो राजा कीतिवान् चिरायु एवं राज-लक्ष्मीयुत यशस्वी हो।

७७. खड्ग धारण मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, (शु)।

वार—सू०, मू०, श० श०।

नक्षत्र—पु०, पुन०, पू० फा०, उ० ३, ह० चि०, स्वा०, ज्य०, रे०।

लग्न—१, २, ५, ७, १०, ११ राशि से।

७८. संधि-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, ८, १२, १३ (शु)।

वार—च०, व०, ग०, श०।

नक्षत्र—पु०, म०, पू० फा०, अनु०।

लग्न—शुभ अवधा शुभ ग्रहों से दृष्ट।

टिप्पणी

भद्रा कुयोग व क्षीण चन्द्र वर्जित है।

मुकुदमे में वादी-प्रतिवादी के बीच व्यावहारिक तौर पर मनमुटाव के बाद समझौता संधि ही कहलाती है।

८७

७६. लघु उद्योग मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १३, (शुक्र)।

वार—सू०, च०, ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—अश्विनी, रो०, मृ०, पू० पुष्य०, उत्तरा०, ह०, च०,
स्वा०, अनु०, श०, ध०, पू० भा०, रे०।

लग्न—कुंभ लग्न के अतिरिक्त कोई भी लग्न हो। केन्द्र त्रिकोण
शुभ ग्रहों से युक्त हो।

टिप्पणी

छोटे पैमाने पर व्यापार या कुटीर उद्योग आदि के
लिए।

७०. वृहद व्यापार मुहूर्त

तिथि—२, ५, ७, १२, १३, (शुक्र) ?, (कृ),

वार—ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—पू०, उत्तरा०, ह०, च०।

व्यापार प्रमुख की चन्द्र शुक्र भी देख लेनी चाहिए,
तथा दशा अन्तर्देशा का भी विचार कर लेना चाहिए।

३१. बहीखाता प्रारंभ मुहूर्त

तिथि—१ (कृ) २, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (शुक्र),

वार—सू०, च०, ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—अश्विनी, रो०, मृ०, पू०, पुन०, पू०, उत्तरा०, ह०, च०,
अनु०, श०, ध०, रे०।

लग्न—१, ३, ४, ६, ७, ८, १० राशि लग्न।

टिप्पणी

केन्द्र त्रिकोण में पापग्रह न हो, तथा लग्न पर कूर ग्रहों
की दृष्टि न हो।

विजया दशमी, दीपावलि, अक्षय तृतीया, नवरात्रस्थापन
दिवस आदि दिन बिना मुहूर्त के भी श्रेष्ठ हैं।

चतुर्मसि एवं गुरु शुक्रास्त पूर्णतः वर्जित है।

८२. संपत्ति विभाजन मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३ (गु०)।

वार—सू०, च०, ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—अश्विनी, रो०, मृ०, उत्तरा०, ह०, च०, अनु०
श०, ध०, रे०।

लग्न—२, ३, ४, ७, ८, ११ राशि।

८३. आवेदन-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, १०, १३ (शुक्र) १ (कृ)।

वार—सू०, च०, ग०, श०।

नक्षत्र—अश्विनी, रो०, मृ०, पुन०, पू०, उत्तरा०, श०, ध०,
श०, रे०।

टिप्पणी

किसी पद के लिए, कार्यसिद्धि हेतु या किसी व्यावहारिक
कार्य के लिए उपर्युक्त मुहूर्त पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

वह ध्यान रहे कि उस दिन प्रार्थी का चन्द्र बलवान हो,
शुभ हो तथा लग्नेश भी सशक्त हो।

८४. नौकरी प्रारंभ करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ४, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (शु)

१ (कृ)।

वार—च०, ग०, श०, ध०।

नक्षत्र—अश्विनी, रो०, मृ०, पू०, उत्तरा०, ह०, च०,
अनु०, श०, रे०।

टिप्पणी

लग्नेश प्रबल हो, तथा लग्न में चन्द्र या शुक्र हो। शनि०
६, ८, ११ वें हो। गुरु सप्तम में रहे तो श्रेष्ठ होगा।

नृप बाण का परित्याग करें।

८५. कोल्हू प्रारंभ करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, ९, १२, १३ दोनों पक्ष।

वार—च०, ब०, ग०, श०।

नक्षत्र—अ०, पुन०, पू०, ह०, च०, अनु०, रे०।

टिप्पणी

तेल की घाणी, या सुगंधित तेल बनाने के लिए भी
उपयोगी।

८६. नाई की दुकान मुहर्त
 तिथि—२, ३, ४, तिथि को छोड़कर कोई भी तिथि।
 वार—चं०, बु०, गु०, शु०।
 नक्षत्र—अदिव०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, थ०,
 घ०, रे०।

८७. सुनार की दुकान मुहर्त
 तिथि—२, ३, ४, ११ तिथि छोड़ कर कोई भी तिथि।
 वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शु०।
 नक्षत्र—अश्विव०, कृ०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०,
 थ०, रे०।
 लग्न—स्थिर।

८८. लुहार की दुकान मुहर्त
 तिथि—८, ९, ११, छोड़कर कोई भी तिथि।
 वार—मू०, शु०, श०।
 नक्षत्र—भ०, कु०, रो०, आ०, चि०, स्वा०, अनु०, रे०।
 लग्न—२, ५, ७, ८, ११ राशि।
८९. काठ की दुकान का मुहर्त
 तिथि—४, ६, ७, ११ छोड़कर कोई भी तिथि।
 वार—सू०, चं०, बु०, गु०।
 नक्षत्र—ब०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, चि०,
 अनु०, ज्य०, थ०, घ०, श०, रे०।
 लग्न—स्थिर।

९०. मिठाई की दुकान का मुहर्त
 तिथि—४, ७, ८, ११ छोड़कर कोई भी तिथि।
 वार—सूर्यवार छोड़कर।
 नक्षत्र—अदिव०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, अनु०, रे०।
९१. चमड़े (जूते) की दुकान का मुहर्त
 तिथि—२, ३, ४, ७, ८, १२, १३, (दोनों पक्ष)।
 वार—बुधवार त्याज्य।
 नक्षत्र—कृ०, मृ०, पुन०, पु०, ह०, चि०, अनु०, थ०, घ०,
 रे०।

६०

लग्न—स्थिर।

९२. गुप्तघर कार्य मुहर्त
 तिथि—२, ३, ४, ५, ७, १०, १२ दोनों पक्ष।
 वार—मू०, श०।

नक्षत्र—भ०, कु०, आ०, इष्ट०, म०, पूर्वा०, ज्य०, वि०।

९३. तबादले के बाद ड्यूटी जाँइन मुहर्त
 तिथि—२, ३, १०, ११ छोड़कर कोई भी तिथि।

वार—सू०, चं०, बु०, छोड़कर।

नक्षत्र—अश्विव०, मधा०, मूल०, ज्येष्ठा०, शत०, छोड़कर।

लग्न—स्थिर।

टिप्पणी—चन्द्र प्रबल हो।

९४. प्रकाशन खोलने का मुहर्त
 तिथि—२, ३, ५, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १५ (शुक्ल)।
 वार—बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अश्विनी०, भ०, कु०, रो०, वि०, अनु०, थ०, घ०, रे०।

लग्न—स्थिर।

टिप्पणी

गुरु-शुक्रास्त न हो। चन्द्र शुद्ध प्रबल एवं बनकूल हो।
 पुस्तक विक्रेता, पुस्तक प्रकाशन, छापालाना लगाना, अखबार
 निकालना, बुक स्टाल आदि के लिए उपयोगी।

९५. चुनाव में खड़े होने का मुहर्त
 तिथि—२, ३, ५, ६, १०, १२, १५ शुक्ल पक्ष।
 वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, उत्तरा०, रे०।

लग्न—चर लग्न।

टिप्पणी

केन्द्र विक्रोण में शुभ ग्रह हो, तथा ३, ६, ११वें पाप
 ग्रह हों। लग्नेश एवं चन्द्र प्रबल हो, तथा दोनों को पापग्रह
 न देख रहा हो।

चतुर्थ भाव तथा चतुर्थेश बली हो, या चतुर्थेश लग्नेश का
 संबंध हो।

६१

६६. संसद में जाने का मुहूर्त टिप्पणी

संसद में जाने के लिए “चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त” ही योग्य है, पर लग्न स्थिर होना चाहिए, तथा लग्नेश प्रबल होना चाहिए।

६७. मन्त्र पद पर शपथ मुहूर्त

तिथि—२, ३, ४, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ (शुक्ल)।
वार—मं०, शु०, वृ०, श०।

नक्षत्र—मू०, आ०, म०, चि०, अनु०, मू०, उ० ३, ध०, श०।
लग्न—स्थिर।

टिप्पणी

लग्न प्रबल हो। लग्नेश, चन्द्र, तथा सूर्य शुभ भावों में हों। चतुर्थ बली हो, तथा वैधृत, व्यतिपात भद्रा आदि का त्याग हो।

६८. बाग लगाने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १२, १५ दानों पक्ष।
वार—सू०, वृ०, गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मू०, पुन०, पु०, उ० ३, ह०, चि०, अनु०
श०, र०।

टिप्पणी

लग्न में जलचर राशि हो। गुह्यशुकास्त न हो, तथा भू-रजस्वला, भू-खदन, भू-हास्य, भू-शयन का त्याग करें।

६९. फिल्म प्रारंभ करने का मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ८, ६, १२ (शुक्ल पक्ष), १५ (कु)।
वार—दु०, गु०, श०। शुक्रवार विशेष।

नक्षत्र—पुन०, पु०, पूर्वो० ३, चरणी।

लग्न—चर राशि।

टिप्पणी

लग्नेश, चन्द्र एवं शुक्र ग्रह प्रबल हों। शुक्र यदि लग्न या चतुर्थ में हो तो विशेष शुभ। केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह। लग्न पर पापग्रहों की दूषित न हो।

६२

१००. फिल्म प्रदर्शन मुहूर्त तिथि—२, ३, ५, ६, १२, १५ (शु०)

वार—दु०, गु०, श०।

नक्षत्र—पुन०, पु०, पूर्वो० ३, भरणी, रेती।
लग्न—स्थिर।

१०१. भवन निर्माण मुहूर्त^१

मास—वैशाख, शावण, कात्तिक, मार्गशीर्ष, माघ तथा फाल्गुन।^२ मास का चयन द्वारमुख के अनुसार करना आवश्यक है। पूर्व, पश्चिम द्वारमुख हो तो शावण, भाद्रपद, माघ, फाल्गुन। उत्तर-दक्षिण द्वारमुख हो तो वैशाख, ज्येष्ठ, कात्तिक, मार्गशीर्ष।

पक्ष—भवन-निर्माण मुहूर्त में शुक्ल पक्ष ही ग्राह है।^३

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल पक्ष)^४
कुछ विद्वानों ने ५, ६, १०, ११ तिथियाँ वर्ज्य मानी हैं।

अर्थनाशो भवेत्यप्त्यामेकादश्यां विधमेनम्।

पञ्चम्यां चौरसीतिः स्याद दशम्यान्तु नपाद भयम्।

पौर्णिमास्यां चायंनाशो भार्यानाश्तर्थव च ॥ ज्यो० सा० सं०।

त्याज्य तिथियाँ

द्वार दि।

पूर्व दिशा

पश्चिम

उत्तर

दक्षिण

त्याज्य तिथियाँ

१५, कृष्ण १ से ६ तक

३०, शुक्ल १ से ६ तक

कृष्ण ६, १०, ११, १२, १३, १४

शुक्ल ६, १०, ११, १२, १३, १४

१. गृहस्थस्य किया: सर्वा न सिद्धयन्ति गृहं बिना।

परेहे कृताः सर्वाः श्रोतः स्मार्तकियाः शुभाः ॥

निष्कलाः स्युर्ततस्तासां भूभीशाः फलमश्नुते ॥ —मविष्वपुराण

२. सौम्या: फाल्गुन वैशाख माघ शावण कात्तिकाः।

मासाः स्युग्महनिर्माणं पुत्रपौत्रघनप्रदाः ॥ —नारद पुराण

३. शुक्लपक्षे भवेत्सौम्य कृष्णे तस्करतो भयम् ॥

४. द्वितीया पंचमी मुख्यास्तृतीय षष्ठिका तथा।

सप्तमी दशमी चैव द्वादश्यैकादशी तथा ॥

—ग० मा०

६३

मासशून्य पक्ष, गलग्रह तिथियों का भी त्याग जरूरी है।
बार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

नक्षत्र—रो०, मूँग० पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०,
अनु०, अ०, ध०, श०, रे०।

पंचक त्याज्य है।

योग—विष्णव, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतिपात,
परिघ, वैधति योग त्याज्य है।

करण—बव, तैसिल, गर, वणिज, शकुनि, तथा किस्तुधन।
लग्न—२, ३, ५, ६वां, लग्न (राशि लग्न)।

३, ६, ११वें पापप्रह हो।

तन्त्र त्रिकोण में सौम्य ग्रह हो।

दशम भाव में सबल ग्रह हो।

टिप्पणी

गृहनिमाण के समय गृहपति की राशि से सूर्य, चंद्र, गुरु,
शुक्र बलवान् होने चाहिये, यदि—

सूर्य निबंध हो सो—	स्वामीनाश
चंद्र	स्त्री नाश
गुरु	सुख नाश
शुक्र	द्रष्ट्य नाश

विशेष—

यदि ब्राह्मण (गृहकर्ता) हो तो गुरु-शुक्र विशेष बलवान् हों।

" शत्रिय " " सूर्य भीम " "

" वैश्य " " चन्द्र बुध " "

" शूद्र " " शनि " "

गुरु-शुक्रास्त, चैत्र, शुक्ल, देवशयन, आषाढ़, ज्येष्ठ, माघ
मास, वृद्धिक कुम्भ लग्न, अग्निपंचक, अग्निबाण, भू-ज्येष्ठ, भू-हास्य,
भू-रजस्वला, भू-रुदन, शूल, गण्ड, व्याघात, व्यतिपात,

१. आदित्य भीम वज्रस्तु सर्वेवारां शुभावहा।

प्रसादेऽयेवमेवस्यात्कूपवापीषु चैव हि॥—मर्त्य पुराण

२. गत तिथि में लग्न मिलाकर ६ का भाग देने से शेष २ बचे तो
अग्निपंचक (अग्निभयकारक) होता है।

दैधृति योग, पंचक आदि त्याज्य हैं।

स्वाती-अनुराधा-रेवती नक्षत्र में शनि हो या शनिवार हो,
हस्त-गुरु-रेवती में मंगल हो या मंगलवार हो तो नक्षत्र एवं
बार दोनों ही त्याज्य हैं।

नींव खोदने की दिशा—

देवालय	१२, १, २	३, ४, ५	६, ७, ८	६, १०, ११
--------	----------	---------	---------	-----------

गृहारंभ	५, ६, ७	८, ९, १०	११, १२, १	२, ३, ४
---------	---------	----------	-----------	---------

जलाशय	११, ११, १२	१, २, ३	४, ५, ६	७, ८, ९
-------	------------	---------	---------	---------

विवाह	२, ३, ४	५, ६, ७	८, ९, १०	११, १२, १
-------	---------	---------	----------	-----------

दिशा	अग्निकोण	ईशानकोण	वायव्य	नैऋत्यकोण
------	----------	---------	--------	-----------

गृहारंभ के विशेष योग

१. मीन का शुक्र लग्न में हो, या कर्क का गुरु चतुर्थ भाव में हो
या, तुला का शनि एकादश भाव में हो तो वह घर प्रवल
घनदायक होता है।

२. कर्क लग्न में चन्द्र गुरु केन्द्र में तथा अन्यग्रह स्व या उच्च हो
तो ऐसे समय में बना भक्तान प्रारब्धियों को ही मिलता है।

३. शुक्र लग्न में, सूर्य ११वें, तथा बुध १०वें हो तो घर कल्याण-
कारी होता है।

राहुमुख

राहु मुख दिशा	आग्नेय	नैऋत्य	वायव्य	ईशान
---------------	--------	--------	--------	------

सूर्य राशि	२, ३, ४	११, १२, १	८, ९, १०	५, ६, ७
------------	---------	-----------	----------	---------

शुभ दिशा	नैऋत्य	वायव्य	वशान	आग्नेय
----------	--------	--------	------	--------

राहुमुख से पृष्ठवर्ती दिशा में घर की नींव खोदनी
प्रारम्भ करनी चाहिए।

सर्पमुख विचार

सर्पशिर दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
मास	भाद्रपद	फाल्गुन	ज्येष्ठ	मागशीर्ष
	आश्विन	चैत	आषाढ़	पोष
	कात्तिक	वैशाख	श्रावण	माघ

नाग के शिर में भवननिर्माण स्वामी नाशक, पीठ की ओर
पुत्र-स्त्रीमारक, पुच्छ की तरफ अर्धनाश तथा वक्षस्थस्त्र में क्षेम-
६५

तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १४, १५ (शुक्र) सामान्यतः जिस देवता के लिए जो तिथि निर्धारित है, उस तिथि को उस देव की प्रतिष्ठा होनी चाहिए।

वार—सू०, चं०, बु०, गु०, श०, श०।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श०, घ०, श०, रे०।

लग्न—२, ३, ६, ८, १२।

स्थिर लग्न विशेष शुभ है।

टिप्पणी

देवस्थान, मलमास, गुरुशुकास्त, निर्वल चन्द्र वर्जित है।

शिववास

शिवलिंग-स्थापनः में उपर्युक्त गुहूर्तं शुभ है परं शिववास व फल विचार कर लेना चाहूँए—

तिथि को दुगुनी कर ५ जोड़ दें तथा ७ का भाग दें, शेष के अनुसार निम्न प्रकारेण शिववास समर्पयेत्—^१

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश	गुरुलाग
२	गौरी सह	संपत्तिलाभ
३	वृषभ पर	सिद्धिलायक
४	सभा में	संताप, पीड़ा
५	भोजन पर	दुख
६	रमण में	कष्ट
०	इमारात में	मृत्यु

वार के अनुसार देवस्थापन से निम्न फल होता है—

रविवार देवता उग्र रहता है

सोमवार क्षेमदायक

मंगलवार अग्निदायक

बुधवार वरदायक

१. तिथि च द्विगुणं कृत्वा वा गे संयोजयेत् तः।

सप्तमिश्च हैद्रभागं शिववास समुद्देशेत् ॥

गुरुवार
शुक्रवार
शनिवार

सुखदायक
आनन्ददायक
सामान्य
उप्र एवं कूर देवता की स्थापना रविवार को ही करनी चाहिए :

१०६. वास्तु शान्ति-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ (दोनों पक्ष)।

वार—चं०, बु० गु०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श०, श०, घ०, रे०।

लग्न—कोई भी हो, परं लग्न से १, २, ४, ५, ७, ८, १०, ११वें भावों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११वें भावों में पापग्रह हों।

टिप्पणी

अग्निवास, चन्द्रबल, भद्रा विचार कर लेना चाहिए, परं 'हवन चक्र शोधन' आवश्यक नहीं है।^१

गृह बन जाने पर उसमें रहने के पूर्व यज्ञादि धार्मिक कार्य हो 'वास्तु शान्ति' कहलाती है।

१०७ नूतन गृहप्रवेश

मास—वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन।

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, १३ (शुक्र)।

वार—चं०, बु०, गु०, श०, श०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श०, घ०, रे०।

लग्न—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२ राशि लग्न।

वर्जित—दग्धा, रिक्ता शून्य तिथियाँ, अमावस्या, द्वादशी व शुक्रवार योग, अष्टम लग्न, भद्रा, चर लग्न, धनु, कुम्भ व मीन संकान्तियाँ।

१. विवाह यात्रा व्रत वास्तु यज्ञ चौलोपवीत ग्रहणे युगादी।

तथा च दुग्धचिंत संविधाने न वर्हि चक्रं परिचिन्तनीयः ॥

वामाकं विचार

गृहप्रवेश में वामाकं विचार परमावश्यक है।

द्वार दिशा—पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
सूर्याविष्ट भाव ८, ६, १०, ११, १२	२, ३, ४, ५, ६	११, १२, १, २, ३	५, ६, ७, ८, ९

उदाहरणार्थ यदि पश्चिम दिशा में मुख्य द्वार हो तो नूतन गृहप्रवेश-समय में लग ऐसा लेना चाहिए जब कि सूर्य २, ३, ४, ५, ६ ठंडे भाव में स्थित हो।

दिशा तिथि विचार

यदि मुख्य द्वार पूर्व में हो तो ५, १०, १५ तिथियाँ श्रेष्ठतम होती हैं।

यदि मुख्य द्वार पश्चिम में हो तो २, ७, १२, तिथियाँ श्रेष्ठ हैं

"	उत्तर	"	३, ८, १३	"
---	-------	---	----------	---

"	दक्षिण	"	१, ६, ११	"
---	--------	---	----------	---

भद्रा विचार

गृहप्रवेश मुख्यद्वार से करना चाहिए, उस समय भद्रा सम्मुख या वामस्थ नहीं होनी चाहिए।

टिप्पणी

नूतन गृहप्रवेश मंगलाचरण के साथ वादावनि करते हुए करना चाहिए, तथा सर्वप्रथम कुलदेव-पूजा एवं अग्नेयों का सम्मान करना चाहिए तथा ब्राह्मणों को प्रसन्न करना चाहिए। धार्मिक कार्यसम्पन्न भी जरूरी है।

१०८. यात्रा-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (दोनों पक्ष)।

वार—चं०, गु० शु०।

नक्षत्र—अ०, म०, पुन०, पु० ह०, अनु०, श०, घ०, श०।

ज्येष्ठ—५, ६, ७, ८, १०, ११, १२।

टिप्पणी

पंचक में यात्रा वर्जित है।

मास शूल विचार

सूर्य राशि	मास शूल दिशा
२, ३, ४	पूर्व
५, ६, ७	दक्षिण
८, ९, १०	पश्चिम
११, १२, १	उत्तर

जिस दिशा में मास-शूल हो, उस दिशा में यात्रा करना शुभ नहीं माना गया है।

धात मास-तिथि

राशि	धात मास	धात तिथि
मेष	कार्तिक	१, ६, ११
वृष	मार्गशीर्ष	५, १०, १५
मिथुन	आषाढ़	२, ७, १२
कर्क	पौष	२, ७, १२
सिंह	ज्येष्ठ	३, ८, १३
कन्या	भाद्रपद	५, १०, १५
तुला	माघ	४, ८, १४
वृश्चिक	आष्विन	१, ६, ११
घनु	श्रावण	३, ८, १३
मकर	बैशाख	४, ८, १४
कुंभ	चैत्र	३, ८, १३
मीन	फाल्गुन	५, १०, १५

धाततिथि धातवारं धातनशीत्रमेव च।

यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञं रत्यकमंगु शोभनम् ॥

घोगिनी

तिथि	दिशा
१, ६	पूर्व
२, १०	उत्तर
३, ११	आग्नेय
४, १२	नीऋत्य

५, १३	दक्षिण
६, १४	पश्चिम
७, १५	वायव्य
८, ३०	ईशान

यात्रा में योगिनी वामभाग या पृष्ठभाग में होनी चाहिए; आवश्यकता पड़ने पर तिथि की ६ घण्टी छोड़कर यात्रा करने से योगिनी-दोष नहीं रहता ।

वार दिक्षूल

वार	दिशा
च० श०	पूर्व
च० ग०	अग्नि
गु०	दक्षिण
सू० श०	नैऋत्य
सू० ग०	पश्चिम
म०	वायव्य
म० ब०	उत्तर
घु० श०	ईशान

दिक्षूल वार्ये तथा पीठ में शुभ होता है ।

वार-दोषनिवारण

सूर्य	धी
चन्द्र	दूध
मंगल	गुड़
बुध	तिल
गुरु	दही
शुक्र	यव
शनि	उरद

वारदोष होने पर संबंधित वस्तु या वस्तुओं से बने पदार्थ को खाकर यात्रा करना शुभ होता है ।

समय-शूल

प्रातः	पूर्व
मध्याह्न	दक्षिण
गोधूलि	पश्चिम
अर्धरात्रि	उत्तर

उपरिलिखित समय में संबंधित दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए ।

काल राहु

वार	दिशा
सूर्य	उत्तर
चन्द्र	वायव्य
मंगल	पश्चिम
बुध	नैऋत्य
गुरु	दक्षिण
शुक्र	अग्नि
शनि	पूर्व

ईशान कोण में काल राहु नहीं जाता । काल राहु दाहिने शुभ, अन्यत्र अशुभ होता है ।

चन्द्रवास

राशि चन्द्र	दिशा
१, ५, ६	पूर्व
२, ६, १०	दक्षिण
३, ७, ११	पश्चिम
४, ८, १२	उत्तर

सम्मुख एवं दाहिने चन्द्र शुभ होता है, अन्य दिशा की ओर चन्द्र हो तो यात्रा वा त्याग करना चाहिए ।

तिथि-दोष-परिहार

तिथि	भक्ष्य
१	पुष्प
२	चावल

३	घृत
४	दही
५	अन्न
६	स्वर्णजल
७	गुड़
८	नींवू
९	जल
१०	गौमूत्र
११	यव
१२	खीर
१३	गुड़
१४	केसर
१५	मूँग
३०	त्याज्य

वारानुसार ग्राह्य शुभ समय

रवि	सूर्योदय काल
मंगल	भोजन काल के बाद
शनि	उषाकाल
अन्य वार	किसी भी समय

तारा विचार

जन्म-नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर ६ से भाग दें,
क्षेत्र १ वचे तो जन्म, २ संपत्ति, ३ विपत्ति, ४ धनेम, ५ प्रत्यर्थ,
६ साधक, ७ वध, ८ मैत्र, ९ अतिमित्र होता है।
१, ३, ५, ७वाँ तारा अशुभ तथा त्याज्य है।

घात नक्षत्र

राशि	नक्षत्र
मेष	मधा
वृष	हस्त
मिथुन	स्वाती
कर्क	अनुराधा

सिंह	मूल
कल्या	श्रवण
तुला	शतभिषा
वृद्धिक	रैवती
धनु	भरणी
मकर	रोहिणी
कुंभ	आर्द्रा
मीन	आश्लेषा

घात नक्षत्रों में यात्रा करना शुभ नहीं माना गया है।

विशेष

(१) गृहशिरा, पुष्प, हस्त तथा श्रवण, इन नक्षत्रों में यात्रा शुभ है, फिर वाहे अन्य सभी व्यवस्थाएँ अशुभ हों, फिर भी उनका दोष नहीं रहता।

(२) जब मनोबल प्रवल हो, तब याया प्रारम्भ कर देनी चाहिए, फिर तिथि-वार-नक्षत्र किसी का दोष नहीं रहता।

(३) उचित यात्रामुहूर्त में प्रस्थान असम्भव हो तो “प्रस्थान” कर देना चाहिए।^१

प्रस्थान में ब्राह्मणों को यज्ञोपवीत, क्षत्रियों को शस्त्र, वैश्य को शहद तथा शूद्रों को आंवला या नारियल रखना चाहिए।^२

स्वगृह से निकट यात्रा-दिशा में किसी संबंधी के घर प्रस्थान-सामग्री मुहूर्त-समय में रख दें, फिर यात्रा करते भगव घर से निकल वह सामग्री ले आगे चला जाय, पुनः घर न लौटे। प्रस्थान ३ दिन के बाद निष्कल हो जाता है।

१. शुभं धार्यशुभं वापि तिथि योगादिकंचयत् ।
लब्ध्वा मनोबलं तत्र प्रयाणं शुभद स्मृतम् ॥
२. सुमुहूर्ते स्वर्णं गमनासम्भवे प्रस्थानं कार्यम् ।
३. प्रस्थाने ब्राह्मणादीनां यज्ञसूत्रमथायुधम् ।

लग्न-समय

राशि	घटी पल
मेष	३—४५
वृष	४—१६
मिथुन	५—५
कंक	५—४१
सिंह	५—४२
कन्या	५—३१
तुला	५—३१
वृश्चिक	५—४२
घनु	५—४१
मकर	५—५
कुम्भ	४—१६
मीन	३—४५

१६०. होमाहुति मुहूर्त

टिप्पणी

सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो, उससे चन्द्र नक्षत्र तक गिरे, तथा तीन-तीन नक्षत्रों का एक श्रिक बना लें, उसमें—

पहला श्रिक्	—	सूर्य का
दूसरा „	—	वृष का
तीसरा „	—	शुक्र का
चौथा „	—	शनि का
पाँचवाँ „	—	चन्द्र का
छठा „	—	मंगल का
सातवाँ „	—	गुरु का
आठवाँ „	—	राहु का
नवाँ „	—	केतु का

होम के दिन का नक्षत्र (या चन्द्र नक्षत्र) जिस श्रिक् में पड़ेगा, उसी ग्रह के मुख में होमाहुति पड़ती है। खल या दुष्टग्रह के मुख में होमाहुति शुभ नहीं होती।

११०. मूल-निवास

आपाह, भाद्रपद, आविन और माघ में मूल का निवास स्वर्ग में होता है, श्रावण, कार्तिक, चैत्र और पौष में भूमि पर, फाल्गुन, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष और वैशाख में मूल पाताल लोक में रहता है।

१११. संक्रान्ति नाम

घनु, मिथुन, कन्या तथा मीन की संक्रान्ति का नाम 'घट-घीति मुखा' है, तुला, मेष की संक्रान्ति का नाम 'विषुव' है, तथा सिंह, वृश्चिक, वृष और कुम्भ संक्रान्ति का नाम 'विष्णुपदा' है।

११२. मूलाश्लेषा जन्मफल

मूल के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता का नाश।

" द्वितीय " " माता "

" तृतीय " " घन "

" चतुर्थ " " समस्त सुख प्राप्त होता है।

आश्लेषा के पहले चरण में जन्म हो तो सुखदायक।

" दूसरे " " घननाश।

" तीसरे " " माता का नाश।

आश्लेषा के चौथे चरण में जन्म हो तो पिता का नाश।

मूल आश्लेषा की शान्ति करने से उपर्युक्त दोष-निवृत्ति हो जाती है।

११३. ग्रह-कार्यबल

किस कार्य में किस ग्रह का शल विशेष देखना चाहिए—

सूर्य राज्य कार्य

चन्द्र समस्त शुभ कार्य

मंगल संग्राम, मुकदमा

बुध विद्याभ्यास, परीक्षा

गुरु विवाह-उत्सव

शुक्र यात्रा

शनि लौह कार्य, दीक्षा

राहु
केतु

पापकर्म
कूर कर्म

११४. रामायण भागवत्, पुराण कथारंभ मुहूर्त
टिप्पणी

गुरु के नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिरें—

१ से १६ नक्षत्र तक अर्थला

१७ से २४,, तक मृत्यु

२५ से २७,, तक मोक्षप्रद

पश—शुक्ल पश।

वार—चन्द्र, बुद्ध, गुरु।

तिथि—२, ३, ४, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
(शुक्ल पश) १ (कृष्ण पश)।

भद्रा, व्यतिपात्र कुयोग वर्जित है।

११५. मध्योन्तरी चालू करने का मुहूर्त
तिथि—१, ७, ८, ८, के अतिरिक्त सभी तिथियाँ।

वार—गु०, शु०, श०, स०, सूर्य।

नक्षत्र—अश्विनी, हृषी, चित्र, अनु०, पु०, धनि० ज्येष्ठ० पुन० ई०।
लग्न—स्थिर लग्न।

११६. लग्न कर्त्तव्य

नीचे विभिन्न लग्नों से संबंधित शुभ करणीय कार्य
दिये जा रहे हैं।

मेष

राज्यतिलक, यात्रा, समझौता, नवीन वस्त्र पहनना,
आभूषण धारण, जमीन खोदना, कूर पाप एवं साहसिक
कार्य।

वृष

कृषि-कार्य, कुआँ जलाशय आदि का निर्माण, विवाह-
कार्य, मांगलिक कृत्य, गृहारंभ, स्थिर कार्य, गृहप्रवेश, दुकान
प्रारम्भ करना, यथु खरीदना, वेचना या दान देना आदि।

मिथुन

कामकला, विज्ञानकार्य, युद्ध, शिल्प, शुभकार्य, राज्या-
भिषेक।

कर्क

जलाशय-निर्माण व प्रतिष्ठा, कूप, बावड़ी, सरोवर आदि
से सम्बन्धित कार्य, शांतिकार्य, चित्रकारी, लेखनकार्य।

सिंह

रस, गन्ना इस्थ आदि से सम्बन्धित कार्य, वस्तु-कृपा-
विक्रय, हाट लगाना, दुकान करना, राज्य सेवा, नीकरी करना,
आभूषण बनाना तथा समरत शुभ कार्य।

कन्या

विद्यारंग, गहने पहनना, चर कार्य, स्थिर कार्य, दवाई
बनाना, शिक्षा, विवाहादि समस्त मांगलिक कार्य।

तुला

कृषि कार्य, यात्रा, व्यापार, विवाह, यज्ञोपवीत, पशुपालन
तथा पीतल की धातु से सम्बन्धित कार्य।

वृश्चिक

राज्याभिषेक, शुभ कार्य, स्थिर कार्य, नीकरी इयूटी
जॉइन करना, गोपनीय कार्य, विषादि से सम्बन्धित कार्यादि।

धनु

विवाह-यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य, पशुपालन, पशु-
कृपा-विक्रय, चर कार्य।

मकर

कृषिकार्य, पशु कृपा-विक्रय, अस्त्र-शस्त्रनिर्माण, बारूद
से सम्बन्धित कार्य, जलयान, तालाब-झूपादि खनन, आवागमन।

कुम्भ

कृषि, व्यापार, नीकानयन, जलयात्रा, व्यापार, भूमि-
सम्बन्धित कार्य, अस्त्र-शस्त्रनिर्माण।

मीन

यज्ञोपवीत, विवाहादि, राज्यतिलक, वस्त्र-अलंकार बनाना-

पहनना आदि शुभ कार्यों के लिए सर्वश्रेष्ठ ।

११७. सूर्य विचार

सूर्य—यह ग्रहराज है। गोचर में यह राशि आने से भः दिन पूर्व ही फल देने लग जाता है। सूर्यधिष्ठित राशि से छठे स्थान पर कोई ग्रह हो तो सूर्य विद्ध होता है, फलतः निष्प्रभाव हो जाता है। सूर्य-बल में यह विचार रखना आवश्यक है।

पर शनिश्चर सूर्य का ही पुत्र है। अतः शनि-सूर्य में परस्पर वेद्ध नहीं होता।

दोष-परिहार

सूर्य-दोष हो तो 'आदित्य हृदयस्तोत्र' पढ़ें व सूर्यार्थं दें। दान, रक्त वस्त्र, लाल कमल, गेहूँ, गुड़।

जपसंख्या—७०००।

मंत्र—ओ हौं हीं हौं सः सूर्याय नमः ॥

रत्न—मार्णिक्य रत्न, सोने की अंगूठी में जड़वाकर पहनें।

११८. चन्द्र विचार

चन्द्रमा स्त्रीग्रह तथा मार्गी है। पूर्ण चन्द्र सौम्य तथा क्षीण चन्द्र पापग्रह माना जाता है। चन्द्रमा के शुभ व विद्वस्थान निम्न है—

शुभ स्थान	विद्ध स्थान
१	५
३	६
६	१२
७	१
१०	४
११	८

बुद्ध, चन्द्रमा का पुत्र है। अतः बुध का वेद्ध चन्द्रमा को नहीं होता। किसी भी मुहूर्त में चन्द्रबल का विचार सर्व-प्रतिष्ठ है, क्योंकि मुहूर्त में तिथि को १ गुण, नक्षत्र को ४, वार को ८, करण को १६, योग को ३२, तारा को ६० तथा चन्द्र

१०० गुण प्रदान किये गये हैं—'

शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा विशेष बली होता है। शुभ चन्द्रमा भी यदि पापग्रह के साथ हो, या दो पापग्रहों के बीच में स्थित हो, या सप्तम भाव में हो तो अशुभ एवं दुष्प्रभावकारक ही होता है।

गर्भधान, राज्याभिषेक, जन्मकाल, विवाह, यज्ञोपचीत, यात्रा, राजयुद्ध, दान, भूत, उपवास, कामकीड़ा एवं सीमन्तो-न्यन में द्वादश चन्द्र शुभ है।^३

विवाह, रजोदशन गर्भधान तथा प्रसव पूर्व स्थिति आदि संस्कारों में स्त्री की राशि से चन्द्र विचार करना चाहिए। अन्य सभा कार्यों में पति की राशि से ही चन्द्र की शुभाशुभता का विचार श्रेयस्कर एवं शास्त्रसम्मत है।^४

चंद्र निर्वल-विचार

दान—मोती, दही, श्वेत चंदन आदि का दान करना चाहिए।

जपमंत्र—ओं श्रीं श्रीं श्रीं सः चन्द्रमसे नमः ॥

जपसंख्या—१०००।

रत्न—मोती छादी की अंगूठी में जड़वाकर पहने।

१. तिथिरेक गुणा प्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ।

वारहचाष्टगुणः प्रोक्तः करणं षोडशान्वितम् ।

चन्द्रः शतगुणः प्रोक्तस्तस्माश्वन्द्रबलं स्मृतम् ।

द्वार्त्रिशद् गुणितो योगस्तारा षस्तिगुणान्विता ॥

—क० न० तंग्रह

२. गर्भधाने जन्मकालेऽभिषेके मौर्छिजवन्धने ।

पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभ ॥

—दैवत कल्पद्रुम

३. विवाहकार्यं कुसुमः प्रतिष्ठा गर्भप्रतिष्ठा वनिताविशुद्धि ।

अन्यानि कार्याणि ध्रुवस्य सिद्धो पत्यो विहीने प्रमदात्म शुद्धा ।

—राज मातृं०४

११६. भौम-विचार

यह लालवर्ण का उप्र ग्रह है, तथा-समय-समय पर यह अस्तमार्गी वकी आदि होता रहता है। यह गोचर में राशि के प्रारम्भ में ही फल दे देता है।

शुभस्थान	मंगलविद्ध स्थान
३	१२
६	६
११	५

दोष-परिहार—

दान—रक्त वस्त्र, गुड़, ताज्र-धी आदि का।

मंत्र—ओं क्रीं क्रीं सः भौगाय नमः।

रत्न—मूँगा रत्न सोने की अंगूठी में जड़वाकर पहनें।

१२०. बुध-विचार

यह नपुंसक ग्रह, चन्द्रमा का पुत्र तथा सौम्यग्रह है। यह जिस ग्रह के साथ या जिस राशि में बैठता है, उस राशि-स्वामी के अनुसार ही अपना फल दे देता है।

विद्धस्थान

शुभस्थान	विशुद्धस्थान
२	५
४	३
६	१
८	९
१०	८
११	१२

दोष-परिहार

दान—स्वर्ण, शक्कर, शहद, नीलवस्त्र, कपूर आदि।

जपसंह्या—१७००० जप।

जपमन्त्र—ओ३म् द्रां द्रीं द्रीं सः बुधाय नमः।

रत्न—पल्ला स्वर्ण-मुद्रिका में जड़वाकर पहनें।

१२१. शुक्र-विचार

देवाचार्य कभी अस्ति, वकी, मार्य होते रहते हैं, पर

अतिचार गत, बृद्धायु, वकी, एवं अस्तावस्था में चुभफलद गहर्ही रहते। गोचर में यह राशि के मध्य में फल देते हैं।

विद्धस्थान

शुभस्थान	विद्धस्थान
२	१२
५	४
७	३
९	१०
११	८

दान—पीत वस्त्र, हल्दी, खांड, पुखराज।

जपमन्त्र—ओ३म् द्रां द्रीं द्रीं सः शुक्रे नमः॥

जपसंह्या—१६०००।

रत्न—पुखराज सोने की अंगूठी में जड़वाकर पहनें।

१२२. शुक्र विचार

यह स्त्रीग्रह, भोग का प्रतीक, अस्तमार्गी तथा वकी होता रहता है।

विद्धस्थान

शुभस्थान	विद्धस्थान
१	८
२	७
३	१
४	१२
५	६
६	५
८	१५
९	११
११	३
१२	६

दान—गो, धी, श्वेत वस्त्र, चायल दही आदि।

जपमन्त्र—शो३म् द्रां द्रीं द्रीं सः शुक्राय नमः।

जपसंह्या—२००००।

रत्न—हीरा ।

पातु—स्वर्ण ।

मोने की अंगूठी में हीरा जड़वाकर धारण करना शुभ एवं लाभदायक रहता है ।

१२३. शनि विचार

यह नषु सक ग्रह सूर्य का पुत्र, कृष्ण वर्ण तथा गोचर में राशि के अन्त में फल देनेवाला ग्रह है ।

विद्वस्थान

शुभस्थान

३

६

११

सूर्य-शनि का परस्पर वेद्ध नहीं होता ।

विद्वस्थान

१२

६

५

बृहद् पनीती

कुछ इसे 'बृहद् करयाणी' या 'बड़ी पनीती' भी कहते हैं । चूंकि यह एक राशि पर ढाई वर्ष रहता है, अतः जन्मचन्द्र-राशि से जब शनि १२, १ और दूसरी राशि पर होता है, तब इन तीनों राशियों पर अर्थात् साढ़े सात वर्ष तक के काल को बृहद् पनीती कहते हैं ।

यह समय अप्रव्यय, परेशानियों एवं कठिनाइयों का होता है ।

बारहवीं राशि पर शनि होने पर उसका प्रभाव हृदय पर, जन्म का शनि सिर पर तथा दूसरा शनि पैरों पर अपना प्रभाव रखता है । सिर पर शनि दुर्बलता, हृदय पर बाधाएँ, तथा पैरों पर शनि होने से व्यर्थ का अमरण कराता है ।

लघु पनीती

जब शनि जन्मराशि से चौथे या आठवें में होता है, तो उस ढाई वर्ष की अवधि को लघु पनीती कहा जाता है ।

लघु पनीती में हानि, मरण, व्याघ्रि, विदेश-प्रवास, बन्धु-विरोध, क्लेश तथा चिन्ता होती है ।

शनि, चरण

जन्मराशि से शनि जिस-जिस भाव में हो, उसके अनुसार

फल—

जन्मराशि से शनिस्थान

१, ६, ११

२, ५, ६

३, ७, १०

४, ८, १२

पाद

स्वर्ण

रजत

ताम्र

लौह

फल

सर्वसुख

सौभाग्य

मध्यम, धननाश ।

शुभ

शनिवाहन

अपने जन्म नक्षत्र से शनि नक्षत्र तक गणना कर प्राप्तांक में ६ का भाग देने से जो शेष बचे उसके अनुसार—

शेष वाहन फल

० हंस मृत्यु

१ गर्दभ हानि

२ अश्व विजय

३ गज सुख

४ महिष सामान्य

५ सियार शोक

६ सिंह शत्रुनाश

७ काक कलह

८ मधूर लाभ

दोष परिहार

दान—नीलम, उड़द, तिल, तेल, चर्मपादुका, कृष्ण वस्त्र ।

मन्त्र—ओ३म् प्रां प्रां सः शनयै नमः ।

रत्न—नीलम ।

जपसंख्या—१६००० ।

धातु—लौह ।

लोहे या पंचधातु की अंगूठी में नीलम जड़वाकर धारण करना चाहिए ।

१२४. राहु केतु विचार

ये पापगृह हैं, तथा राशि पर आने से चार मास पूर्व ही अपना फल देने लग जाते हैं।

विद्ध स्थान

शुभस्थान	विद्ध स्थान
३	१२
६	९
११	५

दोष परिहार

दान—गोमेद, सीगा, लहसुनिया (केतु के लिए), नील वस्त्र, कम्बल।

जप—राहु—१५०००।

केतु—७०००।

मंत्र—राहु—ओ३८् भा॒ भ्र॑ भ्र॑ सः राह॑ये नमः।
केतु—ओ३८् सा॒ सी॑ सी॑ सः केतये नमः।

रत्न—राहु—गोमेद।

केतु—लहसुनिया :

धातु—लौह या पंचधातु में रत्न जड़वाकर पहनें।

१२५. सर्वोपयोगी मुहूर्त

तिथि—१(क) २, ३, ५, ८, १०, १२, १३, १३, १५ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०, शु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, आ०, पुन०, पु०, आश्ले०, उत्तरा ३,
अनु०, थ०, घ०, शत०, रे०।

टिप्पणी

प्रत्येक प्रकार के शुभ एवं मंगलमय कार्यों के लिए उपर्युक्त मुहूर्त शेष हैं।

१२६. रोग-मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल)।

वार—चं०, बु०, गु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, पूर्वा० ३, अनु०

११६

ब्र०, रे०।

टिप्पणी

उपर्युक्त योग में यदि कोई व्यक्ति बीमार हो तो समय पर अल्प चिकित्सा से ही व्यक्ति स्वस्थ हो सकता है।

रोग त्रिनाड़ी

प्रथम नाड़ी	द्वितीय नाड़ी	तृतीय नाड़ी
आर्द्रा	पुनर्वंसु	पुण्य
पू० फा०	मधा	आश्लेषा
उ० फा०	हस्त	चित्रा
अनुराधा	विशाखा	स्वाती
ज्येष्ठा	मूल	पू० घा०
घनिष्ठा	श्रवण	उ० घा०
शतभिष्ठा	पू० भा०	उ० भा०
भरणी	अश्विनी	रेष्टी
कुत्तिका	रोहिणी	मृग

रोगी का जब जन्मनक्षत्र, चन्द्रनक्षत्र एवं सूर्यनक्षत्र तीनों ही एक नाड़ी पर हो जायें, तो रोगी की तत्काल मृत्यु समझ लेनी चाहिए।

१२७. संपर्कषट मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ७, ६, १०, ११, १३ (शु)।

वार—चं०, बु०, गु०।

नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, पूर्वा० ३, उत्तरा ३, ह०,
चिं०, स्वा०, अनु०, ज्य०, थ०, घ०, रे०।

उपर्युक्त मुहूर्त में यदि किसी को सर्प काटे तो वह अवश्य ही बच जाता है।

१२८. रोगशान्ति उपचार

विभिन्न नक्षत्रों में जिस नक्षत्र को व्यक्ति बीमार पड़े तो उससे संबंधित पशु की शाङ्काति गेहूँ के आटे से बनाकर संबंधित चीज उसके मुंह में देकर दक्षिण दिशा की ओर सुनसान स्थान पर फेंक दें तो तुरन्त रोग शान्त हो जाता है।

नक्षत्र	आकृति	मुख में भरने की वस्तु
१ अदिवनी	वानर	गड़ भात
२ भरणी	वानर	गुड़ भात
३ कुत्तिका	बकरी	दही
४ रोहिणी	गाय	शाक
५ मृगशिरा	मृग	उड्ड
६ आद्रा	गाय	तृण
७ पुनर्वंसु	सूबर	शाक
८ पुष्य	बकरी	खीर
९ आश्लेषा	सूबर	धूत
१० मध्या	वानर	तिल
११ पूर्वा फाल्गुनी	वानर	मूँग
१२ उत्तरा फाल्गुनी	बैल	शाक
१३ हस्त	भैसा	कमल
१४ चित्रा	शेर	पुष्प
१५ स्वाती	लोमड़ी	तिल
१६ विशाखा	बाघ	गुड़
१७ अनुराधा	मृग	मेथी
१८ ज्येष्ठा	चूहा	घनिया
१९ मूल	बिल्ली	तिल
२० पूर्वाधारा	मगरमच्छ	तिल
२१ उत्तराधारा	बल	शाक
२२ श्रवण	भैसा	पीपर
२३ धनिष्ठा	घोड़ा	पीपर
२४ शतभिषा	वानर	चावल
२५ पूर्वा भाद्रपद	कूकर	दही
२६ उत्तरा भाद्रपद	फूकर	दही
२७ रेवती	वानर	गुड़भात
१२६. औषधि-सेवन मुहूर्त		
तिथि—२, ३, ५, ६, १०, १२, (शुक्र), १ (ह)		

वार—सू०, चं० बु०, गु०, शु० ।
नक्षत्र—अ०, कृ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०,
स्वा०, वि०, अनु०, श्र० ध०, रे० ।
लग्न—३, ४, ५, ६, ११, राशि ।

टिप्पणी

जन्म नक्षत्र एवं जन्मलग्न त्वाज्य है ।

१३०. शाल्य क्रिया मुहूर्त

तिथि—४, ६, १४ (दोनों पक्ष) । शुभ शुक्र वक्ष विशेषतः ।
वार—सूर्य, मंगल, गुरु ।
नक्षत्र—अश्वि०, मृग०, पुष्य, ह०, स्वा०, अनु०, ज्ये०, श०,
ध० ।

जन्म नक्षत्र वर्जित ।

टिप्पणी

दशा एवं गोचर अवश्य देख लेना चाहिए ।

१३१. आरोग्यस्नान मुहूर्त

तिथि—२, ३, ५, ६, १०, १३, १५ (शुक्रपक्ष) ।
वार—सू०, चं०, बु०, गु०, शा० ।
नक्षत्र—अ०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, ह०, चि०, स्वा०, वि०,
अनु०, श्र०, ध०, रे० ।
लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ८ राशि ।

टिप्पणी

रोगी का चन्द्रबल एवं सूर्यबल अवलोकनीय है ।

१३२. शान्ति-कार्य मुहूर्त

मास—बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, (शुक्र ११ से पूर्व), कार्तिक
मास ।
तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्र पक्ष) ।
वार—चं०, बु०, गु०, शु० ।
नक्षत्र—अश्वि०, रो०, मृग०, पुन०, पु०, उत्तरा ३, ह०, चि०,
स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, रे० ।
लग्न—२, ३, ४, ६, ८, १२ राशि ।

टिप्पणी

गुरुशुक्रास्त, भद्रा; व्यातपात, निर्बैल चन्द्र आदि
त्याज्य हैं।

१३३. अनुष्ठान मुहूर्त
तिथि—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२, १३, १४ (घुकल)।
वार—सू०, ग०, श०।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृग०, पुन०, उत्तरा ३, ह०, स्वा०,
चि०, अनु०, अ०, ध०, रे०।

विशेष

गुरुशुक्रास्त, देवशयन, कीण चन्द्र वज्रित है।

१३४. पूर्णाह्नि मुहूर्त
तिथि—५, १०, १५ (पूर्णातिथि) शुक्ल पक्ष।
वार—च० श०, ग०, श०।

कुछ विद्वानों के अनुसार सूर्यवार भी लिया जा सकता है।
नक्षत्र—अश्विं० रो०, मृग०, आ०, पुन०, उत्तरा ३, ह०, चि०,
स्वा०, अनु०, अ०, ध०, श०, रे०।

लग्न—२, ३, ६, ८, १२ राशि लग्न।

टिप्पणी

केन्द्रत्रिकोण में शुभप्रह हो, तथा चन्द्रमा शुभ एवं बली
हो।

१३५. अखिल धार्मिक कार्य मुहूर्त
तिथि—१ (छ), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३
१५ (श०)।

वार—सू०, च०, श०, ग०, श०।

नक्षत्र—अश्विं०, रो०, मृग०, आ०, पुन०, पु०, उत्तरा ३,
ह०, चि०, अनु०, ध०, रे०।

लग्न—२, १०, ११, १२।

अपर विविध मुहूर्त दिखाने के पश्चात् संक्षेप में स्वप्न एवं
शक्ति पर प्रकाश डाला जा रहा है। यात्रादि में इनका विशेष
महत्व है।

स्वप्न

शब्दिवगभी घटनाओं का ज्ञान स्वप्न के माध्यम से
संभव है। विश्व-इतिहास में ऐसी संकड़ों घटनाएँ हैं, जिनके
स्वप्न के माध्यम से गुरुत्वयाँ सुलझ जाती हैं।

यहाँ केवल ज्योतिष एवं यात्रा से संबंधित स्वप्नों के बारे
में जानकारी दी जा रही है।

यात्रा से पूर्व निर्दिष्ट एवं विचारणीय कार्य की शुभाशुभता
की जानकारी के लिए एक दिन पूर्व स्वस्थचित्त, संतुलित एवं
सात्त्विक भोजन कर सुखद शाया पर गहरी नींद सोये।

फल

यदि रात्रि के प्रथम पहर में स्वप्न आवे तो उसका फल
एक वर्ष २ मास पश्चात्, दूसरे पहर में स्वप्न का फल छ;
महीनों बाद, तीसरे प्रहर में हृष्ट स्वप्न का फल ३ महीने १२
दिन बाद, तथा अंतिम पहर में जो स्वप्न देखा जाता है, उसका
फल तुरन्त मिलता है।

शुभ स्वप्न

गौ	देवता	हाथी
सकेद वस्तुएँ	स्त्री	राजा
गूरु	स्वर्ण	दही
मिष्टान	धृता	दर्पण
विवाह	धनलाभ	जलाशय
शिवलिंग	पिता	कुटुम्ब का सदस्य
बालक	महल	सिंह
फलदार वृक्ष	दिहासन	सूर्य-चन्द्रादि
नगन शस्त्र	गन्धर्व	जलपान
गंगा नदी	चत्र	युद्ध-विजय
पूजन	पृथिवी	पर्वत
सर्प	रुदन	मर्त्य
यज्ञ	दैवी कार्य	भीड़
वाहन	किला	नाव

सफल यात्रा अद्भुत वस्तुएँ विद्याध्ययन
महात्मा सभ्य व्यक्ति शुभ वस्तुएँ
उपर्युक्त वस्तुएँ या इससे मिलती-जुलती वस्तुएँ स्वप्न
में दिखाई दें तो कार्य सिद्धि समझनी चाहिए।

अशुभ स्वप्न

हृदियाँ	राक्षस	रक्त
जलता हुआ मुर्दा	रुद्धि	राख
सूखा पेड़	धी, तेल	गधा
जंगली जानवर	राष्ट्र	कीचड़
स्थाही	केश पतन	खाली बर्तन
रिक्त जलाशय	अपमान	पागल
काले-लाल वस्त्र	गुड़ खाना	विष्णा-मूत्र
पहाड़ से गिरना	क्रोधित व्यक्ति	रोगी
पितृ	रसोईधर	बांधी
नंगा पुरुष या स्त्री	महिष	दक्षिण-यात्रा
प्रसन्नता	हँसना	गायन-कीर्तन
तारे दृटना	मक्खी, मच्छर	मुर्गा
बिचू	चोरी	मुण्डन
रोग	कबूतर	रीछ
उलू	कौआ	भूत-प्रेत
धातुएँ	सुनार	लुहार
देवालय पतन	कमड़ा	होहल्ला

उपर्युक्त वस्तुएँ या इससे मिलती-जुलती वस्तुएँ दिखाई
दें तो कार्य-असिद्धि समझनी चाहिए।

अशुभ स्वप्न परिहार

अशुभ स्वप्न आने पर पुनः सो जाना चाहिए, चाहे
सूर्योदय हो गया हो।
पर शुभ स्वप्न आ जाने पर तुरन्त उठ जाना चाहिए,
और उसके बाद सोना नहीं चाहिए।
अशुभ स्वप्न ज्यादा-मेर्ज्यादा लोगों को सुनाना चाहिए,

जिससे उसका दुष्प्रभाव कम हो जाय। अशुभ स्वप्न आने पर
प्रातः उठकर गंगास्नान, देवपूजा एवं दान करना चाहिए।

शकुन

यात्रा, विवाह, यज्ञोपचीत आदि सभी शुभ कार्यों से पहले
शकुन देख लेना आवश्यक है। शुभ शकुन कार्य सिद्ध करते हैं
जबकि अशुभ शकुन कार्य विलम्ब, कार्य बाधा या कार्यनष्ट
करते हैं। नीचे शुभ-अशुभ शकुनों को स्पष्ट किया जा रहा है—

शुभ शकुन

सीभाग्यचिह्नयुत	वेश्या	सभ्य व्यक्ति
पुत्रवती स्त्री	बालक	बनिया
कुमारी	आत्मीय जन	आह्याण
यशस्वी पुरुष	विद्वान्	धोबी
ज्योतिषी	पगड़ीधारी व्यक्ति	राजा
मुन्द्र स्त्री	घोड़ा	तांगा
शिक्षक	मोर	बैल
गाय	हिरण्य	कबूतर
भेड़	सांप	अन्न
बकरा	ईच	पुष्प
फलों का ठेला	ताम्बूल	दर्पण
वस्त्र	दध-दही	मांस
शराब	धीली लकड़ी	धज्जा
रिक्षा	खाद्य	दीपक
नगाहा	वाद्य	जलयुक्त कलश
छाता	मिट्टी	अग्नि
शवयात्रा	देव-प्रतिमा	शुभ वचन
गोवर	शुभ समाचार	जयघोष
वेद-ध्वनि	पुस्तके	पूजन-सामग्री
खिलाने	आनन्ददायक सामग्री	इत्र
शुभ शकुनों को धपने से दाहिने रखकर यात्रादि मंगल		

जानिए अग्निवास

किस तिथि को अग्निवास कहा है ?

अग्निवास यज्ञादि के लिए पृथ्वी में शुभ होता है। आकाश में प्राणनाशक, पाताल में धैर्यवर्य की हानि करता है।

आकाश	तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
2	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	
3	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	
4	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	आकाश	
5	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	
6	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	
7	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	
8	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	आकाश	
9	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	
10	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	
11	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	
12	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	
13	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	
14	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	
15	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	
तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
1	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	
2	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	
3	(पृथ्वी)	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	
4	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	
5	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	
6	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	
7	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	
8	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	
9	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	
10	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	
11	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	
12	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	
13	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	
14	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	
15	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	

‘संघ्राम के समय जप-तप व ध्यान के सिवाय कुछ न करें।’

29 फ़ ३० फ़ वर्ष 5, अंक 28, जूलाई-अगस्त 2009

पार्वती करते चाहिए

वापसीकृत

भूर	तंत्रा	पामल
गवाता	संतासी	ज्ञान-परी
रोमी	संगमा	नपुंसक
बापा	हरिती	जटाधारी
कौशी	गमा	ऊंट
धेया	गदन	यवन
खलचला	गर्भेश्वरी	विधवा
षाण्	भृष्ट	विकलांग
विलापी	लकड़हारा	पाखंडी
नाई	गुलार	लुहार
चमार	कुम्हार	मोची
दुर्जन	शिकारी	तलवार
हुचकड़ी	शरीर धूजना	ठोकर खाना
हुधेलगा	तंगे सिरवाला अवित	लकड़ियाँ
बिल्ली	इवान	बाँझ गाय
कृष्ण राम	कौआ	वानर
मुर्ते का कान	इवान युद्ध	बिल्ली का रास्ता
फड़फड़ागा		काटना
काला धान	लकड़ियाँ	आटा
पाया	मङ्गड़ियाँ	तेल
द्वादू	नमक	गुड़-खाण्ड
भाई	चावल	खाली बरतन
बरतन गिरना	पत्थर	लीहा
हड्डियाँ	रसी	जंजीर
खाली कलश	छींक	'ठहरी' की घवति
कलह	क्रोध	कुत्सित वाष्पय
एदन	कूड़ा-करकट	दुर्घटना
यात्रा, विवाह आदि शुभ कार्यों में अशुभ शकुनों का		

१२४

त्याग करना चाहिए। अशुभ शकुन होने पर दस चिन्ठ विश्राम के बाद प्रस्थान करे। यदि तीन बार (यात्रा में) अशुभ शकुन हो जाय, तो यात्रा स्थगित कर दी जानी चाहिए।

छींक किसी भी प्रकार के शुभ कार्य या यात्रा से पूर्व छींक हो जाय, तो वह मनोरथ-सिद्धि को नष्ट कर देती है, अतः छींक को अशुभ ही माना है।

जान-दूखकर की गई छींक, चूढ़, बालक, वात-पित्त-फक, रोगप्रस्त व्यक्ति के द्वारा की गई छींक को महत्व नहीं देना चाहिए।

अविवाहिता, गम्भीरी, वेश्या गायिका तथा निम्न जाति की स्त्री द्वारा की गई छींक पूर्ण अशुभ है तथा गाय द्वारा की गई छींक मरणप्रद है।

कुछ विद्वानों के अनुसार सामने की छींक कार्यनाश, दाईं तरफ की छींक अशुभ पीठ-नीछे की छींक शूभ भलद एवं बाईं ओर की छींक शुभ होती है।

दिशानुसार छींक फल

दिशा	फल
पूर्व	लकड़ीप्राप्ति
पश्चिम	सुख
उत्तर	अशान्ति
दक्षिण	सिद्धप्रद
अग्नि	निधन
ईशान	रक्षा
वायव्य	समस्त लाभ
नीचृत्य	पीड़ा

निरर्थक पुरः प्रोक्तमनर्थं दक्षिणेन तु ।
पूर्णतः कामयाभाव शुतं क्षेमाय वामतः ॥

—मुहूर्त दीपिका

१२५



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By
Avinash/Shashi

(creator of
hinduism
server)

अपवाद

दवा बनाने या लेने के समय, बाहन पर चढ़ते समय, विवाह, शयन, भोजन, विद्यारंभ तथा खेत में बीज बोने के समय यदि श्रीक हो तो वह शुभ है।^१

श्रीक होने पर कर्ता सूक्कर आठ बार जमीन पर दाहिना पैर मारे, जूते खोलकर पुनः पहने तथा मुख से शुभवचन उच्चरित करे। विष्णु-स्मरण करे।

गधे का बाई और या पीठ-पीछे रेकना शुभफलदायक है।

अशुभ शकुन बाईं और तथा शुभ शकुन दाहिनी ओर हो तो लगभग सुखद कहे जाते हैं।

यदि यात्रा आवश्यक हो, या कार्य प्रारंभ करना आवश्यक हो तो अशुभ शकुन होने पर शिवार्चन करने से अशुभ शकुन दोष मिट जाता है।

स्वर-विज्ञान

यात्रा, विवाहादि शुभ कार्यों में स्वर का महत्व भी है। नाक द्वारा जो श्वास बाहिर आता है, उसे निःश्वास तथा बाहर से जो अन्दर जाता है, उसे श्वास कहते हैं।

बार के अनुसार स्वर-महत्व इस प्रकार है—

बार	दिन	रात
रविवार	दाहिना	बायाँ
चन्द्रवार	बायाँ	दाहिना
मंगलवार	दाहिना	बायाँ
बुधवार	बायाँ	दाहिना
गुरुवार	दाहिना	बायाँ
शुक्रवार	बायाँ	दाहिना
शनिवार	बायाँ	दाहिना

उदाहरणार्थ यदि मंगलवार के दिन को कोई शुभ कार्य

१. ओपवेड्ड्ययने वादे वाहने शयनशने।
बीजबापे बुधे प्रोक्तं शोभनं सप्तसु शूतम् ॥

—मुहूर्त गणपति

१२६

या यात्रा-प्रस्थान कर रहे हैं, तो उस समय दाहिना स्वर चलता हो तो शुभ है, पर मंगलवार को ही रात को किसी शुभ कार्य के प्रारंभ में वायें स्वर को महत्ता दी जानी चाहिए।

बायें नथुने से निकलनेवाले तीव्र श्वास की बायाँ स्वर तथा याहिने नथुने से निकलनेवाले श्वास को दाहिना स्वर कहते हैं।

यदि दोनों स्वर बराबर चल रहे हों तो फल सामान्य समझना चाहिए।

जिस नथुने से अपेक्षाकृत तेज निःश्वास होता हो वही प्रमुख स्वर कहलाता है।

इस प्रकार ज्योतिष-प्रेमियों को श्रीरे-धीरे अध्ययन करते हो स्वरशास्त्र भी प्रकार समझ में आ जायगा।

जीवन के प्रत्येक काण का एक आदृश्य रूपवालक है जिसकी व्यवस्था से यह समयनक ग्रातिशील रहता है। दिन, रात, रात के बादफिर ठीक समय पर निश्चित स्थान पर स्मृदिय एवं सर्मास्त, लीकतमय पर न्यूट्रिजों का आगमन-प्रस्थान आदि सभी कार्य एक निश्चित प्रणाली के अनुसार होते हैं। अतएव यह स्पष्ट है कि हम जौरुद्ध भी कर रहे हैं, या भोग रहे हैं वह एक अद्वितीय विराट सत्ताकी विशेष देन है। इन सबका हमारे जीवन पर अभाव पड़ता है।

मुहूर्त-ज्योतिष हमें इस बात का जोध करा देता है कि किस कार्य के लिये कौन-सा रात साध्यक या जात्यक है। सुप्रसिद्ध ज्योतिष-मर्मज डॉ० नारायण दत्त जीमाली की एक वैज्ञानिक पुस्तक

(सुबोध पवित्रोक्तान)